Postal Regn. No. C.G./RYP DN/65/2022-24
रायपुर से प्रकाशित हिंदी मासिक पत्रिका
प्रकाशन तिथि, 1 सितम्बर 2023

आर.एन.आई.पंजीयन क्र.
CHHHIN/2017/72506

किलोल

वर्ष 7 अंक 9, सितम्बर 2023

http://www.kilol.co.in

स्कूली शिक्षा में समर्पण हेतु समर्पित संस्था
WINGS2FLY
SOCIETY
COME LETS FLY

म. नं. 580/1, गली न. 17 बी,
दुर्गा चौक, आदर्श नगर, मोवा, रायपुर
ईमेल: wings2flysociety@gmail.com

मूल्य
खुदरा 80/-
वार्षिक 720/-
आजीवन 10000/-

संपादक

डॉ. रचना अजमेरा

सह-संपादक

डॉ. सुधीर श्रीवास्तव, डॉ. पी सी लाल यादव, बलदाऊ राम साहू, धारा यादव, गंगाधर साहू, नेम सिंह कौशिक

ई-पत्रिका, ले आउट, आवरण पृष्ठ

कुन्दन लाल साहू

अपनी बात

प्यारे बच्चों एवं शिक्षक साथियों,

सितंबर माह में विश्व साक्षरता दिवस है सिर्फ किताबें पढ़ लेना ही साक्षर होना नही है बल्कि अपने आस पास घटित होने वाली घटनाओं पर उचित व सही निर्णय कर पाना ही साक्षरता.

आप सब को पता है हमारे देश पूर्व राष्ट्रपति डॉ सर्वपल्ली राधाकृष्णन का जन्म 5 सितम्बर को हुआ था.वे जीवन में आगे बढ़ने के लिए अनवरत पढ़ने व अच्छी बातें सीखते रहने पर बल देते थे. उनका कहना था कि व्यक्ति व समाज की उन्नति सिर्फ शिक्षा के माध्यम से ही सम्भव है. शिक्षक समाज में परिवर्तन लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं.हमेशा उनके मन मे शिक्षकों के प्रति एक अलग आदर व सम्मान का भाव था यही कारण है कि उन्होंने अपने जन्म दिवस को शिक्षकों के सम्मान में समर्पित करते हुए शिक्षक दिवस के रूप में मनाने का निर्णय लिया. तब से पाँच सितंबर के दिन शिक्षक दिवस के रूप में मानते आ रहे हैं इस दिन हम सब अपने गुरुजनों को जिन्होंने हमें इस मुकाम तक पहुँचाने में अपना योगदान दिए हैं याद कर नमन करते हैं.

बच्चों हम अपने गुरुजनों का सम्मान सिर्फ दिन विशषे में नही बल्कि उनके बताए गए बातों को अमल कर प्रति दिन नियमित पढ़ कर कुछ नया सिख कर भी कर सकते हैं.इस हेतु आस पास के साथियों कोj साथ लेकर पढ़ने व बढ़ने में सहयोग कर गुरु के सम्मान को बढ़ा सकते हैं.

अरे हां ! एक बात तो भूल ही गई थी आप नियमित किलोल पढ़ना व अपनी रचना भेजना न भूलें. आपकी रचनाओं का हमें हमेशा इंतिजार रहता है.

आपकी अपनी
डॉ. रचना अजमेरा

संस्थापक

डॉ. आलोक शुक्ला

मुद्रक कीरत पाल सलूजा तथा प्रकाशक श्यामा तिवारी द्वारा
- विंग्स टू फ्लाई सोसाइटी म. न. 580/1 गली न. 17बी, दुर्गा चौक, आदर्श नगर, मोवा, रायपुर, छ. ग. के पक्ष में.
सलूजा ग्राफिक्स 108-109, दुबे कॉलोनी, विधान सभा रोड़, मोवा जिला रायपुर, छत्तीसगढ़ से मुद्रित
तथा विंग्स टू फ्लाई सोसाइटी, म.न.580/1 गली. न. 17 बी, दुर्गा चौक, आदर्श नगर, मोवा, रायपुर से प्रकाशित, संपादक डॉ. रचना अजमेरा.

अनुक्रमणिका

चंदा मामा 9

बादर हर बरसाही पानी 10

माता–पिता 11

समय का महत्व 12

पंचतंत्र की कहानी 14

सुहाना मौसम 16

हमें स्वच्छता अपनाना है 17

पौधे हमसे कहना चाहते हैं 18

अधूरी कहानी पूरी करो 20

सच्ची जीत 20

संतोष कुमार कौशिक, मुंगेली द्वारा पूरी की गई कहानी 21

अनन्या तंबोली, जांजगीर द्वारा पूरी की गई कहानी 22

मनोज कुमार पाटनवार, बिलासपुर द्वारा पूरी की गई कहानी 23

अगले अंक के लिए अधूरी कहानी 23

चूहों की समझदारी 23

किताब 25

कितना प्यारा बचपन हमारा 26

छतरी 28

नया इतिहास- मिशन चंद्रयान 29

सूखा पड़ गया 31

चित्र देख कर कहानी लिखो 33

संतोष कुमार कौशिक, मुंगेली द्वारा भेजी गई कहानी 33

एक भारतीय किसान की कहानी 33

आस्था तंबोली, जांजगीर द्वारा भेजी गई कहानी 34

अगले अंक की कहानी हेतु चित्र 35

जिद्द की सजा 36

पृथ्वी 38

घर भी है एक भगवान 39
पेड़ भी है दानी 40
स्वागत हे 41
मेरी प्यारी माँ 42
समाज की वास्तविक वास्तुकार 43
बाल पहेलियाँ 45
पानी रे पानी 47
हरेली तिहार मनाबो 48
मोबाइल 49
रंग-बिरंगे फूल 51
लहरावय देश म तिरंगा 52
इसांनियत को जाहिर कर स्वार्थ को मिटाना है 54
बादल आए 56
बेटी नहीं पतन का कारण 58
प्रकृति की सुंदरता 59
ओजोन की पीड़ा 61
टमाटर का घमंड 63
छत्तीसगढ़ी पहेली 65
अपनाएँगे हम नवाचार 67
बादर के रूप 69
पोमेरेनियन का साथी 71
भारतीय संस्कृति हमको प्यारा 72
स्कूल खुला फिर 74
हवा है सुन्दर 75
भरोसा 77
जिंदगी में विराम चिन्ह 79
बेटी की विदाई 81
गुरु 83

खुश रहो हर हाल मे 85
खुश रहो हर हाल मे 86
रक्षाबंधन 87
बचपन अनमोल 88
नया भारत 90
बाघ 95
मछलीघर 98
आरुषि की प्रेरणा 100
जल बचाओ जीवन बचाओ 101
मेरा स्कूल 103
भारतीय संस्कार 104
राष्ट्रीय शिक्षा नीति को गंभीरता से अमल में लाना है 106
युवाओं में एक मंत्र की अति ज़रूरत है 107
मित्र हमारे 108
मुस्कान में मिठास की पर छाई 110
राही 111
बलिदानी वीर नारायण सिंह 112
आजादी का अमृत महोत्सव 113
हम भारत के वासी 114
छत्तीसगढ़ महतारी 116
मेरी मुस्कान, मेरी पहचान है 118
विश्व गुरु बनेगा भारत 120
सबसे प्यारे मेरे पापा 122
आगे बढ़ना है मुझे 123
वो बचपन 124
मेरी दिवाली 126
माँ तू जन्नत है 128
अपने जन्मदिन पर 130

आज की युवा पीढ़ी 131
सुनों साथियों 132
चेहरे में क्या रखा है 134
आओ आओ ऐ युवा शक्ति 136
गाँव-हर शहर होत जात हे 138
राखी का त्यौहार 140
किलोल' पत्रिका 141
बारिश आई 143
सूरज 146
एन एस एस 147
मैं अपनी जिंदगी महकाऊँगी 148
IAS के अलावा 151
रानी का रक्षाबंधन 153
अमर रहे रक्षाबंधन का पर्व 156
बेंदरा 157
बरसातें 158
स्वच्छ भारत 159
तमाशे वाला 160
नए भारत को साकार रूप देना हैं 161
नया अध्याय 163
कोशिका 166
ब्लैक बोर्ड और डस्टर 167
बचत 168
कुसियार 169
बादर करिया आही 170
रक्षाबंधन 171
शिक्षक चालीसा 172
बचपन की यादें 175

जन्माष्टमी 176
हिंदी 177
नारी की कहानी 178
कहाँ खो गया मेरा मन 179
मेरी माँ 181
मेरे भाई 183
बुधिया 185
माटी हमर धरोहर 187
मेरा सच्चा साथी 189
मीठी आज पढ़ने स्कूल चली थी 190
स्त्री 192
मै और मेरी कोशिशे 193
राजा बकरकन्ना 194
बढ़ना होगा 196
नल का पानी 198
कोयल रानी 199
सपने 200
किसान की बेटी हूं 201
देश की बेटी 202
सत्यनिष्ठा का भाव 203
यह कैसी है आजादी? 204
रीत बनईया ए भारतीय देश के 205
लइका मन ला बिगाड़त हस 207
एक पेड़ लगाओ 208
घरौंदा 209
काले काले बादल 210
बाल पहेलियाँ 211
चलो आगे बढ़ो 213

सावन और बसंत.....214
पेड़.....215
प्रकृति की सुंदरता.....216
आजादी महोत्सव.....219
सतरंगी टिफिन.....220
देश के खातिर पढ़ना है.....221
देश प्रेम.....222
रक्षा बंधन.....223
गणेश.....224
भारत माँ के यदुवंशी सपूत.....225
जादुई पिटारा.....226
तिरंगा के लिए कान्हा का हठ.....227
मेरा एक घर है.....228
स्वतंत्रता हमर गरब.....229
वीर शहीदों को नमन.....231
चलो झण्डा ला फहराबो.....233
देशभक्ति.....235
मां गंगा को शुद्ध करने अनेक मिशन चलाएंगे.....237
चांद पर तिरंगा फहराये.....238
कभी नाराज ना होना.....239
महसूस कर.....241
स्वतंत्रता.....242
भाखा जनऊला.....243

चंदा मामा

रचनाकार- सुचित्रा सामंत सिंह, बस्तर

चंदा मामा भोले भाले,
लगते हो तुम कितने प्यारे,
शाम ढले तुम आते हो,
दिन में कही छिप जाते हो.

ना पढ़ने की तुमको चिंता,
ना सोने की तुमको चिंता,
रात भर जागते रहते हो,
ना जाने क्या करते हो.

दुध मलाई खाते हो,
शायद इसलिए तुम,
गोरे गोरे लगते हो,
चंदा मामा भोले भाले.

*****

बादर हर बरसाही पानी

रचनाकार- बलदाऊ राम साहू, दुर्ग

देखत रहिबे गुड़िया रानी
बादर हर बरसाही पानी.

बादर अइसे घपटे हावय
जइसे ओला छाय जवानी.

हवा-गरेर चलत हे अइसे
जइसे लिखही नवा कहानी.

धार बोहाही सूपा सही
दस - दस आँसू रोही छानी.

खेत-खार अउ नदिया-नरवा
छलकत हावय बनके दानी.

*****

माता–पिता

रचनाकार- कु.हेमिका साहू, कक्षा–१२ वीं, शास उ मा वि बेलौदी, ब्लॉक–मगरलोड,धमतरी

माता मेरी प्यारी है, तो पिता प्यारा है
इनका साथ हो तो, ये जीवन न्यारा है
माता भूमि है तो,ये पिता आसमान है
दोनो का साथ है तो,जीवन आसान है

माता पिता की, आओ सेवा करलें,
फिर न पड़ेगा कभी हमको पछताना
इन दोनो का जीवन में साथ रहेगा,
तो दुख·पीड़ा, फिर काहे को आना.

माता–पिता से ही है, पहचान हमारी
यह दोनों है तो हमारी, जिंदगी न्यारी
माता–पिता बच्चों के लिए भगवान हैं
इनके पावन चरणों में, सारा जहान है.

*****

समय का महत्व

रचनाकार- कु. चुनेश्वरी साहू, कक्षा–१०वीं, शास उ मा वि बेलौदी, ब्लॉक–मगरलोड,धमतरी

समय कहता है, मैं तुम्हारे साथ हूं
समय की चाल, निरंतर चलती है
यह पल–पल में निरंतर बदलता है
यह सुख–दुख का साथी बनता है.

रोज अपने नए रंग–रूप दिखाता है
सब में इसकी ही मर्जी से चलता है
अपना हर पल का ये महत्व बताता
यह कभी न रुकता और न थकता है.

बस निरंतर ही यह चलता जाता है
इसके महत्व को जब कोई समझता है
जीवन में लक्ष्य सदा हासिल करता है
सारे काम वह समय पर पूरा करता है.

चाहे हम कितने भी क्यों न उत्सुक हों
होगा सारे हमारा काम समय पर ही
इसलिए समय के महत्व को समझो
ये समय कहता है मैं तुम्हारे साथ हूं.

*****

पंचतंत्र की कहानी

मूर्खों का बहुमत

किसी जंगल में एक उल्लू रहता था. उसे दिन में कुछ दिखाई नहीं देता था, इसलिए वह दिनभर एक पेड़ पर अपने घोंसले में छिपकर रहता था. सिर्फ रात होने पर ही वह भोजन के लिए बाहर निकलता था. एक बार की बात के गर्मियों का मौसम था. दोपहर का समय था और बहुत तेज धूप थी. तभी कहीं से एक बंदर आया और वह उल्लू के घोसले वाले पेड़ पर आकर बैठ गया. गर्मी और धूप से परेशान बंदर ने कहा – “ऊफ, बहुत गर्मी है. आकाश में सूर्य भी आग के किसी बड़े गोले की तरह चमक रहा है.”

बंदर की बात को उल्लू ने भी सुन लिया. उससे रहा नहीं गया और बीच में ही बोल पड़ा – “यह तुम झूठ कह रहे हो? सूर्य नहीं, बल्कि अगर चंद्रमा के चमकने की बात कहते तो मैं इसे सच मान लेता.”

बंदर बोला – “भला दिन में चंद्रमा कैसे चमक सकता हैं. वह तो रात में चमकता है और यह दिन का समय है, तो दिन में सूर्य ही चमकेगा. यही कारण है कि सूर्य की तेज रोशनी की वजह से बहुत ज्यादा गर्मी हो रही है.”

उस बंदर ने उल्लू को अपनी बात समझाने का बहुत प्रयास किया कि दिन में सूरज ही चमकता है चंद्रमा नहीं, लेकिन उल्लू भी अपनी ही जिद पर अड़ा था. इसके बाद उल्लू ने कहा – “चलो, हम दोनों मेरे एक मित्र के पास चलते हैं, वही इसका निर्णय करेगा.”

बंदर और उल्लू दोनों एक दूसरे पेड़ पर गए. उस दूसरे पेड़ पर उल्लुओं का एक बड़ा झुंड रहता था. उल्लू ने सभी को बुलाया और उनसे कहा कि दिन में आकाश में सूर्य चमक रहा है या नहीं यह तुम सब मिलकर बताओ.

उल्लू की बात सुनकर उल्लुओं का पूरा झुंड हंसने लगा. वह बंदर की बात का मजाक उड़ाने लगें. उन्होंने कहा – “नहीं, तुम बेवकूफों जैसी बात कर रहे हो. इस समय आकाश में तो चंद्रमा ही चमक रहा है और आकाश में सूर्य के चमकने की झूठी बात बोलकर हमारी बस्ती में झूठ का प्रचार मत करो.”

उल्लुओं के झुंड की बात सुनने के बाद भी बंदर अपनी ही बात पर अड़ा हुआ था. जिस देखकर सभी उल्लू गुस्सा हो गए और वे सारे के सारे बंदर को मारने के लिए उसपर झपट पड़ें. दिन का समय था और उल्लुओं को कम

दिखाई दे रहा था इसी वजह से बंदर वहां से बचकर भाग निकलने में कामयाब हो गया और उसने अपनी जान बचाई.

कहानी से सीख: पंचतंत्र की यह कहानी हमें सीख देती है कि मूर्ख मनुष्य कभी भी विद्वानों की बात को सच नहीं मानता है. ऐसे मूर्ख लोग अपने बहुमत से सत्य को भी असत्य साबित कर सकते हैं.

*****

सुहाना मौसम

रचनाकार- कु.डगेश्वर साहू,कक्षा–१२वीं, शास उ मा वि बेलौदी, ब्लॉक–मगरलोड,धमतरी

मौसम है, कितना सुहाना
मन को है, ये बहुत भाता
कौन मौसम किसको भाए
हम इसको कैसे क्या जाने.

मौसम है होता परिवर्तन
हमको है पता नहीं चलता
कौन सा मौसम कब आए
हम जाने न ही आप जाने.

मौसम परिवर्तन होने लगी
पता ही नहीं ,चलता हमें
मौसम से मिलती है सीख
छोटे–बड़े ज्ञानी की सीख.

बड़े अच्छे, लगते हैं गीत
इन मौसम का, है ये मीत
मौसम है, कितना सुहाना
मन को है, ये बहुत भाता.

*****

हमें स्वच्छता अपनाना है

रचनाकार- कु.गूंजा साहू,कक्षा–१२वीं, शास उ मा वि बेलौदी, ब्लॉक–मगरलोड,धमतरी

हर गली हर घर में,यह बताना है
हमें घर–घर स्वच्छता अपनाना है
साफ –सफाई सब रखोगे ध्यान
तभी होगा हमारा भारत महान.

बीमारी को जड़ से हमें हराना है
हमें घर–घर स्वच्छता अपनाना है.
आओ मिलकर ये सबको समझाएँ
स्वच्छता के प्रति जागरूकता लाएँ.

मिलकर हमको कदम बढ़ाना है
हमें घर–घर स्वच्छता अपनाना है
कूड़े–कचरे को कूड़ेदान में डालें
गाँव–शहर–नगर में स्वच्छता लाएँ.

बापू,मोदी के सपने साकार करना है
हमें घर–घर स्वच्छता अपनाना है
हर जगह स्वच्छता का लहर चलाएँ
देश में चलो एक नया सबेरा लाएँ.
हम सब को राष्ट्र विकसित कराना है
हमें घर–घर स्वच्छता अपनाना है.

*****

पौधे हमसे कहना चाहते हैं

रचनाकार- कु.हेमलता साहू, कक्षा १२ वीं, शा उ मा विद्यालय बेलौदी, मगरलोड धमतरी

हममें अब भी हिम्मत बाकी है
जब–जब तुमने हमको तोड़ा था
तब से ही हममें हिम्मत बाकी है.
हमने ही तुमको सहारा दिया
पर तुमने हमको बेसहारा किया
हमने तुमको जीना सिखाया
पर तुमने हमको नष्ट किया.
हमने है स्वच्छ हवा बनाए
हमने है सुंदर फूल खिलाए
हमने धरा को है महकाए
हमने ही है खुशहाली लाए.
तुमने हमको काटा था
हमने न तुमको डांटा था
हम दर्द से कराहते थे
तुम हंसते हुए जाते थे.
हम रातों को रोते थे
तुम चैन से सोते थे
जब तुम पे आई बात

तभी आई हमारी याद.
मनुष्य कहता मान ली
हमने तुम्हारी बात
कर दो गुस्ताखी माफ
अब न तुमको तोड़ेंगे
न ही साथ हम छोड़ेंगे.
पौधा कहता ये हुई न बात
अब रहेंगे हम दोनों साथ–साथ
हम सब हाँ आपस में एक हैं
तुम्हारा संकल्प बड़ा नेक है.

*****

अधूरी कहानी पूरी करो

पिछले अंक में हमने आपको यह अधूरी कहानी पूरी करने के लिये दी थी–

सच्ची जीत

एक गांव में एक किसान रहता था.
उसका नाम था शेरसिंह.
शेरसिंह शेर-जैसा भयंकर और अभिमानी था. वह थोड़ी सी बात पर बिगड़कर लड़ाई कर लेता था.
गांव के लोगों से सीधे मुंह बात नहीं करता था.
न तो किसी के घर जाता और न रास्ते में मिलने पर किसी को प्रणाम करता था.
गांव के किसान भी उसे अहंकारी समझकर उससे नहीं बोलते थे.
उसी गांव में एक दयाराम नाम का किसान आकर बस गया.
वह बहुत सीधा और भला आदमी था.
सबसे नम्रता से बोलता था, सबकी कुछ-न-कुछ सहायता किया करता था.
सभी किसान उसका आदर करते थे.
और अपने कामों में उससे सलाह लिया करते थे.
गांव के किसानों ने दयाराम से कहा -" भाई ! दयाराम तुम कभी शेरसिंह के घर मत जाना उससे दूर ही रहना.
वह बहुत झगड़ालू है."
दयाराम ने हंसकर कहा – " शेरसिंह ने मुझसे झगड़ा किया तो मैं उसे मार ही डालूंगा."
दूसरे किसान भी हंस पड़े.
वे जानते थे कि दयाराम बहुत दयालु.
है वह किसी को मारना तो दूर किसी को गाली तक नहीं दे सकता.
लेकिन यह बात किसी ने शेरसिंह से कह दी.
इस कहानी को पूरी कर हमें जो कहानियाँ प्राप्त हुई उन्हें हम प्रदर्शित कर रहे हैं.

संतोष कुमार कौशिक, मुंगेली द्वारा पूरी की गई कहानी

दयाराम के द्वारा मजाक किए हुए शब्दों को सुनकर शेरसिंह क्रोधित हो गया.वह उसी दिन से दयाराम से झगड़ने की चेष्टा करने लगा.

शेरसिंह,दयाराम के खेत को नुकसान करने के लिए अपने एवं गांव के पूरे जानवर छोड़ दिए. किंतु दयाराम प्रेम पूर्वक सभी जानवर को अपने खेत से बाहर कर दिए.दयाराम को शांत देखकर, शेरसिंह ने कभी उसके खेत के पानी को निकाल देता, वह चुपचाप जाकर उसे बांध देता.कभी उसके घर में बंधे हुए बैल को छोड़कर भाग जाते,वह अपने बैल को लाकर पुनः उसी स्थान पर बांध देता था.

इसी प्रकार शेरसिंह बार-बार दयाराम की हानि करता रहा,किंतु दयाराम ने एक बार भी उसे झगड़ने का अवसर नहीं दिया.उससे बात नहीं बनी तो हार-थक्कर शेरसिंह,दयाराम के लड़के के पास उलझ गया और गाली गलौज करते हुए उसे मारपीट करने लगा.गांव के लोगों ने दौड़कर दयाराम को बुलाया. जहाँ शेरसिंह उसके लड़के को मारपीट कर रहा था.दयाराम वहाँ पहुँचकर अपने लड़के को समझा कर लड़ाई शांत कराया और शेरसिंह से क्षमा याचना किया.

दयाराम के शांत स्वभाव को देखकर थोड़ी देर के लिए उसके मन में अपने प्रति हिन की भाव जगा.लेकिन उसके अहंकारी भावना, झगड़ालू स्वभाव अपने आप को सुधरने नहीं दिया.

कुछ दिन पश्चात शेरसिंह अपने लड़के के साथ खेत में काम कर रहा था.तभी अचानक एक जहरीला सांप,उसके लड़के को काट दिया.लड़का के मुंह में झाग आना चालू हो गया,बेहोश की स्थिति और शरीर ठंडा होने लगा.शेरसिंह का एक ही लड़का था.वह अपने लड़के को देखकर कुछ अनहोनी घटना हो न जाए सोचकर,डर से कांपने लगा.उसे समझ में नहीं आ रहा था क्या करें?गांव वालों को थोड़ी ही देर में आग की तरह शेरसिंह के लड़के को सांप काटने का खबर प्राप्त हो गया.लेकिन उसे बचाने कोई सामने नहीं आया क्योंकि वह गांव वाले से हमेशा झगड़ा और दुश्मनी करता था.वहअपने बच्चे को गाड़ी में भरकर शहर ले जाना चाहा.लेकिन गाड़ी का चक्का कीचड़ में घुस गया.बैल कमजोर होने के कारण गाड़ी खींच नहीं सका और ना ही किसी को सहायता के लिए बुला सके. शेरसिंह अपने लड़का के खो जाने की डर सता रहा था. वह मन ही मन रो रहा था.

तभी अचानक दयाराम अपने गाड़ी और बैल के साथ वहाँ पर पहुँचते हैं और उसे जल्दी ही बिना समय गवाएं शहर के अस्पताल पहुँचाते हैं.वहाँ तुरंत डॉक्टरों की टीम के द्वारा इलाज किया जाता है.डॉक्टर ने बताया कि थोड़ी देर होती तो,इसका जान नहीं बचाया जा सकता.इलाज करने के कुछ समय पश्चात स्वास्थ्य में सुधार होता गया.डॉक्टर ने शेरसिंह को जानकारी देता है कि आपके लड़का खतरे से बाहर है.तभी शेरसिंह,दयाराम के पैर पकड़कर क्षमा माँगता है और कहता है कि मैं आपके लड़के को जबरदस्ती सताया, मारपीट किया.फिर भी आप मेरे लड़के को बचाने आ गए.आप देवता हो, देवता! दयाराम उसको अपने गले लगाया और कहा-"भाई दो दिन की जिंदगी है हंस कर जियो.किससे दुश्मनी करोगे.गांव भी तो हमारा परिवार ही है.

शेरसिंह का दुष्टस्वभाव उसी दिन से बदल गया.वह कहता था -"दयाराम ने अपने उपकार के द्वारा मुझे मार ही दिया."

अब मैं वह अहंकारी शेरसिंह कहाँ रहा.उस दिन से अब वह सबसे नम्रता और प्रेम का व्यवहार करने लगा.गांव वाले सब खुशी से एक परिवार की भांति रहने लगे.

बच्चों आप सबने देखा शेरसिंह अभिमानी,अहंकारी और झगड़ालू होने के कारण उसे दु:ख का सामना करना पड़ा.जिसके वजह से विपत्ति आने पर भी उसे किसी का सहयोग नहीं मिल रहा था.लेकिन दयाराम बार-बार शेरसिंह के सताने के बाद भी वह अपना कार्य धीरज रहकर,प्रेम पूर्वक करता रहा.जिसकी वजह से उसे कभी दु:ख का सामना नहीं करना पड़ा और वह हमेशा सुख पूर्वक अपना जीवन बिताया. हमें भी दयाराम की तरह अपने जीवन में धीरज रहकर,प्रेम पूर्वक कार्य करना चाहिए.

अनन्या तंबोली, जांजगीर द्वारा पूरी की गई कहानी

जब शेरसिंह को पता चला गांव में एक दयाराम नाम का किसान आया है. जो यह कह रहा था कि जब मैं शेर सिंह से मिलूंगा तो मैं उसे मार ही डालूंगा.यह सुनकर शेर सिंह को बहुत ही गुस्से में आ गया और उसने कहा मैं उसे मिलना चाहता हूं.वह मेरे बारे में ऐसा कैसे बोल सकता है वह मुझे जानता भी नहीं मैं क्या कर सकता हूं.ऐसा कह कर एक दिन शेरसिंह गुस्से में दयाराम के घर चला गया.दयाराम ने शेर सिंह को देखकर नमस्कार किया उसे बड़े ही आदर के साथ अपने घर में बैठाया.शेरसिह दयाराम के इस आदर को नजरअंदाज करते हुए झगड़ने लगा .लेकिन दयाराम शांत था वह कुछ नहीं बोल रहा था उसके मन में लड़ाई झगड़े का कोई भाव नहीं था वह तो शेरसिंह के स्वभाव में बदलाव लाना चाहता था. बड़े ही प्यार से दयाराम शेर सिंह को कहता है देखिए भाई साहब आपकी और मेरी कोई दुश्मनी नहीं है आप बहुत ही अच्छे इंसान हैं लेकिन आपका व्यवहार थोड़ा सख्त है यदि व्यवहार में परिवर्तन कर लिया जाए तो हम पूरे गांव वालों को जीत लेंगे ऐसा कह कर दयाराम शेरसिंह को लेकर खेत जाने के लिए बाहर निकले रास्ते में एक व्यक्ति ने दयाराम को सम्मान पूर्वक राधे-राधे कहा यह देखकर शेरसिंह आश्चर्यचकित हो गया और दयाराम से पूछा तुम्हें सारे लोग इतना सम्मान क्यों देते हैं? मैं लोगों को इस चीज के लिए डरा धमका देता हूं फिर भी मुझसे कोई ढंग से बात नहीं करता और ना ही मेरी कोई बात मानते हैं. तुमने आते ही गांव वालों के साथ क्या किया कि सारे लोग तुम्हारे बस में हो गए सभी लोग तुम से सहयोग और सलाह लेते हैं लेकिन मुझसे बात भी नहीं करते तब दयाराम ने बताया कि लोग सम्मान डर की वजह से नहीं करते उनके मन में जगह बनाना पड़ता है .विश्वास, सहयोग से ही लोगों पर राज किया जा सकता है जैसा व्यवहार हम उनके साथ करते हैं वैसे ही वह हमारे साथ करते हैं अगर आप गांव वालों की सहायता करेंगे तो वह आपकी भी सम्मान करेंगे यह सुनकर शेर सिंह भी सोचने लगा क्यों न एक बार इसे आजमा लिया जाए. देखते ही देखते गांव वाले शेर सिंह का भी सम्मान करने लगे. शेर सिंह का दिल भी जाग गया .और उस दिन से शेरसिंह गांव वालों से अच्छे से व्यवहार करने लगा उनसे सम्मान पूर्वक बात करता उनके कामों में मदद करता और उनसे सलाह भी लेता यह देखकर दयाराम बहुत खुश हो गया दयाराम और शेर सिंह में अच्छी दोस्ती हो गई और अब दोनों के साथ साथ पूरे गांव वाले भी सब मिलजुल कर रहने लगे यह थी दयाराम की सच्ची जीत. उसने शेर सिंह जैसे डरावने झगड़ालू एवं भयानक व्यक्ति को सीधे-साधे व्यवहार कुशल एवं सहयोगी व्यक्ति अपने व्यवहार से बना दिया.

मनोज कुमार पाटनवार, बिलासपुर द्वारा पूरी की गई कहानी

शेर सिंह क्रोध से लाल पीला हो गया. वह उसी दिन से आत्माराम से झगड़ने की चेष्टा करने लगा.उसने आत्माराम के खेत में अपने बैल छोड़ दिए. बैल बहुत सा खेत चर गए, किंतु आत्माराम ने उन्हें चुपचाप खेत से बाहर हांक दिया.

शेर सिंह ने आत्माराम के खेत में जाने वाली पानी की नाली तोड़ दी. पानी बहने लगा, आत्माराम ने आकर चुपचाप नाली बांध दी. इसी प्रकार से शेरसिंह बराबर आत्माराम की हानि करता रहा किंतु आत्माराम ने एक बार भी उसे झगड़ने का अवसर नहीं दिया.

कुछ दिन बाद शेर सिंह गाड़ी में अनाज भरकर दूसरे गांव से आ रहा था बरसात के कारण रास्ते में कीचड़ की वजह से उसकी गाड़ी फंस गई, शेर सिंह के बैल दुबले थे वह गाड़ी को कीचड़ से बाहर निकाल नहीं पा रहे थे .जब गांव में इस बात की खबर पहुंची तो सब लोग बोले- शेर सिंह बड़ा दुष्ट है, उसे रात भर कीचड़ में पड़ा रहने दो लेकिन आत्माराम ने अपने हृष्ट-पुष्ट बैल लेकर उस ओर चल पड़ा तब लोगों ने उसे रोका और कहा -आत्माराम! शेर सिंह ने तुम्हारी बहुत हानि की है. तुम तो कहते थे यदि वह मुझसे लड़ेगा तो उसे मार ही डालूंगा फिर तुम तो आज उसकी सहायता करने क्यों जा रहे हो? आत्माराम बोला- मैं आज सचमुच उसे मार डालूंगा, तुम लोग सवेरे देखना. जब शेर सिंह ने आत्माराम को बैल लेकर आते देखा तो गर्व से बोला तुम अपने बैल लेकर लौट जाओ मुझे किसी की मदद नहीं चाहिए. आत्माराम ने कहा तुम्हारे मन में आए तो गाली दो, मन में आए तो मुझे मारो, इस समय तुम संकट में हो. तुम्हारी गाड़ी फंसी है और रात होने वाली है मैं तुम्हारी बात इस समय नहीं मान सकता. आत्माराम के तगड़े बैलों ने गाड़ी को खींचकर कीचड़ से बाहर कर दिया शेरसिंह गाड़ी लेकर घर आ गया. उसका दुष्ट स्वभाव उसी दिन से बदल गया, वह कहता था आत्माराम ने अपने उपकार द्वारा मुझे ही मार दिया. मेरा अहंकार चूर चूर कर दिया, अब वह सबसे नम्रता और प्रेम का व्यवहार करने लगा. बुराई को भलाई से जितना ही सच्ची जीत है आत्मा राम ने सच्ची जीत प्राप्त की.

अगले अंक के लिए अधूरी कहानी

चूहों की समझदारी

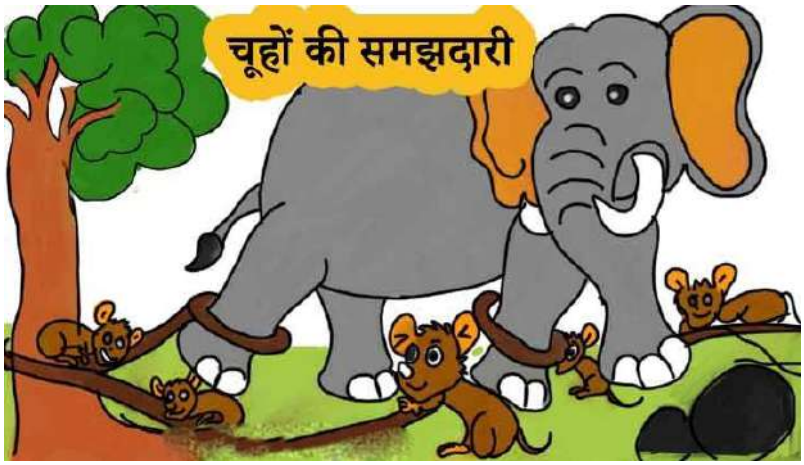

एक छोटे से जंगल मे हाथी रहते थे. उस जंगल मे एक झील थी. झील का पानी पीकर सभी हाथी अपनी प्यास बुझाते थे. उस समय गर्मी बहुत पड़ रही थी.

ज्यादा गर्मी के वजह से झील का सारा पानी सूख गया था. अब हाथी पानी के लिए बहुत परेशान रहने लगे.

कई दिनों तक वे बिना पानी के रहे. एक दिन उनमे से एक हाथी जोर से कहता है – अब आप सब चिंता मत कीजिये. पानी मिल गया है.

यह सुनकर सभी हाथी बहुत खुश हो जाते है ओर कहते है – तुम्हें कहाँ मिला पानी ?

इसके आगे क्या हुआ होगा? इस कहानी को पूरा कीजिए और इस माह की पंद्रह तारीख तक हमें kilolmagazine@gmail.com पर भेज दीजिए.

चुनी गई कहानी हम किलोल के अगले अंक में प्रकाशित करेंगे.

किताब

रचनाकार- कु.हेमिका साहू, कक्षा–१२ वीं, शास उ मा वि बेलौदी, ब्लॉक–मगरलोड,धमतरी

किताब हमारे जीवन का आधार है
किताब से ही होंगे सपने साकार है
यह किताब ज्ञान का होता भंडार है
इसके बिना हमारा जीवन बेकार है.

किताबों से ही हम सब नाता जोड़ें
इससे कभी न ,हम सब मुख मोड़ें
किताबों को पढ़कर हम बने महान
इससे ही मिलता समाज में सम्मान.

किताबों को अपना,अपने जीवन में
इससे न होगा कष्ट, आगे भविष्य में
किताब हमारे ,जीवन का आधार है
किताब से ही होंगे, सपने साकार है.

*****

कितना प्यारा बचपन हमारा

रचनाकार- कु ऋतू निषाद, कक्षा १२ वीं शा उ मा वि बेलौदी, ब्लॉक-मगरलोड जिला धमतरी

जब हम बड़े हुए, तो हमने जाना
कितना प्यारा था, बचपन हमारा.

भले थे कहीं शैतान, कहीं नादान
पर बचपन में ही,थी सब की जान.

ना कोई जिम्मेदारी, ना कोई बोझ
मस्त मगन होकर, खेलते थे रोज.

बड़े हुए तो जाना, क्या है बचपन
ना कोई समझदारी, ना बड़प्पन.

नटखट था मन, ये पागल था मन
पर बचपन था, सबसे अच्छा पल.

सुबह से खेलते,व शाम को घर आते
वक्त की न फ़िक्र, दिन अच्छे बिताते

नहीं थी कोई सुझबूझ, न परेशानी
हमने तो बचपन में ही, मस्ती ठानी.

पर हमने अब, जाना क्या है बचपना
ना कोई भी चिंता,ना किसी से डरना.

आती थी हर छोटी, बातों पर खुशियाँ
बचपन में चाही थी सिर्फ एक टिकिया.

*****

छतरी

रचनाकार-हिमकल्याणी सिन्हा, बेमेतरा

आसमान में बादल छाया
छतरी लेकर सब आया
काले -काले बादल आये
चाहे जितना जल बरसाये

रंग बिरंगे छतरी ताने
देखो बच्चों लगे सुहावने
बारिश की पानी अंदर न आये
छतरी में सब छूप जाये

पानी से सबको बचाये
छतरी सबके मन को भाये
बच्चें पानी में करते धमाल
देखो-देखो छतरी का कमाल

*****

नया इतिहास- मिशन चंद्रयान

रचनाकार- श्रवण कुमार साहू, "प्रखर", गरियाबंद

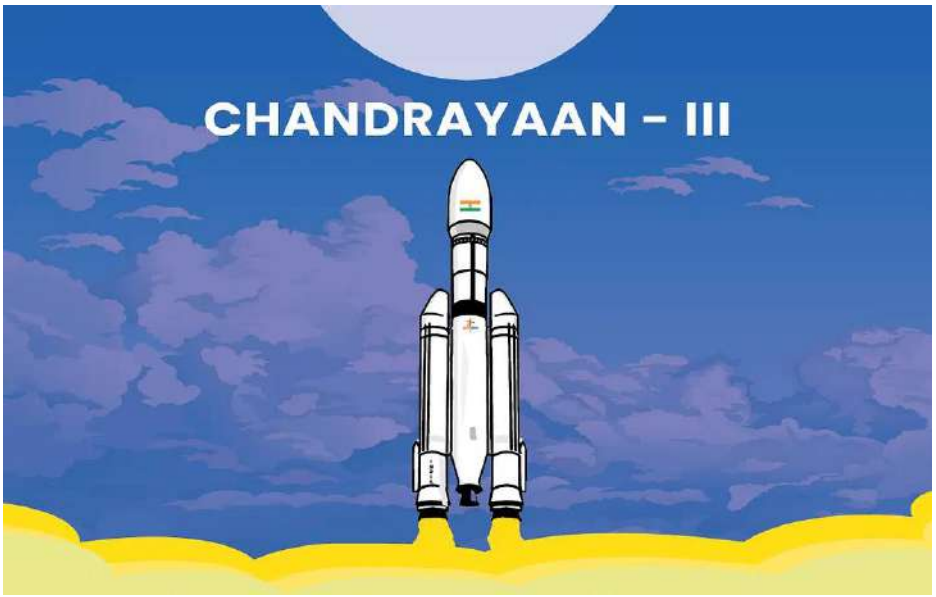

जिस चाँद को उस चकोर ने
आज तक छू नहीं पाया है.
उसी चाँद को पाने के लिए,
आज हमने कदम बढ़ाया है.

जिस चाँद को चंदा मामा कह,
हमने जीवन भर पुकारा है.
उसी चाँद की गोद में खेलने,
हमने एक कदम बढ़ाया है.

चाँद और सूरज के किस्से,
अब तक किताबों में पढ़ा है.
उसी चाँद पर कदम रख कर,
हमने नया इतिहास गढ़ा है.

धर्म को अद्भुत जोड़ दिया है,
आज वैज्ञानिकों ने विज्ञान से.
आसमां में नया चाँद खिला,
देखो तो अपने हिंदुस्तान से.

भारत माता गर्वित हो उठी,
सचमुच मिशन चंद्रयान से.
गौरव गाथा लिखी जा रही,
वैज्ञानिकों के अनुसंधान से.

*****

सूखा पड़ गया

रचनाकार-बद्री प्रसाद वर्मा अनजान

आज किसान के खेतों में
सूखा पड़ गया सूखा.
हर किसान का आज है
हृदय दर्द से रूखा.

धान के खेतों में
छाने लगी उदासी.
हर किसान के चेहरे पर
छाई है मायूसी.

खेतों में सूखे से
गहरी हुई दरार.
आज खेत में पानी की
सबको है दरकार.

क्रुद्ध हुए बादल भी
जल नहीं बरसाते.
इंद्रदेवता भी क्यों
बिलकुल तरस न खाते.

सूखा देख हर किसान
आज बहुत लाचार है.
पानी बिन धान का खेत
देखो आज बेकार है.

*****

चित्र देख कर कहानी लिखो

पिछले अंक में हमने आपको यह चित्र देख कर कहानी लिखने दी थी–

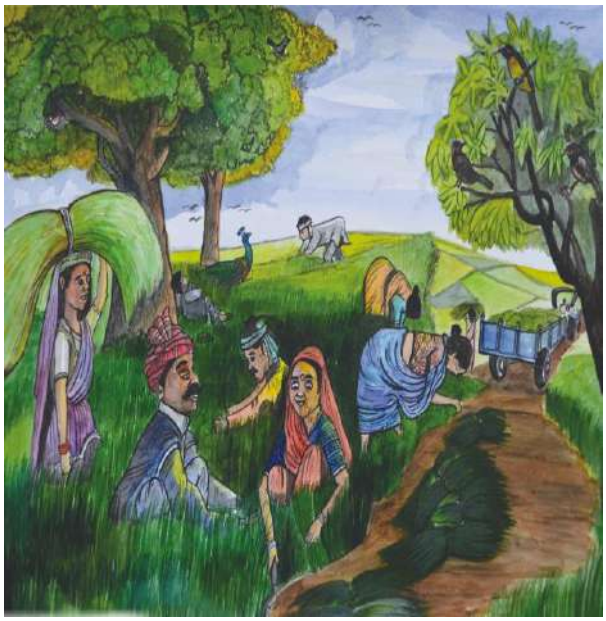

हमें जो कहानियाँ प्राप्त हुई हम नीचे प्रदर्शित कर रहे हैं

संतोष कुमार कौशिक, मुंगेली द्वारा भेजी गई कहानी

एक भारतीय किसान की कहानी

त्याग और तपस्या का दूसरा नाम है किसान.वह जीवन भर मिट्टी से सोना उत्पन्न करने की तपस्या करता रहता है.तपती धूप,कड़ाके की ठंड तथा मूसलाधार बारिश भी उनकी इस साधना को तोड़ नहीं पाते.हमारे देश की लगभग सत्तर प्रतिशत आबादी आज भी गांवों में निवास करती है.जिनका मुख्य व्यवसाय कृषि है.एक कहावत है कि भारत की आत्मा किसान है.जो गांवों में निवास करते हैं.किसान हमें खाद्यान्न देने के अलावा भारतीय संस्कृति और सभ्यता को भी सहेज कर रखे हुए हैं.यही कारण है कि शहरों की अपेक्षा गांवों में भारतीय संस्कृति और सभ्यता अधिक देखने को मिलती है.किसान की कृषि ही शक्ति है और यही उसकी भक्ति है.

समय अभाव के कारण उसकी आवश्यकतायें भी बहुत सीमित होती हैं.उसकी सबसे बड़ी आवश्यकता पानी है.यदि समय पर वर्षा नहीं होती है तो किसान उदास हो जाता है.लेकिन उसकी आस्था ईश्वर पर रहता हैं जिसके कारण वह सफलता प्राप्त करती है.इसी से संबंधित- बच्चों,आओ हम इस चित्र के माध्यम से मेहनत करने वाले "एक भारतीय किसान श्यामलाल की कहानी"के बारे में जानकारी प्राप्त करते हैं.

एक छोटे से गांव में एक किसान रहता था.उसका नाम श्याम लाल था.श्याम लाल एक बहुत ही मेहनती और परिश्रमी किसान था.वह गांव के खेतों में दिन-रात अपने परिवार के साथ मेहनत करता और अपने परिवार की आवश्यकताओं को पूरी तरह से संतुष्ट करता था.

एक समय की बात है,गांव में कुछ वर्षों से वर्षा नहीं होने के कारण लगातार अकाल पड़ रहा था.जमीन सूख गई थी.बारिश नहीं होने की वजह से गांव के रहने वाले दूसरे सभी किसानों को अपनी खेती बाड़ी का कार्य छोड़कर अन्य जगह पलायन कर गए और कुछ किसान दूसरे कार्य में जुट गए.श्याम लाल को भी अपनी फसल के लिए चिंता होने लगी.लेकिन श्याम लाल डरने वाले किसान में से नहीं थे.वह जानता था कि मेहनत से किया हुआ काम कभी बेकार नहीं जाता है.उसे ईश्वर पर आस्था था कि इस वर्ष निश्चित ही बारिश होगी.जिसके वजह से वह दिन-रात अपने परिवार के साथ खेतों के कार्य में मेहनत करते रहते थे.श्याम लाल को कार्य करते देख दूसरे किसान उसे हँसते और मजाक उड़ाते रहे,पर ध्यान ना देते हुए श्यामलाल अपने लक्ष्य के प्रति सदा संकल्पबद्ध रहा.

कुछ समय बाद,बादल उमड़ आए और बारिश शुरू हो गई.श्याम लाल की खेती के पौधे जीवंत हो गए और उनकी फसल बढ़ने लगी वह खुशी से झूम उठा,क्योंकि उसका मेहनत और धैर्य उसे उनके सपनों की प्राप्ति तक पहुँचा रहे थे.पूरे परिवार साथ मिलकर फसल काटने का कार्य किया.फसल काटने के बाद, श्याम लाल ने अपनी परिवार के साथ आराम से खुशहाल जीने का आनंद लिया.उसकी मेहनत और परिश्रम ने उसे गर्व महसूस करवाया.वह गांव के बाकी किसानों के लिए एक प्रेरणास्रोत बन गया.

आखिरकार, गांव की जनता ने उनकी मेहनत और समर्पण को मान्यता दी और उन्हें सम्मानित किया.श्याम लाल की कहानी ने गांव के अन्य किसानों को भी प्रेरित करते रहे.

बच्चों इस कहानी से हमने यह सिखा कि किसान की भांति मेहनत,परिश्रम,त्याग और समर्पण हर व्यक्ति के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं.यदि हम इन बातों को ध्यान में रखकर,ईश्वर पर भरोसा करके, कठिनाइयों का सामना करते हुए परिश्रम करें तो हमें हर कार्य में सफलता प्राप्त होगी.

आस्था तंबोली, जांजगीर द्वारा भेजी गई कहानी

बरसात का मौसम था सभी किसान अपने खेतों में धान बोने की तैयारी कर रहे थे. चारों तरफ बरसात के मौसम में हरियाली ही हरियाली होती है. बरसात में जब किसान खेतों पर जाते हैं तो उन्हें यह ध्यान नहीं रहता कि वह किस समय काम कर रहे हैं.सुबह से शाम, ठंडी ,गर्मी ,बरसात हर समय काम में लगे रहते हैं. किसान हमारे लिए बहुत मेहनत करते हैं उनकी मेहनत के फलस्वरुप ही हमें पौष्टिक भोजन प्राप्त होता है.हमें किसानों की इस मेहनत को बेकार नहीं जाने देना चाहिए हमें अन्न का एक भी दाना फेंकना नहीं चाहिए.इन किसानों की वजह से ही हम विभिन्न प्रकार के त्यौहार मना पाते हैं.बच्चे हो या बूढ़े सभी खेतों में काम करते हैं बरसात के दिनों में धान के साथ-साथ बाड़ी में विभिन्न प्रकार की सब्जियां बोया एवं उसे बाजार तक ले जाने आदि का काम करते हैं.कुछ किसान तो खेतों में धान की बुवाई निदाई, कटाई ,रोपाई आदि का काम बड़े ही लगन एवं साहस के साथ करते हैं कितनी भी बारिश हो बिजली चमक रही हो फिर भी किसान मेहनत करना नहीं छोड़ते और उनके मेहनत का ही फल है कि हमारी धरती हरी-भरी एवं चारों तरफ से हरी भरी रहती है.

अगले अंक की कहानी हेतु चित्र

अब आप दिए गये चित्र को देखकर कल्पना कीजिए और कहानी लिख कर हमें यूनिकोड फॉण्ट में टंकित कर ई मेल **kilolmagazine@gmail.com** पर अगले माह की 15 तारीख तक भेज दें. आपके द्वारा भेजी गयी कहानियों को हम किलोल के अगले अंक में प्रकाशित करेंगे

जिद्द की सजा

रचनाकार- बद्री प्रसाद वर्मा अनजान

राहुल की उम्र तीन साल की थी. बचपन में उसकी माँ ने उसे मोबाइल पर कार्टून दिखा-दिखा कर घर का काम करती थी. इसका असर राहुल पर इतना पड़ा कि वह दिन भर मोबाइल देखने का आदी बन गया.

उसकी माँ जब उसे दूध पीने को कहती तो यही कहता पहले हमें मोबाइल दो फिर दूध पिऊँगा. राहुल की माँ राहुल की जिद के आगे कुछ नहीं कर पाती थी. बार-बार समझाती, "बेटा मोबाइल देखने से आँखें खराब हो जाएँगी. तू दिन भर मोबाइल देखेगा तो पढ़ेगा-लिखेगा क्या? "

मगर इन बातों का राहुल पर कोई असर नहीं पड़ने वाला था. उसे तो हर हाल में मोबाइल चाहिए था. वह मोबाइल देख कर दूध पीता, खाना खाता और मोबाइल देख कर सोता भी था.

राहुल की इस आदत से उसके पापा भी बहुत परेशान थे.

एक दिन राहुल की माँ से उसकी सहेली अलका बोली, "बहन! तुम राहुल को मोबाइल से तभी दूर कर पाओगी जब तुम उसकी जिद पूरी करना छोड़ दोगी. तुम एक काम करो अपने मन से राहुल को दूध पिलाना, खाना खिलाना, सुलाना छोड़ दो. जब दूध, खाना माँगे तभी दो और कह दो, खाओ या मत खाओ मगर तुमको मोबाइल देखने को नहीं मिलेगा. फिर देखना तुम्हारा राहुल भी मेरे बेटे पंकज की तरह मोबाइल देखने की जिद छोड़ देगा.

सहेली की बात सुनकर राहुल की माँ बहुत खुश हुई और उसी दिन से राहुल को दूध पिलाना, खाना खिलाना, बार-बार पूछना छोड़ दिया.

सुबह से दोपहर हो गई. राहुल को उसकी माँ ने न दूध पीने को कहा न खाना खाने को. राहुल का तो भूख से बुरा हाल था. वह सोच रहा था माँ अब पूछेगी तब पूछेगी मगर माँ ने राहुल से खाने-पीने को नहीं पूछा.

भूख से व्याकुल हो कर राहुल अपनी माँ से बोल पड़ा, "माँ! आज तुमने मुझे न दूध पीने को कहा न खाना खाने को कहा. क्या तुम नाराज हो माँ?"

नहीं बेटे! मैं तुमसे बिलकुल नाराज नहीं हूँ.

पर मेरी एक शर्त है. तुमको दूध और खाना तभी मिलेगा जब तुम मोबाइल देखना छोड़ दोगे वर्ना तुमको न दूध मिलेगा न खाना.

माँ! मेरे पेट में भूख से चूहे कूद रहे हैं तुम जल्दी से मुझे दूध और खाना दो.

जानते हो न! खाना खाते और दूध पीते समय मोबाइल नहीं मिलेगा.

ठीक है माँ, मुझे तुम्हारी शर्त मंजूर है.

राहुल की बात सुनकर उसकी माँ मन ही मन हँस पड़ी और तुरंत राहुल को दूध और खाना दे कर बोली, "आज से तुम फिर मोबाइल देखने की जिद मत करना वर्ना खाना-पीना सब बंद कर दूंगी."

माँ की बात का राहुल पर इतना असर पड़ा कि उस दिन से उसने मोबाइल देख कर दूध पीने और खाने की जिद छोड़ दी.

*****

पृथ्वी

रचनाकार- उदय करन राजपूत, जालौन

अंडे जैसी अपनी धरती,
सूरज का चक्कर है करती
प्यारा सुन्दर रूप मनोहर,
भार बहुत सहन है करती,
चंद्रमा है उपग्रह प्यारा,
शीतलता हमको देता है.
सूरज करता है उजियारा,
कुछ नहीं हमसे लेता है.
पाँच सागरों में जल सारा,
सात द्वीपों में है संसार,
कहते हैं इसको ग्रह नीला,
महिमा इसकी बड़ी आपार.
हरा - भरा सुंदर रंगीले
वृक्ष धरा के हैं आभूषण.
जीवन हमको देते हरदम
करते दूर वायु प्रदूषण.

*****

घर भी है एक भगवान

रचनाकार- सलीम कुर्रे, कक्षा 8 वीं, शास. पूर्व माध्य. शाला बिजराकापा न, संकुल- लालपुर थाना, वि.ख. लोरमी, जिला- मुंगेली

खुद तो धूप में रहता है.
लेकिन हमको छाया देता है.
गर्मी हो या सर्दी हो,
हमें रात से बचाता है.
एक जगह खड़ा रहता है,
फिर भी हमें सुरक्षित रखता है.
खुद तो भीगता है पानी में,
लेकिन हम सब को भीगने नहीं देता.
घर भी है एक भगवान,
क्या लेते हैं? क्या देते हैं?पता नहीं चलता.

*****

पेड़ भी है दानी

रचनाकार- सलीम कुर्रे, कक्षा 8 वीं, शास. पूर्व माध्य. शाला बिजराकापा न, संकुल- लालपुर थाना, वि.ख. लोरमी, जिला- मुंगेली

इन पेड़ों को देखो. इन पेड़ों को देखो.
कितना सुंदर फूल खिला है.
आओ-आओ यहाँ देखो,
कितना सुंदर फूल खिला है.
गाओ यहाँ. नाचो यहाँ.
झूम-झूम के गाओ यहाँ.
पेड़ों में भी है जान.
इन पेड़ों में भी है ज्ञान.
इनके माध्यम से जीते हैं यहाँ,
इनसे ही एक उम्मीद है हमारी.
इनसे ही मिलती है शुद्ध हवा,
ये पेड़ भी है एक दानी.
क्या लेते हैं? क्या देते हैं?
इनसे ही पूरी होती है जरूरतें सारी,
इनसे ही मिलती है जरूरत की सारी समानें.
ये पेड़ भी एक दानी है.

*****

स्वागत हे

रचनाकार- सूर्या दिवाकर, कक्षा 8 वीं, शास. पूर्व माध्य. शाला बिजराकापा न, संकुल- लालपुर थाना, वि.ख. लोरमी, जिला- मुंगेली

स्वागत-स्वागत हे! मोर गाँव के सियान.
गुरु जन के महान्.
आज के पावन दिन में सत् सत् हे नमन!
सत् सत् हे नमन! आज के पावन दिन म.
छोटे-छोटे लईका बाबा,
नई जानेन तोर गियान ल.
नई जानेन तोर गियान ल.
भूल-चूक ल माफी देबे,
हमरो सियान-हमरो सियान.
स्वागत-स्वागत हे! मोर गाँव के सियान,
गुरु जन के महान्.
आज के पावन दिन म.

*****

मेरी प्यारी माँ

रचनाकार- कु. श्वेता टंडन, कक्षा 8 वीं, शास. पूर्व माध्य. शाला बिजराकापा न, संकुल- लालपुर थाना, वि.ख. लोरमी, जिला- मुंगेली

माँ क्या है? माँ सब कुछ है.
माँ भगवान की सर्वोच्च रचना है.
माँ सबसे बड़ी दौलत है.
लगने से चोट माँ सबसे पहले याद आती है.
संसार हमारे बारे में झूठ बोल सकती है
लेकिन माँ झूठ कभी नहीं बोल सकती है?
माँ अपने बच्चों के लिए हर जंग लड़ सकती है.

*****

समाज की वास्तविक वास्तुकार

रचनाकार- प्रियंका सौरभ, हरियाणा

महिलाएँ एक सशक्त शब्द है. यह आकर्षक है क्योंकि यह प्यार, देखभाल, पोषण, दायित्वों, जिम्मेदारियों, शक्ति, मातृत्व आदि को दर्शाता है. नारी समाज का दर्पण है. जब उसे हाशिये पर धकेल दिया जाता है, तो उस पर अत्याचार किया जाता है; यदि इसे पाला जाता है, तो समाज को पाला जाता है; यदि इसे मजबूत किया जाता है, तो यह सशक्त होता है. वह संस्कृति और रीति-रिवाजों को बनाए रखती है और उन्हें सामने लाती है. वह वह है जो अपने पति और उसके परिवार की परवाह करती है. दूसरे शब्दों में, वह समाज में सब कुछ बनाती है. एक महिला (माँ) उसकी संतान होती है, पहली शिक्षक; वह अपने बच्चों का प्यार से इलाज करने वाली पहली डॉक्टर हैं. वह अपने बच्चों को पढ़ाने वाली पहली शिक्षिका हैं, अपने बच्चों के साथ खेल खेलने वाली पहली साथी हैं. अपने बच्चे के विकास में उसका कार्य बहुत बड़ा है.

हमारे समाज में कई सालों से महिलाओं को पुरुषों से कमतर समझा जाता रहा है. इस प्रकार की हीनता के कारण उन्हें अपने जीवन में विभिन्न मुद्दों और समस्याओं का सामना करना पड़ता है. खुद को पुरुषों के बराबर साबित करने के लिए उन्हें पुरुषों से ज्यादा मेहनत करनी पड़ती है. मध्य युग में लोग महिलाओं को विनाश की कुंजी मानते थे, इसलिए उन्होंने कभी भी महिलाओं को पुरुषों की तरह बाहर जाने और सामाजिक गतिविधियों में भाग लेने की अनुमति नहीं दी. फिर भी आधुनिक युग में महिलाओं को अपने दैनिक जीवन में कई सारी समस्याओं का सामना करना पड़ता है और अपना करियर स्थापित करने के लिए काफी संघर्ष करना पड़ता है. कई माता-पिता केवल लड़का पैदा करना पसंद करते हैं और केवल लड़कों को ही शिक्षा देने की अनुमति देते हैं. उनके लिए महिलाएँ परिवार को खुश और स्वस्थ रखने का माध्यम मात्र हैं.

एक महिला को समाज में अधिक उपहास की दृष्टि से देखा जाता है और यदि वह प्रेम विवाह या अंतरजातीय प्रेम विवाह में शामिल होती है तो उसे ऑनर किलिंग का खतरा अधिक होता है. महिलाओं को पुरुषों की तुलना में स्वायत्तता, घर से बाहर गतिशीलता, सामाजिक स्वतंत्रता आदि तक समान पहुँच नहीं है. महिलाओं द्वारा सामना की जाने वाली कुछ समस्याएँ उनकी घरेलू जिम्मेदारियों और सांस्कृतिक और सामाजिक निर्दिष्ट भूमिकाओं के कारण हैं.

भारत सरकार ने लैंगिक समानता और सभी महिलाओं और लड़कियों की आर्थिक स्वतंत्रता को आगे बढ़ाने के लिए हाल के वर्षों में कई नई नीतियाँ और सुधार लागू किए हैं. महिलाओं को आर्थिक रूप से सशक्त बनाने के लिए, कुछ प्रमुख पहलों में 22 करोड़ महिलाओं के लिए जन धन खाते बनाना और उन्हें मुद्रा योजना के तहत कम ब्याज पर ऋण प्रदान करना शामिल है. बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ पहल शिक्षा के माध्यम से महिलाओं को सशक्त बनाने के उद्देश्य से शुरू की गई थी.

जनसंख्या की आवश्यकताओं के प्रति जिम्मेदार और उत्तरदायी निष्पक्ष, सस्ती और उच्च गुणवत्ता वाली स्वास्थ्य सेवाओं तक सार्वभौमिक पहुँच प्राप्त करने का लक्ष्य राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन का प्राथमिक फोकस है. महिलाओं को सशस्त्र सेवाओं में स्थायी कमीशन प्रदान करना और मातृत्व अवकाश की अवधि 12 से बढ़ाकर 26 सप्ताह करना सामाजिक और आर्थिक सशक्तिकरण के लिए अनुकूल माहौल को बढ़ावा देता है और एक सक्षम वातावरण स्थापित करता है. बलात्कार को रोकने के लिए बनाए गए कानूनों को भी और अधिक सख्त बनाया जा रहा है. इसके अलावा, उज्ज्वला कार्यक्रम, स्वाधार गृह कार्यक्रम और महिला शक्ति केंद्र उन मुद्दों से निपटने के लिए केंद्र सरकार द्वारा लागू की गई नीतियों और कार्यक्रमों के कुछ महत्वपूर्ण उदाहरण हैं जिनका महिलाओं को आम तौर पर सामना करना पड़ता है. ये उन नीतियों और कार्यक्रमों के कुछ महत्वपूर्ण उदाहरण हैं जिन्हें लागू किया गया है. देश में महिलाओं के व्यापक सशक्तिकरण की गारंटी के लिए, सरकार, व्यापारिक समुदाय, गैर-लाभकारी संस्था और आम जनता सभी को मिलकर काम करना चाहिए. जन आंदोलन और जन भागीदारी के माध्यम से सामूहिक व्यवहार परिवर्तन भी आवश्यक है.

हमारा समाज कहता है, पृथ्वी पर सबसे मूल्यवान 'स्त्रियाँ' हैं. आइए इस धरती पर हर महिला को सलाम करें. 'महिलाएं समाज की वास्तविक वास्तुकार हैं, वे जो चाहें वह बना सकती हैं.' "एक महिला क्या चाहती है"? - समय, देखभाल और बिना शर्त प्यार, आदि. इस धरती पर प्रत्येक महिला गरिमा, संस्कृति और सम्मान का प्रतीक है. नारी के बिना यह संसार सूना और अंधा है. महिलाएँ समाज में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं. निजी जीवन में महिला की भागीदारी काफी प्रभावशाली है. कई समाज घरों और समुदायों में महिलाओं की महत्वपूर्ण भूमिका को नजरअंदाज करते हैं. महिलाओं के अवैतनिक श्रम को अक्सर न तो महत्व दिया जाता है और न ही जीडीपी में शामिल किया जाता है, जो अक्सर अनदेखा और गैर-मान्यता प्राप्त रहता है. अब यह पहचानने का समय आ गया है कि उनकी भूमिका और योगदान कितने महत्वपूर्ण हैं. आइए सुनिश्चित करें कि दोनों लिंग एक-दूसरे को भागीदार के रूप में देखें.

*****

बाल पहेलियाँ

रचनाकार- डॉ० कमलेन्द्र कुमार, जालौन

1. प्रथम हटे तो बनूँ 'समान',
नीला नीला रंग.
अंत हटे तो बनू 'आसमा',
हूँ प्रकृति के संग.

2. मैं ईंधन हूँ अजब निराला,
काला काला रंग.
धरती माँ के रहूँ गर्भ में,
ज्वलनशील है अंग.

3. स्वर्ग धरा का इसको कहते,
झेलम कल-कल बहती.
झट बतलाओ बच्चों प्यारे,
है अतीत को कहती.

4. घर की मैं रखवाली करता,
घर-घर पाया जाता हूँ.
ताला मुझको समझ न लेना,
वफादार कहलाता हूँ.

उत्तर - 1-आसमान, 2-पत्थर कोयला , 3-कश्मीर पटरियां, 4-कुत्ता

*****

पानी रे पानी

रचनाकार- कु. भावना नवरंग, कक्षा- 8 वीं, शास. पूर्व माध्य. शाला बिजराकापा न, संकुल- लालपुर थाना, वि.ख. लोरमी, जिला- मुंगेली

देखो यह पानी को,
कभी जमीन से खोदकर निकाला जाता है,
कभी आसमान से गिरता है,
बिन पानी पृथ्वी सूनी है,
पानी बिना हरियाली नहीं है,
बिन पानी इंसान नहीं है,
जब सुनामी आती है तो,
पूरा गाँव-शहर डूब जाता है,
पानी से किसान खुश हो जाता है,
पानी से खेतों में हरियाली आ जाती है

*****

हरेली तिहार मनाबो

रचनाकार- आदित्य बघेल, कक्षा- 8 वीं, शास. पूर्व माध्य. शाला बिजराकापा न, संकुल- लालपुर थाना, वि.ख. लोरमी, जिला- मुंगेली

किसान मन के पहली तिहार आगे,
सबके मन के मन मा खुशी समागे.

खेत-खार मा धान बोआगे हे सुग्घर
गेंड़ी बर लइका मन बाँस ल पागे ओग्गर .

पीसान के लोंदी बनाके बईला ल खवाथे,
लइका मन ह गेंड़ी पा के मने मे मुसकाथे.

नांगर धोहीं, कुदरी धोहीं अउ धोहीं टंगिया,
माईलोगिन मन सुग्घर राँधथे ठेठरी,खुरमी,भजिया.

दीदी-बहनी, लइका-सियान सब ल बलाबो,
छत्तीसगढ़ के पहली तिहार हरेली ल मनाबो.

जय छत्तीसगढ़, जय किसान,
हरेली तिहार हे सबले पावन.

*****

मोबाइल

रचनाकार- वीरेंद्र बहादुर सिंह

अगर कोई सुख का सही पता पूछे तो वह था गाँव के अंत में बना जीवन का छोटा सा घर. जीवन सुबह उठता, खेतों के बीच से होते हुए नदी की ओर जाता, वहीं नित्यकर्म से निपट कर नहाता और वहाँ से आ कर माँ के हाथ की बनी चार रोटियाँ खाकर जानवरों को ले कर खेतों की ओर निकल जाता. जानवर चरने लगते तो वह खेतों में काम पर लग जाता. दोपहर को माँ खाना ले कर आती तो खाना खाकर वहीं बाग में पेड़ के नीचे चारपाई डाल कर सो जाता. शाम को जानवरों को घर पहुँचा कर वह नदी और पहाड़ों की ओर घूमने निकल जाता. लगभग दो घंटे तक बस प्रकृति और वह. यही सब तो उसके यारदोस्त थे. रात को आ कर खाना खाता और फिर मंदिर पर बाबा के साथ भजन गाता. अब तक वह इतना थक चुका होता कि चारपाई पड़ते ही सो जाता. जब से वह समझदार हुआ, तब से उसका यही नित्यक्रम, जिसमें कोई बदलाव नहीं होता था. जीवन के जीवन में दुख, चिंता या भय जैसा कुछ नहीं था और उसने कभी यह सब अनुभव भी नहीं किया था. वही गाँव उसके लिए विश्व था. इसके बाहर भी एक दुनिया है यह उसे पता ही नहीं था.

गाँव में मोबाइल का टावर लग गया. अब वह जब भी गाँव में जिधर से निकलता, हर किसी के हाथ में उसे काला डिब्बा दिखाई देता. कोई उसमें कुछ देख रहा होता तो कोई कान में लगा कर घूम रहा होता. मुंबई में नौकरी करने वाला उसके मामा के बेटा गाँव आया तो साथ में मोबाइल ले आया. यह थी जीवन की मोबाइल से पहली मुलाकात. पहले तो कुछ पता नहीं चला, पर भाई ने हिंदी में पढ़ा-सुना जा सके इस तरह कर दिया. इसके बाद तो जीवन को यह अनोखी दुनिया अद्भुत लगी. सुबह उठ कर दोनों हाथ जोड़ने वाला जीवन अब मोबाइल की स्क्रीन खोलता. गाय और भैंसे कहीं और चर रही होतीं, जीवन की गर्दन मोबाइल में झुकी होती. न जाने कितनी बार चलते चलते

वह पेड़ से टकराया. अब वह प्रकृति के साथ घूमने के बजाय नदी और पहाड़ मोबाइल में देखने लगा. रात को भजन गाने के बजाय मोबाइल में प्ले करने लगा. एक बार लाइट नहीं आई, चार्जिंग खत्म हो गई तो पूरे दिन जीवन का मुँह लटका रहा. जल्दी से बीत जाने वाला दिन बीत ही नहीं रहा था. अब रात को नींद भी नहीं आती थी, क्योंकि मोबाइल चलता रहता था.

इधर गाय ने दूध देना कम कर दिया. अचानक जीवन को भान हुआ कि पहले की तरह खिलाते समय वह गायों के सिर पर हाथ फेरने की जगह फोन में मुँह डाल कर बैठ जाता है. आज वह गौ माता की आँख में आँख डाल कर एकटक देखता रहा. फिर मौन गौ माता ने न जाने क्या कहा कि उसने मोबाइल पीछे बह रही नदी में फेंक दिया.

*****

रंग-बिरंगे फूल

रचनाकार- कु. भावना नवरंग, कक्षा- 8 वीं, शास. पूर्व माध्य. शाला बिजराकापा न, संकुल- लालपुर थाना, वि.ख. लोरमी, जिला- मुंगेली

ये फूल मन को खुश कर देता है,
जब यह सामने होता है.
फूल जब खिलता है तो,
सबके मन को भा लेता है.

जब फूल खुश होता है तो,
खुशबू फैल जाता है.
जब फूल नाखुश होता है तो,
वह सूख जाता है.

ये फूल अनेकों रंग के हैं,
किस-किस में कहूँ अनेकों रंग है?
सुख हो, दुःख हो, चाहे पुरस्कार हो,
ये सब में काम आता है.

फूल को कोई ना नहीं कहता.
फूल सबके मन को भा लेता है.

*****

लहरावय देश म तिरंगा

रचनाकार- अशोक पटेल "आशु", शा उ मा विद्यालय बेलौदी

लहरावय देश म तिरंगा
फहरावय देश म मोर झंडा
ऊंचा गगन म
नीला गगन म
बरसावत हे फूल जन-जन ह,
राष्ट्र-गान गावय जन-जन ह.
लहरावय देश म तिरंगा
फहरावय देश म मोर झंडा

जग में हे प्यारा
सब्बो ले न्यारा
रंग हे अनोखा

रंग हावे चोखा
माथा नावावय सब जन-जन ह
खुशी मनावय सब जन-जन ह.
लहरावय देश म तिरंगा
फहरावय देश म मोर झंडा

जयकारा होवय
तनमन ल मोहय
तीन रंग सब रँगय
तिरंगा मन भावय
झुमय नाचे गाए कण-कण ह
उत्साह हर छाए हे तन-मन ह.
लहरावय देश म तिरंगा
फहरावय देश म मोर झंडा

बापू के कहना
बापू के सपना
अपन घर अंगना
धरती रहे अपना
जनता के झुमय मन-मन ह
सेनानी मन म चढय सुमन ह.
लहरावय देश म तिरंगा
फहरावय देश म मोर झंडा

रंग केशरिया हे
त्याग-बलिदान के
रंग हावे सादा हे
शांति-सद्भावना के
रंग भावत हे हरियर मनभावन ह
आगे हमर अब सुराज-सुहावन ह.

*****

इसांनियत को जाहिर कर स्वार्थ को मिटाना है

रचनाकार- किशन सनमुख़दास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र

इसांनियत को जाहिर कर
स्वार्थ को मिटाना है.
बस यह बातें दिल में धर
एक नया भारत बनाना है.

एकता अखंडता भाईचारा दिखाना है
यह जरूर होगा पर
इसकी पहली सीढ़ी
अपराध को ह्रदय से मिटाना है.

सरकार कानून सब साथ देंगे
बस हमें कदम बढ़ाना है
हम जनता सबके मालिक हैं
यह करके दिखाना है.

कलयुग से अब सतयुग हो
ऐसी चाहना है
हम सब एक हो ऐसा ठाने
तो ऐसा युग जरूर आना है.

पूरी तरह अपराध मुक्त भारत बने
यही चाहना है,
भारत फिर सोने की चिड़िया हो
ऐसी भावना है.

सबसे पहले खुद को
इस सोच में ढालना हैं,
फिर दूसरों को प्रेरित कर
जिम्मेदारी उठाना है.

ठान ले अगर मन में
फिर सब कुछ वैसा ही होना है,
हर नागरिक को परिवार समझ
दुख दर्द में हाथ बटाना है.

इस सोच में सफल हों
यह जवाबदारी उठाना है,
मन में संकल्प कर
इस दिशा में कदम बढ़ाना है.

पूरी तरह अपराध मुक्त भारत बने
यही चाहना है,
भारत फिर सोने की चिड़िया हो
ऐसी भावना है.

*****

बादल आए

रचनाकार- कन्हैया साहू 'अमित', भाटापारा

काले-काले बादल आए.
नभ पर देखो कैसे छाए.
रूप अनोखा, गजब निराला.
कोई गोरा, कोई काला.

कोई दिखता जैसे हाथी.
लगता कोई अपना साथी.
कोई घोड़ा, बंदर, भालू.
कोई कद्दू, बैगन, आलू.

कोई पर्वत, घाटी, सागर.
कोई लोटा, थाली, गागर.
कोई मछली, मेढक, पानी.
कोई दादा, नाना - नानी.

कोई सूरज, चाँद, सितारे.
लगता जैसे पास हमारे.
खेल खेलतें छुपन छुपाई.
बादल, बिजली, हवा हवाई.

मन करता है इनको पकड़ूँ.
अपनी बाहें कसकर जकड़ूँ.
पल पल रूप बदलते बादल.
हमको तो बस छलते बादल.

*****

बेटी नहीं पतन का कारण

रचनाकार- प्रीति चौधरी "मनोरमा", उत्तरप्रदेश

हरियाणा के छोटे से गाँव में जन्मी माही जब चिकित्सक बनकर गाँव लौटी तो सबसे पहले गाँव के सरपंच बिहारीदास और मंदिर के पुजारी बाबा रामजी लाल जी से मिली. उसके जन्म पर उन्होंने उसे उबलते हुए दूध में डालकर मारने का भरसक प्रयास किया था किंतु उसकी माँ कजरी बीच में आ गई और उनकी यह इच्छा पूरी नहीं हो पाई. पुजारी बाबा का तो यहाँ तक कहना था कि यदि इस कन्या को जीवित रहने दिया गया तो गाँव का पतन होना निश्चित है. यहाँ की खेती- बाड़ी सब सूख जाएगी. फसल बर्बाद हो जाएँगी. कुल देवता अप्रसन्न होकर गाँव को जल देने से मना कर देंगे. पुराने समय से ही इस गाँव में बेटी को जन्मते ही मारने की प्रथा प्रचलित थी. माही ने अपने नाना के घर रहकर शिक्षा दीक्षा प्राप्त की. आज जब वह डॉक्टर बनकर अपने गाँव में ही क्लीनिक खोल रही है तो गाँव वालों के लिए यह उल्लास का विषय बन गया है. उन्नति के रास्ते खुल गए हैं. गाँव वाले माही के क्लीनिक खोलने पर ढोल- ताशे व नगाड़े बजा रहे हैं. सब हर्षोल्लास से नर्तन कर रहे हैं किंतु पुजारी बाबा और सरपंच जी चाह कर भी उन खुशियों में शामिल नहीं हो पा रहे हैं और पेड़ के पीछे खड़े हुए अपना मुँह छुपाए माही की सफलता को देख रहे हैं और मन ही मन अपने कृत्य पर पश्चाताप भी कर रहे हैं. पुजारी बाबा और सरपंच जी की आँखों में आत्मग्लानि के भाव हैं .

माही उनसे प्रश्न पूछना चाहती है कि वह गाँव के लिए उत्थान है अथवा पतन ..? किंतु उनके झुके हुए नेत्र स्वयं ही निरुत्तर हो रहे हैं.

*****

प्रकृति की सुंदरता

रचनाकार- युक्ति साहू , कक्षा 8 वी, स्वामी आत्मानंद शेख गफ्फार अंग्रेजी माध्यम विद्यालय, तारबाहर, बिलासपुर

हरी-भरी सी दिख रही है,
देखो प्रकृति हमारी.
चारो ओर हरियाली बिछ रही है,
आई थी जो वर्षा प्यारी.

पत्तियों को तो देखो ज़रा,
कैसी वो खिल खिला रहीं है.
डाल फूल पत्तियों से भरा,
कुसुम भी तो मुस्कुरा रही है.

वायु हर्ष से दौड़ रहा,
आया है जो सावन.
नभ बादल से सज रहा,
ठंडी फुहार है मनभावन.

नदी ,तालाब और जलाशय,
फिर से जलमय हो गए हैं.
इस सुंदरता का क्या हो आशय?
हम भी मोहित हो गए हैं.

पेड़ -पौधे तो मानो जैसे,
खुशी से झूम रहे हैं.
प्रकृति की शोभा बताऊँ कैसे?
स्वागत सावन का ये कर रहे हैं.

*****

ओजोन की पीड़ा

रचनाकार- कामिनी जोशी, कबीरधाम

तड़प उठी धरती माता भीष्म उष्मा को देखकर.
बिलख पड़े जीव -जंतु भी प्रचंड ताप को सह कर.

सबकी आशाएँ थी जुड़ी ओज़ोन की परत से
हैरान हो ओज़ोन बोली याद आई हूँ अब से.
हे मानव,
भौतिक सुख की आस में प्रकृति को भुला दिया
एक मात्र मैं बची थी मुझे भी झुठला दिया.
चीत्कार से क्या होगा अब तो आँख खोल लो
बची हूँ थोड़ी बहुत फिर मुझको जोड़ लो.

भुला दिया तुमने मुझे फिर लौटकर ना आऊँगी
प्रेमपूर्वक सहेजने से छोड़कर ना जाऊँगी.
मेरे वजूद को पाकर धन्य धरती हो जाएगी
आएगी हरियाली ,खुशियां छा जाएगी

अवनी के शान को फिर से उच्च कर जाओ तुम.
कष्टों से मुझे दूर भगाओ तुम.

हे धरा !अब तुम पर आस है
जीत जाओगे तुम ये विश्वास है.

हिन्दी भाषा

रचनाकार- सुचित्रा सामंत सिंह, SAGES JAGDALPUR

हिंद देश के निवासी हैं,
हिन्दी हमारी मातृभाषा है,
जिसे सुनकर बोलकर बड़े हुए,
यही हमारी राष्ट्रभाषा है.

भारतीयों को जो एकता में जोड़े रखे,
यह हमारी पावन हिन्दी भाषा है,
भारतीय संस्कृति, संस्कारों का,
प्रतिबिंब हमारी हिन्दी भाषा है.

सरल, सहज, सुगम, लचीली,
मातृभूमि की अनमोल धरोहर,
एकता के सूत्र में जो पिरोए हमें,
हमारी पहचान हिन्दी भाषा है.

*****

टमाटर का घमंड

रचनाकार- बद्री प्रसाद वर्मा अनजान

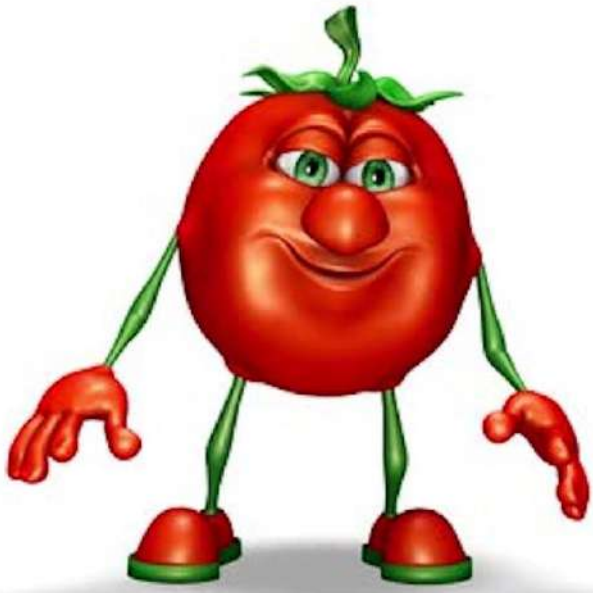

एक रात सब्जी वाले के दुकान में बैठे सभी सब्जी टमाटर के घमंड को देख कर बहुत परेशान थे.

जब से टमाटर का रेट 250 रुपया किलो हो गया उस दिन से टमाटर अपने को सभी सब्जियों का सरताजा समझने लगा. किसी सब्जी से ठीक से बात नहीं करता था. और तो और अपने सब्जी मित्रों से कहता रहता कि मेरी कीमत के आगे तुम्हारी कीमत बहुत मामुली है.

तुम सब मेरी बराबरी कभी नहीं कर सकते हो. मैं सभी सब्जियों का राजा बन गया हूं. हमसे कोई बात मत करे.

टमाटर की बात सुनकर कटहल बोला आरे वो टमाटर इतना घमंड मत दिखा वर्ना मार मार कर तेरा कचूमर निकल दूंगा. तू अपने को सब्जियों का राजा महाराजा समझने लगा है. कल तक तू दस रुपया किलो बिक रहा था तब भी हम तेरे साथ मिल कर रहते थे.

आज तेरा कीमत क्या बढ़ गया कि अपने को हम सब का सरताज समझने लगा. आज तो फैसला हो कर रहेगा. तेरे घमंड की सजा आज तो मिलकर रहेगी.

कटहल की बात सुनकर टमाटर बोला तुम हमें मारोगे, अगर तुझमें हिम्मत है तो जरा छूकर हमें दिखा. अभी पुलिस को बुला कर इसका मजा चखाता हूं.

तू हम सब्जियों को पुलिस की धमकी दे रहा है. लौकी, बंडा, कोहड़ा, बैगन, आलू, प्याज, नेनुआ, करैला, भिन्डी, शिमला मिर्ची, परवल, अरुई, गोभी सभी सब्जी टमाटर के खिलाफ खड़े हो गए.

सारे सब्जियों की बात सुनकर टमाटर अपनी चाल बदल कर बोला तुम सब तो झूठ मूठ के हम पर नाराज हो गए. मैं भला तुम से कभी जीत पाऊंगा. मैं तो मजाक कर रहा था.

टमाटर अपनी जान बचाने के सभी सब्जियों से बोल उठा, उसका शान और घमंड न जाने कहां चला गया.

टमाटर सभी सब्जियों से हाथ जोड़ कर बोला मेरे सब्जि भाईयों बहनों मैं अपनी भूल की आप सब से क्षमा मांगता हूं. और वादा करता हूं कि आज के बाद फिर कभी अपना घमंड नहीं दिखाऊंगा.

टमाटर की बात सुनकर आलू बोला, टमाटर भाई मुझे भी अपने पर घमंड है अगर मैं नहीं होता तो आज किसी को आलू की सब्जी नसीब नहीं होती मेरा भी भाव कभी कभी खूब बढ़ जाता है मगर मैंने कभी अपने पर घमंड नहीं किया एक तुम हो कि अपने को सरताज समझने लगे.

अगर दस दिन तुमको खरीदने वाला नहीं आया तो तुम इस टोकरी में पड़े पड़े सड़ जाओगे फिर तेरा ठिकाना कूड़े की ढेर पर नजर आएगा. छोटी मुंह बड़ी बात मत कर समझे.

आलू की बात सुनकर टमाटर शर्म से पानी पानी हो गया और कहने लगा हमसे जो भूल हो गई उसके लिए मैं सभी से क्षमा मांगता हूं और वादा करता हूं आज के बाद कभी अपना घमंड किसी को नहीं दिखाऊंगा .

टमाटर की इतनी बात सुनकर सारे सब्जी बहुत खुश हुए और टमाटर की सदबुद्धि की तारीफ करने लगे.

तभी बीच में कटहल खड़ा हो कर बोला टमाटर ने अपनी गलती मान लिया इसलिए उसे हम माफ करते हैं.

रात बहुत हो गई है चलो हम सब सोने चलते हैं.

कटहल की बात सुनकर सारे सब्जी अपनी अपनी टोकरी में

पैर फैला कर खर्राटे भरने लगे.

*****

छत्तीसगढ़ी पहेली

रचनाकार- कन्हैया साहू 'अमित', भाटापारा

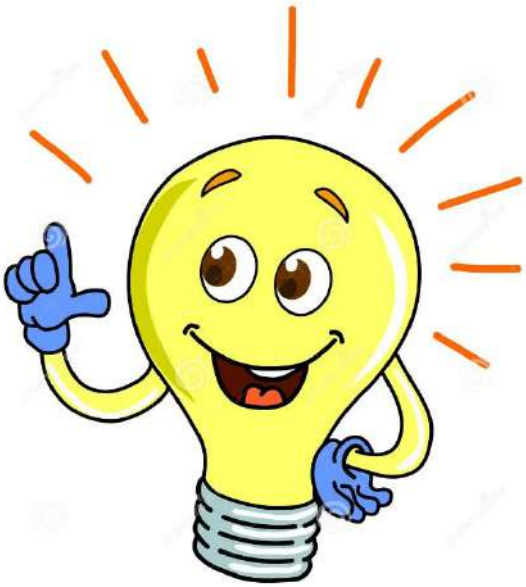

1. दू आखर के हावय नाम, हरदम रहिथे सरद जुकाम.
काजग हावय मोर रुमाल, काम मोर हे गजब कमाल.

2. रोवाना हे एखर काम, लाली बाई हावय नाम.
हरियर पहिरे लुगरा लाम, दू पइसा हे एखर दाम.

3. हरियर हँव, पाना झन जान, करँव नकल, झन बंदर मान.
मिरचा खाथँव मैं हा पोठ, तपत कुरू के करथँव गोठ.

4. हरियर पींयर हवै मकान, रहँय इहाँ करिया इंसान.
रहै रंधनीघर मा धाक, फागुन मा ये जाथे पाक.

5. पाँव नहीं पर जाथे पार, खलबल-खलबल बड़ रफ्तार.
भागय सरपट पानी चीर, बिन पतवार हाल गंभीर.

6. आगू-पाछू डोलय मोर, करय कभू नइ काँही शोर.
अँधियारी मा कहाँ लुकाय, देख अँजोरी तुरते आय.

7. सबके घर रहिथँव बिन खाय, कोन्हों नइ पानी पीयाय.
करँय भरोसा सब संसार, महीं हरँव घर के रखवार.

8. कुकरा नो हे, मुँड मा मौर, जंगल झाड़ी एखर ठौर.
नाचय बरखा बादर देख, सतरंगी हे, नाँव सरेख.

9. करिया हे पर नो हे काग, लंबा हे पर नो हे नाग.
अँइठन हे पर नो हे डोर, झटपट संगी करलव शोर.

10. खाथे येहा गोली गोल, डरथे जम्मों सुनके बोल.
दबथे घोड़ा भागय सोज, ठाठ हाथ मा, गोली खोज.

1-पेन, 2-मिरचा, 3-मिट्ठू, 4-सरसों, 5-डोंगा, 6-अपन छँइहाँ, 7-तारा (ताला), 8-मँजूर, 9-बेनी (चोटी,) 10-बंदूक

*****

अपनाएँगे हम नवाचार

रचनाकार- कन्हैया साहू 'अमित', भाटापारा

पढ़ना-लिखना होगा मजेदार,
अपनाएँगे जब हम नवाचार.

डाँट-डपट ना अनुशासन से,
सीखें बच्चे अपने मन से.
उछलकूद और खेल-तमाशा,
खुश हों पाकर अपनी भाषा.
तभी बनेंगे सब भागीदार,
अपनाएँगे जब हम नवाचार.

चाहे जो भी वह करने दें,
रंग सलोना नित भरने दें.
देखभाल कर जानेंगे सब,
समझ बनेगी, मानेंगे तब.
सहज करेंगे सारा स्वीकार,
अपनाएँगे जब हम नवाचार.

दौड़, कबड्डी, खो-खो खेलें,

खूब मजे शाला में ले लें.
शिक्षा के प्रति हो अनुरागी,
मिले नहीं फिर शाला त्यागी.
शिक्षा पर है सबका अधिकार,
अपनाएँगे जब हम नवाचार.

*****

बादर के रूप

रचनाकार- कन्हैया साहू 'अमित', भाटापारा

पाँख लगा बादर उड़ियाथें.
आनीबानी रूप देखाथें.

दिखथें बादर जोक्कर, जकला
लगथें भुतुवा, भालू, भकला.

कतको हंसा जइसे उज्जर.
कोनो बिरबिट कजरी अलकर.

कोनो दिखँय मुंदरी, छल्ला.
कतको अरझे, कतको पल्ला.

छिन मा आने, छिन मा ताने.
बस रूप बदलथें मनमाने.

कभू लगय इन भौंरा-बाँटी.
कहूँ दिखयँ दाई के साँटी.

कतको कुप्प किंजरँय छेल्ला.
कोनो तो हरहिंछा हेल्ला.

लामे जस कोरवान चद्दर.
कभू दिखैं इन छानी-खद्दर.

कभू दिखयँ महतारी कोरा.
लगय कभू इन चुमड़ी, बोरा.

रिंगी-चिंगी रूप सुहाये.
बादर मोला गजब लुहाये.

*****

पोमेरेनियन का साथी

रचनाकार- उपासना बेहार

एक दिन दिया को रास्ते में एक पोमेरेनियन का साथी कुत्ता मिल गया जो पूरी तरह काला था लेकिन माथे में सफ़ेद निशान था और एक कोने में दुबक कर कुकू-कुकू कर रहा था. उसने चारों तरफ देखा कोई नहीं दिखा. दिया ने उसे उठा लिया और आसपास के दुकानों में जा कर उसके बारे में पूछने लगी लेकिन किसी को भी उसके बारे में नहीं पता था.दिया को समझ नहीं आया कि कुत्ते को किसे दे दूं, कोई और हल न सुझने पर वो उसे अपने घर ले आयी और सभी दूकानों में अपने पापा का मोबाइल नंबर छोड़ आई कि अगर कोई पोमेरेनियन को ढूंढता आये तो ये नंबर दे देना. उसने घर में सबको पोमेरेनियन के मिलने के बारे में बताया. सभी सोच में पड़ गए कि इसके घर को कैसे खोजा जाए? तभी भैया ने कहा कि “हम इसका फोटो खीच कर फेसबुक, वाट्सएप में डाल देंगे और सभी से रिक्वेस्ट करेंगे कि पोमेरेनियन की खबर को अन्य समूह में फैलाए.” ये तरीका सबको पसंद आया और पोमेरेनियन की फोटो खीच कर मम्मी, पापा और भैया ने पापा के मोबाइल नंबर के साथ अपने फेसबुक, वाट्सएप में पोस्ट कर दिया.

कुछ दिन बाद पापा के पास एक कॉल आया जिसमें एक अंकल ने बताया कि ‘फोटो वाला पोमेरेनियन मेरा है.’ पापा ने घर में जा कर सब को बताया. दिया ये सुन कर दुखी हो गयी. एक बार तो उसने सोचा कि ‘पोमेरेनियन को देने से ही मना कर दूँ,’ फिर उसे ख्याल आया कि पोमेरेनियन और अंकल एक दूसरे को मिस कर रहे होंगें. दिया ने प्लान बनाया कि अंकल के आने तक वो अपना ज्यादा से ज्यादा समय पोमेरेनियन के साथ गुजारेगी. अब वो स्कूल से आ कर पोमेरेनियन के साथ ही सारा समय गुजारती थी, रात में उसे अपने साथ सुला लेती थी.

इतवार को अंकल घर आ गए. जैसे ही पोमेरेनियन ने अंकल को देख कर तेजी से दौड़ते हुए उनके ऊपर चढ़ गया और प्यार करने लगा. अंकल भी उसे गोद में लेकर पुचकारने लगे. ये देख कर सब को कन्फर्म हो गया कि पोमेरेनियन अंकल का ही है. अंकल ने दिया को बहुत प्यार किया क्योंकि अगर वो पोमेरेनियन को अपने घर नहीं लाती तो अभी तक पता नहीं ये किस हालात में और कहाँ होता. सभी को पोमेरेनियन की देखभाल करने के लिए धन्यवाद किया. दिया ने कहा “अंकल जब भी मुझे पोमेरेनियन की याद आएगी तो क्या मैं उससे मिलने आ सकती हूँ.” अंकल ने कहा “जरुर प्यारी बिटिया.” दिया खुश थी कि पोमेरेनियन को अपना घर मिल गया.

*****

भारतीय संस्कृति हमको प्यारा

रचनाकार- किशन सनमुख़दास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र

सबको प्यारा माता पिता
राष्ट्र की सेवा का पाठ पढ़ाते हैं.
हम अपनी भारतीय संस्कृति से
प्राणों से अधिक प्यार करते हैं.

भारतीय संस्कार
हमारे अनमोल मोती है.
प्रतितिदिन माता-पिता के पावन
चरणस्पर्श से शुरुआत होती है.

अनेकता में एकता
हमारी शैली है.
प्राकृतिक संपदा से
भरपूर हरियाली है.

उसके बाद वंदन कर
गुरु को नमन करते हैं.

बड़ों की सेवा में हम भारतीय
हमेशा स्वतः संज्ञान से आगे रहते हैं.

श्रवण कुमार गुरु गोविंद सिंह
महाराणा प्रताप वीर शिवाजी
अनेकों योद्धाओं और वीरों
महावीरों की मां भारती है.

हम भारतवासी संयुक्त परिवार की
प्रथा श्रद्धा से कायम रखे हैं.
अतिथियों को देव तुल्य मानकर
भरपूर भाव से सेवा करते हैं.

*****

स्कूल खुला फिर

रचनाकार- कन्हैया साहू 'अमित', भाटापारा

पढ़ने-लिखने के दिन आए.
स्कूल खुला फिर हमें बुलाए.

बीत गए अब पल मस्ती के,
छोड़ें साथ मटरगश्ती के,
चलो खिलौने छोर टिकाए.
स्कूल खुला फिर हमें बुलाए.

पुस्तक-कापी, ढूंढो पेंसिल,
पढ़-लिख बनना है काबिल,
अपना बस्ता, पीठ लगाए.
स्कूल खुला फिर हमें बुलाए.

अपनी किस्मत स्वयं बनाओ,
जो चाहो वो तुम बन जाओ,
गुरुजन तुमको राह दिखाए.
स्कूल खुला फिर हमें बुलाए.

पढ़ने-लिखने के दिन आए.
स्कूल खुला फिर हमें बुलाए.

हवा है सुन्दर

रचनाकार- करन टंडन, कक्षा- 8 वीं, शास. पूर्व माध्य. शाला बिजराकापा न, संकुल- लालपुर थाना, वि.ख. लोरमी, जिला- मुंगेली

ये हवा है कितनी सुन्दर
इसको कोई काट नहीं सकता
ना ही इसको कोई मार सकता है
देखो इसको, महसूस करो तुम
कितना आनंद आ रहा है
सभी तरफ खुशहाली है
गर्मी भी कम हुई है
इन पेड़ों से महक आ रही है
ये हवा है दानी
इसको रोको ना मनमानी
अपने ज्ञान को तुम बढ़ाओ
सुन्दर-सुन्दर पेड़ तुम लगाओ
ये हवा है कितनी सुन्दर
ये पेड़ भी है कितना सुन्दर

*****

आगे बढ़ जाऊँगा

रचनाकार- यशवंत पात्रे, कक्षा- 8 वीं, शास. पूर्व माध्य. शाला बिजराकापा न, संकुल- लालपुर थाना, वि.ख. लोरमी, जिला- मुंगेली

मैं विद्यार्थी हूँ,
परीक्षा से कभी ना डरूँगा.
मैं विद्यार्थी हूँ,
पढ़ कर आगे बढ़ जाऊँगा.
मैं पानी नहीं,
जो ऊपर से गिर जाऊँ.
मैं चिट्ठी नहीं,
जो हवा में उड़ जाऊँ.
पानी तुम कितना भी कोशिश कर लो,
मैं रेनकोट ले आऊँगा.
हवा तुम कितनी भी कोशिश कर लो,
मैं सीढ़ी समझ कर चढ़ जाऊँगा.
मैं विद्यार्थी हूँ,
पढ़ कर आगे बढ़ जाऊँगा.

*****

भरोसा

रचनाकार- निलेश यादव, आठवीं

भरोसा एक आधार है जीवन का,
जैसे चंदन जल में रंग बदलता.

इसकी महिमा शब्दों में बयां करना, व्यर्थ नहीं,
अस्थायी नहीं, सच्चा है यह वचन.

भरोसा एक पुष्प है जो खिलता है मन में,
जैसे सूरज की किरण छाती में घुलती है.
यह जीवन का रंग है, संगीत है जो गाता है,
उम्मीद की किरणों को जगाता है.

भरोसा एक सपना है जो सच होता है,
जैसे पानी की धार नदी में बहती है.

यह समर्पण की शक्ति है, जीने की राह है,
विश्वास के पंखों पर मन को उड़ाता है.

भरोसा एक आश्रय है जो चढ़ता है ऊँचाईयों पर,
जैसे बादलों का घेरा आसमान में बदलता है.

यह विजय की शक्ति है, संकटों का साथी है,
दृढ़ता के बंधनों को तोड़कर मन को संभालता है.

भरोसा एक आधार है जीवन का,
जैसे चंदन जल में रंग बदलता.

सत्यता की गहराई है, प्रेम का आकार है,
जीवन की दास्तान जो सच्चाई से सजता है.

*****

जिंदगी में विराम चिन्ह

रचनाकार- अशोक कुमार यादव मुंगेली

जिंदगी कोई विराम चिन्ह नहीं है,
जिसे, जब चाहे लगाया जा सके.
जिंदगी लिखी हुई कहानी नहीं है,
जिसे, जब चाहे मिटायी जा सके.

कठिन अभ्यास करो नव्य अध्येता,
प्रश्नों और उत्तरों का हो पुनरुक्ति.
दोहरे शीर्षक का ना हो अब काम,
जैसे उप विराम की हो कोई सूक्ति.

भावों, सवालों का बोध नहीं तुम्हें,
लक्ष्य में लगा प्रश्नवाचक निशान.
लगातार कर रहे हो बड़ी गलतियाँ,
हंस पद का नहीं शिक्षार्थी संज्ञान.

अवतरण, कोष्टक में कैद है विचार,
लाघव बन, ज्ञान का कर रहे लोप.
योजक और निर्देशक में उलझा मन,
टिप्पणी कर, विस्मय समाप्ति सोच.

मानव थक-हार कर रुक जाता है,
उसी दिन लग जाता है पूर्ण विराम.
मन की इच्छाओं को दफन करके,
वो निश्चिंत होकर करता है आराम.

*****

बेटी की विदाई

रचनाकार- प्रियांशिका महंत, कक्षा – 7, शाला – सजेस तारबहर बिलासपुर

कन्यादान हुआ जब पूरा,आया समय विदाई का.
हंसी खुशी सब काम हुआ था,सारी रस्म अदाई का.

बेटी के उस कात्तर स्वर ने, बाबुल को झकझोर दिया.
पूछ रही थी पापा तुमने, क्या सचमुच में छोड़ दिया.

अपने आंगन की फुलवारी, मुझको सदा कहा तुमने.
मेरे रोने को पर भर भी, बिल्कुल नहीं सहा तुमने.

क्या इस आंगन के कोने में, मेरा कुछ स्थान नहीं.
अब मेरे रोने का पापा , तुमको बिल्कुल ध्यान नहीं.

देखो अंतिम बार देहरी, लोग मुझे पुजवाते हैं.
आकर पापा क्यों इनको, आप नहीं धमकाते हैं.

नहीं रोकते चाचा ताऊ, भैया से भी आस नहीं.
ऐसी भी क्या निष्ठुरता है, कोई आस पास नहीं.

बेटी की बातों को सुनके, पिता नहीं रह सका खड़ा.
उमड़ पड़े आंखों से आंसू, बदहवास सा दौड़ पड़ा.

कातर की बछिया-सी वह बेटी, लिपट पिता से रोती थी.
जैसे यादों के अक्स वह, अश्रु बिंदु से धोती थी.

मां को लगा गोद से कोई, मानो सबकुछ छीन चला.
फूल सभी घर की फुलवारी से कोई ज्यों बीन चला.

छोटा भाई भी कोने में, बैठा-बैठा सुबक रहा.
उसको कौन करेगा चुप अब, वह कोने में दुबक रहा.

बेटी के जाने पर घर ने, जानें क्या क्या खोया है.
कभी न रोने वाला बाप , आज फुट-फुट कर रोया है.

*****

गुरु

रचनाकार- प्रियांशिका महंत, कक्षा – 7, शाला – सजेस तारबहर बिलासपुर

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुर गुरुदेवोमहेश्वर.
गुरु साक्षात परब्रह्म तस्मै श्री गुरुवे नमः.

ज्ञान से बड़ा कोई दान नहीं और
गुरु से बड़ा कोई भगवान नहीं.

अंधेरे जीवन में हमारे नया सवेरा लाते है
उनकी ऊंची शान है शिक्षक वो कहलाते है.

जल जाते हैं वो दीये की तरह
कई जीवन रोशन कर जाते हैं.
कुछ इसी तरह से हर गुरु
अपना फर्ज निभाते हैं.

जिंदगी गिरवी रख कर भी

ना चुका पाएंगे हम उनका ऋण,
मां ही नहीं, भगवान के बराबर
गुरु का भी है उतना ही महान ऋण.

किस्सा जिंदगी का कभी शुरू ना हुआ होता.
अगर जिंदगी को जिंदगी बनाने वाला गुरु ही ना हुआ होता.

*****

खुश रहो हर हाल मे

रचनाकार- सृष्टि प्रजापति, आठवीँ, स्वामी आत्मानंद तारबहार बिलासपुर

जिन्दगी है,खुशी- खुशी बिताओ तुम.
हमेशा खुश रहो सबको खुश रहना सिखाओ तुम.
क्या पता कल हो या न हो.
जो है, आज में ही जियो.

सारे परेशानियों को भूल जाओ तुम.
खुशियों को पास बुलाओ तुम.
जैसी भी परिस्थिति हो उसको अपनाओ तुम.
चेहरे पर मुस्कान लाओ तुम.

जीवन का एक-एक क्षण कीमती है.
दुखी होकर इसे न बरबाद करो तुम.
ग़म की नहीं हमेशा खुशी के आँसुओ की बरसात करो तुम.

*****

खुश रहो हर हाल मे

रचनाकार- सृष्टि प्रजापति, आठवीँ, स्वामी आत्मानंद तारबहार बिलासपुर

जिन्दगी है,खुशी- खुशी बिताओ तुम.
हमेशा खुश रहो सबको खुश रहना सिखाओ तुम.
क्या पता कल हो या न हो.
जो है, आज में ही जियो.

सारे परेशानियों को भूल जाओ तुम.
खुशियों को पास बुलाओ तुम.
जैसी भी परिस्थिति हो उसको अपनाओ तुम.
चेहरे पर मुस्कान लाओ तुम.

जीवन का एक-एक क्षण कीमती है.
दुखी होकर इसे न बरबाद करो तुम.
ग़म की नहीं हमेशा खुशी के आँसुओ की बरसात करो तुम.

*****

रक्षाबंधन

रचनाकार- जानवी कश्यप, आठवीं ,स्वामी आत्मानंद तारबाहर बिलासपुर

सावन के महीने में राखी का त्यौहार आता है,
ढेर सारी साथ खुशियां भी बांध लाता है,
आखिर में यह भाई बहनों का रिश्ता कितना अनमोल होता है,
तोड़े से भी ना टूटे यह भाई बहनों का बंधन.
एक यही तो है भाई बहनों का त्यौहार.
चाहे जितना भी लड़े पर यह त्यौहार सभी को मिला ही देता है.
इसलिए पूरे साल बहनों को इंतजार रहता है इस त्यौहार का.

*****

बचपन अनमोल

रचनाकार- रेशमी, कक्षा-8, स्कूल- राउप्रा विद्यालय बेनिवालो की ढाणी, राजस्थान

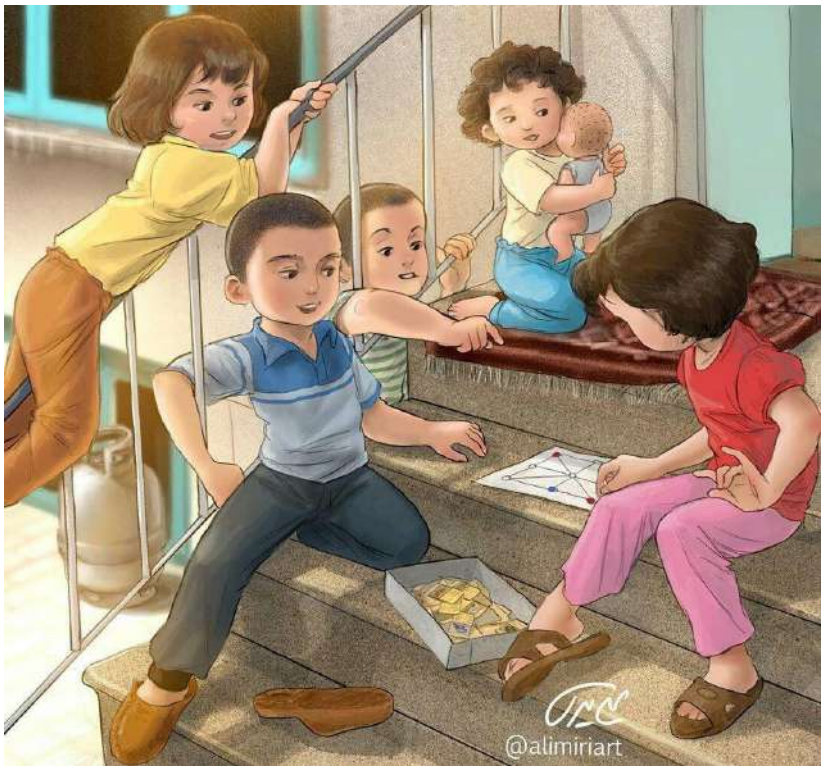

बचपन जो था अपना,
अब सब लगता है सपना.
लगती थी दोस्ती वह सस्ती,
और दोस्तों के साथ की मस्ती.

अपने बचपन के घेरे में,
और दोस्तों के डेरे में.
दोस्तों का साथ पाना,
और हमेशा पास रह जाना.

हर वक्त मित्रों का पहरा,
और प्यार उनका गहरा.
क्या बचपन था वह अपना,
अब सब लगता है सपना.

दोस्ती का तो नभ भर में संचार,
पर दोस्ती तो 10 फुट का संसार.
बचपन जो था अपना,
अब लगता है सपना.

*****

नया भारत

रचनाकार- किशन सनमुख़दास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र

भारत नवाचारों का उपयोग करके
ऐसी तकनीकी विकसित करता है
जनता के लिए सस्ती सुगम सहजता लाए
ऐसा नवाचार विज्ञान नए भारत में लाता है

उन्नत भारत अभियान में नवाचार भाता है
उन्नत ग्राम उन्नत शहर में विज्ञान लाकर
नमामि गंगे का अभियान चलाना है
नवाचार हरआदमी के जीवन में सहजता लाता है

रचनात्मक नवाचार से जुड़ा विज्ञान
आम आदमीके जीवन में सहजता लाता है
डिजिटल भारत मेक इन इंडिया
जैसी थीम जनहित में लाता है

भारत वैज्ञानिक दृष्टिकोण के फलक को
विकसित करने नए आयाम बनाता है
सतत विकास और नए तकनीकी नवाचारों
के माध्यम के साथ उन्नति दिखाता है

*****

मेरे दो की कहानी

रचनाकार- संज्ञा साहू, बड़ेटेमरी

अगर होते समोसे के पेड़,
मैं खाती केवल डेढ़.

आप सोचेंगे दो क्यों न खाती,
दो की संख्या मुझे न भाती.

मम्मी -पापा भी दो के जोड़े,
बंधे जैसे दो अड़ियल घोड़े.

होते रोज नए-नए झगड़े,
मम्मी के नाटक, पापा के लफड़े.

यह है मेरे दो की कहानी,
दो में चीजें मुझे नहीं खानी.

*****

माता-पिता को हर ख़ुशी दें

रचनाकार- किशन सनमुख़दास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र

भारत की मिट्टी में ही संस्कार हैं, भारत में संस्कार, भाव, आस्था, परोपकार की जैसी भावना है, वह हमें कहीं और दिखाई नहीं देती. हर भारतवासी स्वभाविक ही इन भावों से ओतप्रोत हो जाता है. यूँ तो संस्कारों की माला में बहुत से मोती हैं पर हम आज उसके एक मोती माता-पिता के सम्मान की बात उठाते हैं. दुनिया में सबसे अनमोल एक रिश्ता है जिससे कोई भी अछूता नहीं है. ऐसा रिश्ता जो अपना है,जिसमें कोई धोखा नहीं है,जिसमें स्वार्थ के लिये कोई स्थान नहींं है,जिसमें परायेपन की तो परछाई तक नहीं है,और वो रिश्ता है-माता-पिता का अपनी संतान से. य़ह एक ऐसा रिश्ता है जो दिल से जुडा होता है. भारत में इस रिश्ते का बहुत मान सम्मान है. माता-पिता पर एक श्लोक है कि सर्वतीर्थमयी माता सर्वदेवमय: पिता.

मातरं पितरं तस्मात् सर्वयत्नेन पूजयेत्..

अर्थात: माता सर्वतीर्थ मयी और पिता सम्पूर्ण देवताओं का स्वरूप हैं इसलिए सभी प्रकार से यत्नपूर्वक माता-पिता का पूजन करना चाहिए. जो माता-पिता की प्रदक्षिणा करता है, उसके द्वारा सातों द्वीपों से युक्त पृथ्वी की परिक्रमा हो जाती है. माता-पिता अपनी संतान के लिए जो क्लेश सहन करते हैं, उसके बदले पुत्र यदि सौ वर्ष माता-पिता की सेवा करे, तब भी वह इनसे उऋण नहीं हो सकता.

अगर हम पहले की बात करें तो सबसे सटीक उदाहरण हम श्रवण कुमार का दे सकते हैं परंतु यह समय का चक्र है जो घूमता रहता है. समय कैसे बदल जाता है पता ही नहीं चलता. आज के बदलते परिवेश मे श्रवण कुमार बमुश्किल मिलेंगे. आज समय के हिसाब से पुत्र में भी काफी बदलाव आया है,अब पहले वाली बात नहीं रह गयी. एक बच्चे के लिये माता-पिता का रहना बहुत ही महत्वपूर्ण होता है,जितना महत्व एक पौधे को पालने मे माली करता है, उतनी ही जिम्मेदारी एक बच्चे को पालने में निभानी पड़ती है. वह माली जो लकड़ी का सहारा देकर ,पानी ,खाद आदि से सिंचित करके पौधे को वृक्ष बनाता है.उसी प्रकार माता-पिता भी नन्हे से बच्चे को अनेक कष्ट झेलते हुए युवक बनाते हैं. माता-पिता के अथक प्रयास की बदौलत ही एक बच्चा सफलता के मार्ग पर चलते हुए एक बड़ा इंसान बनता है. इसीलिये माता-पिता को बच्चों का प्राथमिक विद्यालय कहते है. क्योंकि हर बच्चा पैदा होते ही स्कूल नही जाता. घर पर पहली सीख माँ और पिता ही देते हैं. आज लोग भूलते जा रहे हैं कि मनुष्य को पहला निस्वार्थ और सच्चा प्यार सिर्फ अपने माँ-बाप से मिला है. माता-पिता ने हमें जिंदगी देने के लिए कितनी कठिनाइयों का सामना किया इसका अंदाजा भी नहीं लगाया जा सकता. इसीलिए माता-पिता से हमेशा प्यार करे उनकी सेवा करे, माता-पिता की सेवा करना मतलब ईश्वर को राज़ी करना. हालाँकि इस बदलते परिवेश में भी हम सभी एक बात महसूस करते हैं कि बेटे की अपेक्षा बेटी की माता-पिता के प्रति भाव, लगाव, आस्था, अधिक होती है और स्वाभाविक रूप से उसके परिवेश में माता-पिता के भी बेटी में भाव अपेक्षाकृत अधिक होते है फिर भी बेटा बेटी दोनों माता-पिता की आँखों के दो तारे होते हैं और दोनों आँखों को समान भाव देना मनुष्य की कुदरती प्रवृत्ति है अतः हर बेटे बेटी को चाहिए माता-पिता का भरपूर सम्मान करें. हमें यह भी नहीं भूलना चाहिए कि, हमने माता-पिता की ऊँगली थाम के चलना सीखा और उनकी मेहनत से पले. आज हम जो कुछ भी हैं हमारे माता-पिता की वजह से हैं. माता-पिता के त्याग और बलिदान का कर्ज हम अपनी जान देकर भी नहीं चुका सकते. इस दुनिया में माँ की ममता का कोई मोल नहीं है और पिता की मोहब्बत का कोई जोड़ नहीं है. आज हम जब बड़े हो गए है तो हमारा क़र्त्तव्य बनता है की हम अपने माता-पिता की सेवा करें, उनसे ऊँची आवाज में बात न करें, कोई भी काम शुरू करने से पहले उनसे सलाह लें, उनका सम्मान करें और अपने माता-पिता का कभी दिल न दुखाएँ. माता- पिता अपने बच्चों के लिए अपनी हर चीज कुर्बान कर देते है. लेकिन आज माता-पिता की अहमियत कम होती जा रही है. जिस बेटे की लाइफ बनाने में माता-पिता की जिंदगी गूजर जाती है आज उसी बेटे के लिए शादी के बाद माँ-बाप पराये हो जाते हैं. वे माता-पिता के त्याग और बलिदान को भूल रहे है. इस धरती पर हमारे माता-पिता ही साक्षात ईश्वर रूपी अंश हैं. माता-पिता की सेवा करना ईश्वर की आराधना का दूसरा नाम है. आज माता-पिता को गंगाजल नहीं, केवल नल के जल की जरूरत है. यदि हम समय पर उनकी प्यास बुझा सके तो इसी धरती पर स्वर्ग है. जिनके माता-पिता जिंदा है वे दुनिया के सबसे अमीर और संपन्न लोगहै. माता- पिता ईश्वर का दूसरा रूप होते हैं. अगर आपके माता-पिता आपसे खुश हैं तो समझो ईश्वर खुश है. जिस घर में माता-पिता की इज्जत नहीं होती, उस घर में बरकत नहीं होती है. माता-पिता की दुआ आपको मिल गयी समझो आपकी जिंदगी सँवर गयी, माता-पिता को आखिरी साँस तक खुश रखें और उन्हें हर वो सुख दे जो वो अपनी ज़िन्दगी में न पा सके, उनके हर एक सपने को

पूरा करें.आज माता-पिता की कद्र उस व्यक्ति से पूछिए जिनके माता-पिता इस दुनिया में नहीं है सब के आँसू झलकेंगे और विपरीत अपवाद कुछ ही लोग होंगे अतः माता-पिता में ही ईश्वर समाया है, गुरु समाया है, उनकी सेवा करने से सौ गुना अधिक पुण्य फल भी प्राप्त होता है.

*****

बाघ

रचनाकार- गौरीशंकर वैश्य विनम्र, लखनऊ

बाघ सदस्य बिल्ली - कुटुंब का
पूर्ण रूप से मांसाहारी.
लैटिन नाम 'पैंथरा टिगरिस'
जिसका अर्थ है 'तेज शिकारी'.

वन का बहेलिया कहलाता
बिग कैट' भी उसका नाम.
शक्ति और आक्रामकता का
रूप दिखाना जिसका काम.

बांग्लादेश, दक्षिण कोरिया
मलेशिया और भारत का.
राष्ट्रीय पशु कहलाता है
शुभ प्रतीक अतुलित ताकत का.

पीले रंग की मोटी चमड़ी
जिस पर सौ से अधिक धारियाँ.
इन सबका पैटर्न अलग है
जैसे भिन्न हों छाप-उँगलियाँ.

पीले बाघों की आँखों का
रंग हमेशा होता पीला.
श्वेत बाघ की आँखों का रंग

प्राकृतिक होता है नीला.

शक्ति के साथ-साथ बाघों की
बुद्धि बहुत होती है तेज.
अपने से भी बड़ा जानवर
जबड़ों में ले तुरत सहेज.

है फुर्तीला चतुर शिकारी
करता है छिप करके वार.
इतनी होती जीभ खुरदरी
देता छील तुरंत शिकार.

पिछले पैर हैं लंबे होते
बहुत अधिक मजबूत हैं टांगें.
इस कारण लंबी दूरी तक
भर लेता है खूब छलांगें.

साथी से संवाद हेतु ही
प्रायः करते तेज दहाड़.
भोजन बाद शिकार बचे यदि
उसे छिपाते करके आड़.

अँधियारे में अधिक है दिखता
प्रायः रात को करे शिकार.
नींद भी लेता सोलह घंटे
नींद से करता बेहद प्यार.

करने हित संवाद परस्पर
अपनी पूँछ का करें प्रयोग.
जल्दी-जल्दी पूँछ घुमाते
अधिक क्रोध का जब हो योग.

बाघ के बिना नहीं वन होते
वन के बिना न होते बाघ.

सम्मुख मिमियाने लगते हैं
एक से एक बड़े पशु घाघ.

बाघों को संरक्षण देकर
उनकी संख्या और बढ़ाएँ.
जंगल-वन कटने से बचाएँ
अवैध शिकार पर रोक लगाएँ.

*****

मछलीघर

रचनाकार- गौरीशंकर वैश्य विनम्र, लखनऊ

बना काँच का मछलीघर
मैं रहती उसके अंदर.

उसमें भरा हुआ है पानी
जिसमें करती मैं मनमानी.

खूब तैरती हूँ हरदम
नहीं सताता कोई गम.

आती रहती स्वच्छ हवा
स्वस्थ रहूँ मैं बिना दवा.

सहेलियाँ मेरी कुल आठ
सबके अपने-अपने ठाठ.

विद्युत का रंगीन प्रकाश
करा रहा सुख का आभास.

हर दस दिन में बदले पानी
कभी न भोजन की हैरानी.

रंगबिरंगा है संसार

दर्शक देख जताते प्यार.

बच्चे मुग्ध बजाते ताली
उनकी बढ़ जाती खुशहाली.

यहाँ न है शिकार का डर
सुखद सुरक्षित अपना घर.

*****

आरुषि की प्रेरणा

रचनाकार- संतोष साहू संकुल प्राचार्य सोमनापुर नया,कबीरधाम

किसी गाँव मे संतराम नामक एक किसान रहता था. वह खेती-बाड़ी का काम करता था. संतराम और उसकी पत्नी ज्यादा पढ़े लिखे नहीं थे. इनकी पाँच बेटियाँ थीं. इन्हें लेकर उन्हें गाँव वालों से कई तरह के ताने सुनने को मिलते थे. लेकिन उन्होंने कभी भी इसकी परवाह नहीं की. वे कहते थे कि बेटियाँ भी बेटों के समान होती हैं.इनकी बेटियाँ भी खेती-बाड़ी के काम में हाथ बँटाती थीं. वे बहुत मन लगाकर पढ़ाई भी करती थीं.

सभी बेटियाँ प्रतिभावान थीं. समय के साथ पढ़ाई पूरी करके दो बड़ी बेटियाँ शिक्षिका और तीसरी बेटी डॉक्टर बनी. चौथी बेटी आरुषी की आईएएस या आईपीएस बनने की दृढ़ इच्छा बचपन से ही थी. आरुषि बी ए पास होने के बाद लोक सेवा आयोग की परीक्षा दिलाई और उनका चयन नायब तहसीलदार के रूप मे हुआ. इनकी सबसे छोटी बहन गायत्री ग्राम पंचायत सचिव के पद पर आसीन है.

संतराम और उसकी पत्नी का मान समाज में बढ़ा. आज आसपास के गाँवों के लोग इस परिवार को बड़े सम्मान से देखते हैं. इस तरह इन बेटियों ने सिद्ध करके दिखाया कि बेटियाँ समाज में अभिशाप नहीं बल्कि वरदान हैं. इन बहनों की दृढ़ इच्छा शक्ति आज समाज की कई बालिकाओं के लिए प्रेरणा है.

*****

जल बचाओ जीवन बचाओ

रचनाकार- किशन सनमुख़दास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र

मानसून 2023 शुरू है
जलवायु परिवर्तन चेता रहा है
जल बचाओ जीवन बचाओ जलबिना
मानव जीवन अधूरा बता रहा है

पानी बचाने की ज़वाबदेही निभाना है
पानी का मूल्य हर मानव को समझाना है
पानी को अहम दुर्लभ मानकर
अपव्यय करने से बचाना है

पानी के स्त्रोतों की सुरक्षा स्वच्छता अपनाने
के लिए जी जान से ध्यान लगाना है
पानी बचाओ जीवन बचाओ
यह फॉर्मूला मूल मंत्र के रूप में अपनाना है

पानी बचाने की ज़वाबदेही निभाना है
हर मानव को ज़ल संरक्षण संचयन अपनाकर
पानी बचाकर जनजागृति लाना है
अगली पीढ़ियों के प्रति ज़वाबदारी निभाना है

बिना पानी ज़िन्दगी का दर्द क्या होता है
पानी अपव्यय वालों तक पहुंचाना है
पानी का उपयोग अब हमें
प्रसाद की तरह करना है

*****

मेरा स्कूल

रचनाकार- Emmanuel Jiwan, Class-8, School - Swami atmanand Sheikh Gaffar government English medium School Tarbhar

मैं स्वामी आत्मानंद शासकीय इंग्लिश मीडियम स्कूल तारबहार में पढ़ता हूं. यह बहुत अच्छा स्कूल है, यहां बुनियादी ढांचा और पढ़ाई दोनों बहुत अच्छी हैं, यहां कक्षा 1 से 12 तक के छात्र शिक्षा प्राप्त करते हैं. मेरा स्कूल बिलासपुर का अच्छा स्कूल माना जाता है. यहां हमें न केवल पारंपरिक तरीके से शिक्षा मिलती है, बल्कि हाई टीच एजुकेशन भी मिलती है. इसका मतलब है कि आधुनिक चलन का पालन करते हुए हम सभी छात्र यहां प्रौद्योगिकी आधारित शिक्षा प्राप्त करते हैं, हम न केवल अपने पाठ्यक्रम का ज्ञान प्राप्त करते हैं, बल्कि प्रौद्योगिकी का भी ज्ञान प्राप्त करते हैं, इस प्रकार हम कह सकते हैं कि यहां हम अपने भविष्य में आने वाली किसी भी चुनौती का सामना करने में सक्षम हो रहे हैं.

मेरा स्कूल बहुत विशाल है, सभी कक्षाओं के लिए बहुत सारे कमरे हैं, दो इंटरेक्टिव बोर्ड हैं जिनके माध्यम से हम अपनी पढ़ाई बहुत दिलचस्प तरीके से कर रहे हैं, हमारे अभ्यास और कुशल बनाने के लिए बहुत सारे कंप्यूटर हैं.

वहाँ एक बड़ा खेल का मैदान है जहाँ हम खेल, खेल, स्काउट और गाइड आदि जैसी कई पाठ्यचर्या संबंधी गतिविधियाँ करते हैं, इस प्रकार हम कह सकते हैं कि यह विद्यालय छात्रों के केंद्र में समग्र रूप से विकसित है. मुझे अपना स्कूल बहुत पसंद है और मैं उससे बहुत प्यार करता हूँ

*****

भारतीय संस्कार

रचनाकार- किशन सनमुखदास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र

भारतीय संस्कार
हमारे अनमोल मोती है
प्रतितिदिन मातापिता के पावन
चरणस्पर्श से शुरुआत होती है

अनेकता में एकता
हमारी शैली है
प्राकृतिक संपदा से
भरपूर हरियाली है

उसके बाद वंदन कर
गुरु को नमन करते हैं
बड़ों की सेवा में हम भारतीय
हमेशा स्वतः संज्ञान सेआगे रहते हैं

श्रावण कुमार गुरु गोविंद सिंह
महाराणा प्रताप वीर शिवाजी
अनेकों योद्धाओं बलवीरों
महावीरों की मां भारती है

हम भारतवासी संयुक्त परिवार की
प्रथा श्रद्धा से कायम रखे हैं
अतिथियों को देव तुल्य मानकर
भरपूर भाव से सेवा करते हैं

सबको प्यार का मीठा प्यारा माता पिता
राष्ट्र की सेवा कापाठ पढ़ाते हैं
हम अपनी संस्कृति से
प्राणों से अधिक प्यार करते हैं

*****

राष्ट्रीय शिक्षा नीति को गंभीरता से अमल में लाना है

रचनाकार- किशन सनमुखदास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र

राष्ट्रीय शिक्षा नीति को शिक्षकों प्रशासकों
ने गंभीरता से अमल में लाना है
शिक्षा क्षेत्र में भारत को
विश्वगुरु बनाना है

भारतीय युवाओं में प्रतिभा की कोई कमी नहीं
बस गंभीरता से उसे पहचानना है
शिक्षण को स्वांदात्मक बहुआयामी
आनंदमयी अनुभव बनाना है

छात्रों में मूल्यों को विकसित करने शिक्षकों
की महत्वपूर्ण भूमिका रेखांकित करनाहै छात्रों के
आचरण को सुधारने विपरीत परिस्थितियों
का सामना करने आत्मविश्वास जगाना है

भारत को मजबूत स्थिर शांतिपूर्ण देश
के रूप में विकसित करना है
शिक्षा क्षेत्र में भारत को
विश्वगुरु बनाना है

*****

युवाओं में एक मंत्र की अति ज़रूरत है

रचनाकार- किशन सनमुखदास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र

साझा करना और देख़भाल करना
भारतीय दर्शन के मूल तत्व हैं
भारतीय संस्कृति में इनका महत्व है
युवाओं में इस मंत्र की अति ज़रूरत है

साझा करने से समस्या का हल निकलता है
मन का बोझ हल्का होता है
साझा करने की प्रवृत्ति में सरलता है
ख़ुदकुशी के बचाव में मिलती सफ़लता है

ख़ुद परिवार और बुजुर्गों की
देख़भाल करना भी अत्यंत ज़रूरी है
डिजिटल उपकरणों में दिनभर खोए रहना
रिश्तो में होती असहनीय दूरी है

साझा करना देखभाल करना
दोनों बहुत जीवन में ज़रूरी है
दोनों से रचनात्मकता और मौलिक सोच
भारतीय संस्कृति कूट-कूट कर भरी है

*****

मित्र हमारे

रचनाकार- गौरीशंकर वैश्य विनम्र, लखनऊ

मित्र हमारे लिए जरूरी
आवश्यकताएँ करते पूरी.

अंजू, राज, सुमन, राजीव
प्यारे-प्यारे मित्र अतीव.

मित्र सदा देते हैं साथ
हम सब चलें मिलाकर हाथ.

एक-दूजे की सुनते बात
नहीं किसी सँग करते घात.

किसी से कोई झूठ न बोले
व्यर्थ न कोई मोबाइल खोले.

खेलें खेल, करें हम मस्ती
हँसी-मजाक न करते सस्ती.

हम सब करते खूब पढ़ाई
सबसे मिलती स्नेह-बड़ाई.

घर में जब जन्मतिथि मनाते
मित्रों को सप्रेम बुलाते.

*****

मुस्कान में मिठास की पर छाई

रचनाकार- किशन सनमुखदास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र

मुस्कान में पराए भी अपने होते हैं
अटके काम पल भर में पूरे होते हैं
सुखी काया की नींव होते हैं
मानवता का प्रतीक होते हैं

स्वभाव की यह सच्ची कमाई है
इस कला में अंधकारों में भी
भरपूर खुशहाली छाई है
मुस्कान में मिठास की परछाई है

मुस्कान उस कला का नाम है
भरपूर खुशबू फैलाना उसका काम है
अपने स्वभाव में ढाल के देखो
फिर तुम्हारा नाम ही नाम है

मीठी जुबान का ऐसा कमाल है
कड़वा बोलने वाले का शहद भी नहीं बिकता
मीठा बोलने वाले की
मिर्ची भी बिक जाती है

*****

राही

रचनाकार- प्रिया देवांगन "प्रियू", गरियाबंद

आगे बढ़ते जाना
राह दिखे काँटे
मत वापस तुम आना.

हँस के जीना होगा
जन्म लिए गर तो
विष भी पीना होगा.

आँखों में हो सपने
साथ नहीं देते
छल करते हैं अपने.

कल की छोड़ो बातें
त्याग चलो चिंता
मधुरम होंगी रातें.

मिलना तुमको माटी
कर्म करो ऐसा
याद रहें परिपाटी.

*****

बलिदानी वीर नारायण सिंह

रचनाकार- डिजेन्द्र कुर्रे "कोहिनूर", बसना, महासमुंद

चिन्हारी जे वीर पुरुष हे,भरे कटोरा धान के.
वीर नारायण ले पबरित हे, भुइँया सोनाखान के.
वीर नारायण के जिनगी म,अइसे दिन भी बीते हे.
एक अकेला अंग्रेजी शासन से,लड़ के जीते हे.
जब अकाल के बेरा आईस,जन-जन तरसीन दाना ल.
धरम करम बर ये ही धरमी,लुटे रहिस खजाना ल.
घोड़ा म चढ़के जाएँ, बलिदानी सीना तान के.
वीर नारायण ले पबरित हे, भुइँया सोनाखान के.

बज्र बरोबर तन के बलिदानी,जब भुइँया नापे.
सेट महाजन अउ अँग्रेजी,शासन थर-थर काँपे.
जेहर आघु म आ जाये,अपन प्राण गवाएं.
मेंछा म दे ताव वीर जब,जब तलवार चलाये.
आज वहीं बलिदानी दे,आदर्श हमर अभिमान के.
वीर नारायण ले पबरित हे, भुइँया सोनाखान के.

*****

आजादी का अमृत महोत्सव

रचनाकार- डिजेन्द्र कुर्रे "कोहिनूर", बसना, महासमुंद

आजादी का अमृत महोत्सव,भारत भू महकाएगा.
सबके घर में आज तिरंगा,लहर-लहर लहराएगा.

शौर्य दिखाया खूब रणों में,बरछी भाला तीरों ने.
प्राणों की बलिदानी देकर,आजादी दी वीरों ने.
भारत भू में हर बालक को,स्वभिमान ही प्यारा है.
इसलिए प्राणों से प्यारा, पुण्य त्रिरँग हमारा है.
शांति त्याग का,हरियाली का,सबमें भाव जगाएगा.
सबके घर में आज तिरंगा,लहर-लहर लहराएगा.

मुकुट हिमालय की चोटी है,सागर पाँव पखारा है.
गुरुताई में इस भारत से,पूर्ण जगत ही हारा है.
धर्म सनातन अमर हमारा,पावन हर परिपाटी है.
जिसको हम जननी कहते है,चंदन जैसी माटी है.
सीमा पर जो वीर खड़ा वह,अरिदल मार भगाएगा.
सबके घर में आज तिरंगा,लहर-लहर लहराएगा.

*****

हम भारत के वासी

रचनाकार- डिजेन्द्र कुर्रे "कोहिनूर", बसना, महासमुंद

जन्म लिए जिस पुण्य धरा पर,
इस जग में जो न्यारा है.
हम भारत के वासी हम तो,
कण -कण इसका प्यारा है.

देश वासियों चलो देश का,
हमको मान बढ़ाना हैं.
दया-धरम सदभाव प्रेम से,
सबको गले लगाना हैं.
द्वेष-कपट को त्याग हृदय से,
सुरभित सुख के हेम रहे.
हिन्दू मुस्लिम,सिख-ईसाई,
सब में अनुपम प्रेम रहे.
मुनियों के पावन विधान ने,
जग को सदा सुधारा है.
हम भारत के वासी हम तो,
कण - कण इसका प्यारा है.

आधुनिक इस दौर में मानव,
पग - पग आगे बढ़ता हैं.
जो रखता है शुभ विचार निज,

कीर्तिमान नव गढ़ता हैं.
भले भिन्न बोली-भाषा है,
फिर भी हम सब एक रहे.
सदियों से भारत वालों के,
कर्म सभी शुभ-नेक रहे.
जिस धरती पर प्रीति-रीति की,
बहती गंगा-धारा है.
हम भारत के वासी हम तो,
कण - कण इसका प्यारा है.

जहाँ वीर सीमा पर अपनी,
पौरुष नित दिखलाते हैं.
समय पड़े तो निज प्राणों को,
न्यौछावर कर जाते हैं.
नहीं डरे हम कभी किसी से,
गर्वित चौड़ी-छाती है.
जहाँ वीर-गाथा यश गूंजे,
भारत भू की थाती है.
अरिदल को अपने वीरों ने,
सीमा पर ललकारा है.
हम भारत के वासी हम तो,
कण-कण इसका प्यारा है.

*****

छत्तीसगढ़ महतारी

रचनाकार- लोकेश्वरी कश्यप, मुंगेली

खनीज सम्पदा से भरपूर,
नदियां फैली बहती दूर -दूर.
यहाँ की हर चीज बहुत मशहूर,
यहाँ का हर बच्चा वीर सपूत.

बांस, तांबा, टिन,लोहा,कोयला,
खनीजों की कमी नहीं यहाँ.
रीति रिवाज़, बोली -भाषा, पकवान,
बढ़ाते है सब छत्तीसगढ़ का मान.

महामाया, दंतेश्वरी,डोंगड़गढ़, बंलेश्वरी,
माता सती के शक्तिपीठ है कई.
प्राकृतिक सुंदरता से भरपूर,
सुन्दर पर्यटन स्थल है मशहूर कई.

सोम,वाकाटक,फणी नागवंशियों का शासन
प्राचीन जन जातियों का निवास यहाँ.

माता कौशल्या की यह जन्मभूमि,
पंचवटी में श्री राम ने भी किया निवास यहाँ.

बस्तर के शिल्प विदेशो तक प्रसिद्ध,
राजिम छत्तीसगढ़ का प्रयाग कहलाता.
यहाँ का जनमानस है भोला - भाला,
भोरमदेव छत्तीसगढ़ का खजुराहो कहलाता.

कल कल छल छल करती बहती,
अरपा, पैरी , सोंढुर, इद्रावती, महानदी.
सब कहते छत्तीसगढ़ धान का कटोरा,
उपजाऊ है हमारी छत्तीसगढ़ महतारी.

*****

मेरी मुस्कान, मेरी पहचान है

रचनाकार- कु.भारती साहू 'धड़कन', करेली बड़ी मगरलोड, जिला धमतरी

गम का आना -जाना है,
गम को मुझे मिटाना है.
जिंदगी जीना आसान है,
मेरी मुस्कान, मेरी पहचान है.

मेरी जान बन गए हो तुम,
मेरी पहचान बन गए हो तुम.
आने वाला बड़ा तूफान हैं,
मेरी मुस्कान, मेरी पहचान है.

मुझको बचाने वाला तू फरिश्ता है,
अब तुझसे मेरा एक नया रिश्ता है.
मेरे लिए सचमुच में तू भगवान हैं,
मेरी मुस्कान,मेरी पहचान है.

देश के लिए मुझे लड़ना है,
संघर्ष लिए आगे बढ़ना है.
मुझको भी देना बलिदान है,
मेरी मुस्कान, मेरी पहचान है.

सभी चलेंगे एक दिन साथ,
एक दूजे के हाथो में लेकर हाथ.
गर्व होगा सबको ये हिंदुस्तान हैं,
मेरी मुस्कान, मेरी पहचान है.

*****

विश्व गुरु बनेगा भारत

रचनाकार- रेश्मा साहू 'झाँसी', कक्षा 12 वीं, शा उ मा वि करेली बड़ी, मगरलोड जिला धमतरी

एक नया सूरज उगाकर
लोगों को जगाकर
नया इतिहास रचेगा भारत
विश्व गुरु बनेगा भारत

एकता की अलख जगाकर
हर धर्म को एकजुट लाकर
हम एक खून है कहेगा भारत
विश्व गुरु बनेगा भारत

भूखे को खाना खिलाकर
ऊँच नीच का भेद मिटाकर
हमेशा अमर रहेगा भारत
विश्व गुरु बनेगा भारत

धर्म भले यहाॅं अनेक है
लेकिन हम सब एक है
हर दिल में बसेगा भारत
विश्व गुरु बनेगा भारत

विश्व को परिवार बनाकर
एकता का दीप जलाकर

सबके साथ चलेगा भारत
विश्व गुरु बनेगा भारत

हौसलों की उड़ान भरों
आस्माँ में परवाज़ करों
सारे जग को कहेगा भारत
विश्व गुरु बनेगा भारत

*****

सबसे प्यारे मेरे पापा

रचनाकार- साक्षी सेन, कक्षा आठवीं, शा उ मा वि करेली बड़ी जिला धमतरी

सबसे प्यारे मेरे पापा.
सबसे न्यारे मेरे पापा.
सबकी सुनते मेरे पापा.
सबसे भोले मेरे पापा.
मेरे पापा मेरे पापा.

सब कुछ दिखाते मेरे पापा.
सब कुछ सिखाते मेरे पापा.
खूब तोहफा दिलाते मेरे पापा.
मेरे पापा मेरे पापा.

सबको हंसाते मेरे पाप.
सबको खिलाते मेरे पापा.
सबको दुलारते मेरे पापा.
मेरे पापा मेरे पापा.

सबसे अच्छे मेरे पापा.
भूखे रह मुझे खिलाते मेरे पापा.
मेरे पापा मेरे पापा.

*****

आगे बढ़ना है मुझे

रचनाकार- कु. पेमेश्वरी निषाद, कक्षा 12वीं

कामयाबी की ऊँचाई पे चढ़ना है मुझे,
हिंसा के खिलाफ लड़ना है मुझे.
मेहनत और लगन से पढ़ना है मुझे,
वक्त से आगे बढ़ना है मुझे.

समय से पहले कुछ करना है मुझे,
इसी देश, इसी गाँव में रहना है मुझे.
जीत के आगे अड़ना है मुझे,
वक्त से आगे बढ़ना है मुझे.

सोने से पहले जगना है मुझे,
दौड़ने से पहले दौड़ना है मुझे.
उड़ाने से पहले उड़ना है मुझे,
वक्त से आगे बढ़ना है मुझे.

गिरते - गिरते संभलना है मुझे,
हक के लिए झगड़ना है मुझे.
सच्चाई का हाथ पकड़ना है मुझे,
वक्त से आगे बढ़ना है मुझे.

*****

वो बचपन

रचनाकार- कु. डोमेश्वरी साहू, कक्षा 12वीं, शा उ मा वि करेली बड़ी, मगरलोड जिला धमतरी

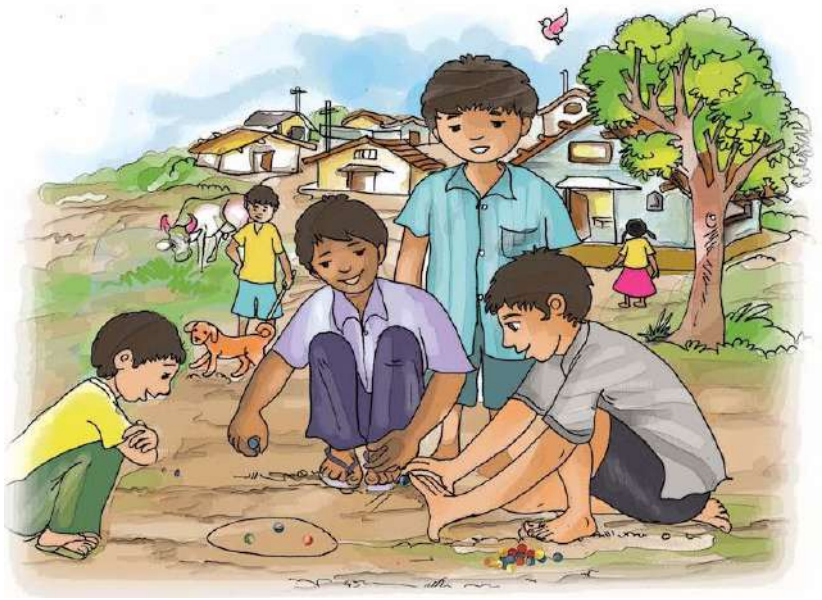

वो बचपन कितना सुहाना था,
जहाँ पापा के कंधों का सहारा था.
कभी माँ के आँचल में छुप जाना था,
जिसका रोज़ का फ़साना था,
वो बचपन कितना सुहाना था.

कभी-कभी रूठ जाने पर
वो पापा का मनाना था,
मम्मी की प्यारी प्यारी हाथों से
भर पेट खाना खाना था.
जिसके लिए करना पड़ता खूब बहाना था,
वो बचपन कितना सुहाना था.

जब डांट पड़ती पापा से
दौड़कर मम्मी के पास जाना था
चोट लगती खेलते खेलते
तो रोते हुए चिल्लाना था.
तभी दौड़ती हुई मम्मी का

हमारे पास आना था,
वो बचपन कितना सुहाना था.

गोद में उठाकर लाड लगाना था,
आते जब पापा काम से
पापा. पापा बुलाना था.
खाने को नही लाते कुछ तो

खूब रूठ जाना था,
वो बचपन कितना सुहाना था.

*****

मेरी दिवाली

रचनाकार- कु. नुमिता साहू, 12 वीं (आर्टस), शा उ मा वि करेली बड़ी मगरलोड, जिला धमतरी

धनतेरस का था खूब इन्तजार,
चौदस ने लायी बहार.
मैं सबका हाल-चाल पूछती थी,
मेरी दिवाली कुछ ऐसी थी.

त्यौहार में मिले नया उपहार,
जुए में गए धन हार.
त्यौहार के बारे में सोचती रहती थी,
मेरी दिवाली कुछ ऐसी थी.

इस दिवाली बनाए नए पकवान,
कलश के लिए लाए धान.
मैं सबको दिवाली विस करती थी,
मेरी दिवाली कुछ ऐसी थी,,

फटाकों का खूब शोर था,
चहल-पहल चारो ओर था,
हर घर रौशनी रहती थी,
मेरी दिवाली कुछ ऐसी थी.

हर मुहल्ले घूम कर आये थे,
सब के चेहरे पर खुशी लाए थे.
सब मुस्कुराती रहती थी,
मेरी दिवाली कुछ ऐसी थी.

पापा से फटाके मंगवाई थी,
मम्मी से कपड़े खरीदवायी थी.
कलशे को सजाती रहती थी,
मेरी दिवाली कुछ ऐसी थी.

ग्रहण में न कुछ कर सकते थे,
सोच कर मन भरते रहते थे.
मेरी सहेली मुझे याद करती थी,
मेरी दिवाली कुछ ऐसी थी.

*****

माँ तू जन्नत है

रचनाकार- कु. परमेश्वरी साहू, कक्षा 12वीं (आर्ट्स) शा उ मा वि करेली बड़ी मगरलोड जिला धमतरी

माँ है आरमाँ तारे हैं हम,
माँ के राजदुलारे हैं हम.
तू पास रहे मेरी मन्नत है,
माँ तू मेरी जन्नत है.

उदास कभी रहने न देती,
आँसू कभी बहने न देती.
तू रब, तू ही इबादत है,
माँ तू मेरी जन्नत है.

लोरी गा कर सुलाती हो माँ,
मुझको सीने से लगाती हो माँ.
कितनी अच्छी तेरी आदत है,
माँ तू मेरी जन्नत है.

करती है तू हमसे प्यार,
तुझसे है हमारा संसार.
तुझसे सीखा शराफत है,
माँ तू मेरी जन्नत है.

प्यार से हमें सहलाती हो,
प्यार से हमें नहलाती हो.
सच कहू तू मेरी हिम्मत है,
माँ तू मेरी जन्नत है.

*****

अपने जन्मदिन पर

रचनाकार- कु. अनिता राव 'मासूम', कक्षा-12 वीं (साइंस) शा उ मा वि करेली बड़ी मगरलोड जिला धमतरी

मैं घी के दीप जलाऊँगी मेरे जन्मदिन पर,
मैं दो-दो पेड़ लगाऊँगी मेरे जन्मदिन पर.
केक शायद मुझे इतना पसंद नहीं है,
गाजर का हलवा बनवाऊँगी मेरे जन्मदिन पर.

मैं कोई किताब लाऊँगी मेरे जन्मदिन पर,
मैं खुद को कहीं ले जाऊँगी मेरे जन्मदिन पर.
मैं वही पुराने कपड़े पहन लूँगी भले,
गरीबों को कपड़े दिलवाऊँगी मेरे जन्मदिन पर.

मैं अक्षर ज्ञान कराऊँगी मेरे जन्मदिन पर,
मैं नेकी की दीवार बनाऊँगी मेरे जन्मदिन पर.
पार्टी का तो मुझको पता नहीं है पर,
यज्ञ हवन करवाऊँगी मेरे जन्मदिन पर.

मैं बुजुर्गों को फोन लगाऊँगी मेरे जन्मदिन पर,
मैं आशीर्वाद खूब पाऊँगी मेरे जन्मदिन पर.
काम के सिलसिले में अक्सर बाहर रहती हूँ,
मैं घर में समय बिताऊँगी मेरे जन्मदिन पर.

*****

आज की युवा पीढ़ी

रचनाकार- कु. गीतांजलि भारती, कक्षा 12वीं आर्टस, शास उच्च मा वि करेली बड़ी मगरलोड जिला धमतरी

क्या हो गया है हमारे देश
की युवा पीढ़ी को
नशे की लत में युवा पीढ़ी
पागल हो रही है
छोटे छोटे बच्चे छुपाकर
पीने लगे है सिगरेट
जिसके हाथों में चिप्स होता था
आज उसी हाथों में है
सिगरेट का बंडल
सिगरेट की धुँआ
गांजे की लत ने
माँ बाप के सपनों को
चकनाचूर कर रहे हैं.
बेमतलब बुला रहें
अपनी मौत को
ये मेरे भारत के युवाओं
अब तो ऑखे गोलों जागो.

*****

सुनों साथियों

रचनाकार- कु. लिलम बघेल, कक्षा 10 वीं, शास उच्च मा वि करेली बड़ी मगरलोड जिला धमतरी

सुनों साथियों मित्रता हो ऐसी
कृष्णा और सुदामा जैसी

सुनों साथियों प्रेम हो ऐसा
मीरा का कान्हा के प्रति जैसा

सुनों साथियों ज्ञानी हो ऐसा
दशानन्द रावण के जैसा

सुनों साथियों भक्त हो ऐसा
राजकुमार प्रहलाद के जैसा

सुनों साथियों पुत्र हो ऐसा
राजकुमार श्रवण के कैसा

सुनों साथियो वीरांगना हो ऐसी
मणिकर्णिका रानी लक्ष्मी बाई जैसी

सुनों साथियों वचन निभाओ ऐसा
मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम के जैसा

सुनों साथियों युवा नेता हो ऐसा
स्वामी विवेकानन्द जी के जैसा

सुनों साथियों स्वामी भक्त हो ऐसा
महाबली हनुमंत के जैसा

सुनो साथियों पत्नि हो ऐसी
सत्यवान की पत्नि सावित्री जैसी

सुनों साथियों युवा ही ऐसा
पंजाब के शेर भगत सिंह जैसा

*****

चेहरे में क्या रखा है

रचनाकार- अशोक पटेल"आशु", तुस्मा,शिवरीनारायण

चेहरे में क्या रखा है
मन को सँवार के तो देख.
लिबास में क्या रखा है
सोंच को निखार के तो देख.

इंसान में क्या रखा है
इंसानियत दिखा के तो देख.
नफरत में क्या रखा है
मोहब्बत जता के तो देख.

ईर्ष्या द्वेष में क्या रखा है
प्यार का पैगाम देके तो देख.
तेरे गुरुर में क्या रखा है
दिल से दिल मिला के तो देख.

जिंदगी में क्या रखा है
इसके मायने समझ के तो देख.
लोंगों के भीड़ में क्या रखा है
भीड़ मे पहचान बना के तो देख.

दुनिया के मंजर में क्या रखा है
मंजर को जन्नत बना के तो देख.
खुशी की चाहत में क्या रखा है
किसी को खुशयां बांट के तो देख.

*****

आओ आओ ऐ युवा शक्ति

रचनाकार- अशोक पटेल" आशु", तुस्मा,शिवरीनारायन

आओ-आओ ऐ युवा शक्ति
तुझको है माँ पुकारती.
कर दो तन-मन अर्पित अपना
चाहती यही माँ भारती.
आओ-आओ ऐ युवा शक्ति

सौगन्ध खाएँ तेरी माँ भारती
तेरा सर न कभी झुकने देंगे.
मस्तक तेरा नित ऊँचा रहे
ये सौगन्ध न कभी टूटने देंगे.
आओ-आओ ऐ युवा शक्ति

प्राचीन भारत में जो गौरव था
वह हरदम सलामत रहे.
विश्व गुरु का जो दर्जा था
वह ऊंचा तेरा स्थान रहे.
आओ-आओ ऐ युवा शक्ति

ज्ञान-धर्म-जोतिष-की भक्ति

का तूने ही तो पाठ पढ़ाया है.
धर्म-पथ से जो भटके थे
उनको भी तो राह दिखाया है.
आओ-आओ ऐ युवा शक्ति

तेरी मिट्टी पावन-धरती से
हमे सदा अभिमान रहे.
तनमन मेंरा तुझको अर्पित
तुझसे मेरा स्वाभिमान रहे.
आओ-आओ ऐ युवा शक्ति

तीन रंग का तेरा तिरंगा
फहराए जग में मान रहे.
तेरी महिमा कोई न भूले
विश्व मे तेरा पहचान रहे.
आओ-आओ ऐ युवा शक्ति

केशरिया चोला है अद्भुत
त्याग-तपस्या से भान रहे.
सादा-उजला तेरा अनुपम
हरियाली का तू खान रहे.
आओ-आओ ऐ युवा शक्ति

*****

गाँव-हर शहर होत जात हे

रचनाकार- अशोक पटेल"आशु", तुस्मा,शिवरीनारायण

गाँव-हर शहर होत जात हे
गाँव-गली-गली, नंदावत हे
खोर-गली, हर सांकुर होगे
रद्दा- डहर, हर चपलात हे.

सिरमेंट के रद्दा ल बनात हे
बालू-कुधरालू ह नंदावत हे
उबड़-खाबड़, रद्दा हर होगे
रेंगे घलो, म गोड़ जनात हे.

पहटिया ह अब नई आत हे
कुहकी- टेर अब नंदावत हे
गो-धुली, बेरा ह नोहर होगे
गाय-गरु अब नई रंभात हे.

खोर-मुहटा ह नई लिपात हे
छरा-छिटका हर, नंदावत हे
गाय-गोबर हर ,अब लुकागे
घर-अंगना नई महमहात हे.

चरागन-परिया, ह सिरात हे
धरसा-पैडगरी ह, नंदावत हे
बखरी-बारी सब भुलावत हे
टेड़ा-पाटी, नई चरचरात हे.

नांगर-बईला ह नई फंदात हे
जुड़ा-जोतावर ह, नंदावत हे
नवा उदिम म ही मोहावत हे
ददरिया तान नई सुनावत हे.

*****

राखी का त्यौहार

रचनाकार- गरिमा बरेठ, कक्षा - आठवीं, स्वामी आत्मानंद शेख गफ्फार अंग्रेजी माध्यम शाला
तारबहार बिलासपुर

राखी का त्यौहार,
जैसे भाई - बहन का प्यार.

सावन के महिने में है आता यह त्यौहार,
परिवार के लिए यह खुशियां लाता बार -बार.

रंग - बिरंगे धागों से है आती राखी,
भाई-बहन के प्यार को है दर्शाती राखी,

बहनों की रक्षा करते हैं,
यह अहसास दिलाती हैं राखी.

सारे जगो से अच्छा होता है,
भाई - बहन का प्यार.

कहने का मन है करता बार - बार,
आ गया है फिर से राखी का त्यौहार.

*****

किलोल' पत्रिका

रचनाकार- गौरीशंकर वैश्य विनम्र, लखनऊ

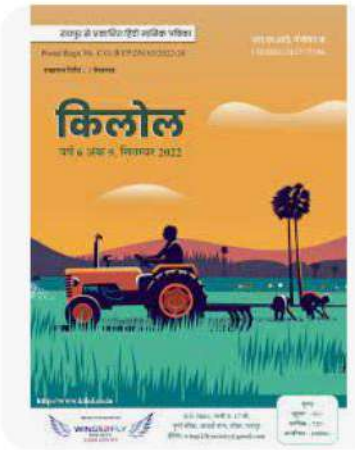

मिला 'किलोल' का अंक अगस्त
पढ़कर लगा बड़ा ही मस्त

कविताओं ने किया विभोर
वर्षा में नाचा मन मोर

धन्य - धन्य तुलेंद्र यशस्वी
स्वामी आत्मानंद यशस्वी

'बंदर और खरगोश 'कहानी
देती सीख ज्यों दादी - नानी

'गुरु का महत्व' है सुंदर लेख
सिर झुक जाता गुरु को देख

'चित्र देख कर, लिखो कहानी'
लगती प्रस्तुति बहुत सुहानी

बच्चों की मोहक चित्रकारी
अतिशय लगती प्यारी - न्यारी

'भाखा जनऊला' शब्द पहेली
हम सबकी है सखी - सहेली

' किलोल' पत्रिका रंगबिरंगी
बच्चों की प्रिय साथी - संगी

' किलोल' पत्रिका ज्यों ही आती
पाठकगण को खूब लुभाती

*****

बारिश आई

रचनाकार- कन्हैया साहू 'अमित', भाटापारा

बारिश आई, बारिश आई,
गरमी की तय हुई विदाई.

बूँदों की सुन मीठी सरगम,
मन करता मैं नाचूँ छमछम.
पुरवाई बहती है मध्यम,
बिजली रानी धूम मचाई.
बारिश आई, बारिश आई.

कोई लेकर चलता छाता,
कोई बारिश बीच नहाता.
कोई गर्म पकौड़े खाता,
लगता जैसे नव तरुणाई.
बारिश आई, बारिश आई.

बेल, लता, कानन इतराते,
निर्मल जल बादल बरसाते.
जीव, जगत, जन जीवन पाते,
लगता जैसे मस्ती छाई.
बारिश आई, बारिश आई.

स्कूल बलावत हे

रचनाकार- कन्हैया साहू 'अमित', भाटापारा

टन-टन घंटी बाजत हे. चल-चल, स्कूल बलावत हे.
पढ़ई-लिखई जिनगी हे. सार बात समझावत हे.

टाँग पीठ मा बस्ता, नइ हे दुरिहा रस्ता.
खाँध जोर सँगवारी, चलव स्कूल सरकारी.
भरती तिहार चलत हवय, सबके नाव लिखावत हे.
टन-टन घंटी बाजत हे. चल-चल, स्कूल बलावत हे.

कापी, किताब मिलही , नवा ड्रेस, तन खिलही.
तात भात सब खाहू, खेले कूदे पाहू.
नइ लागय पइसा-कौड़ी, सरकार ह समझावत हे.
टन-टन घंटी बाजत हे. चल-चल, स्कूल बलावत हे.

मुस्कान लाइब्रेरी, कविता, कहिनी ढेरी.
जतके जादा पढ़हू, वतके आगू पढ़हू.
लीपे-पोते विद्यालय, मन ला गजब लुहावत हे.
टन-टन घंटी बाजत हे. चल-चल, स्कूल बलावत हे.
पढ़ई-लिखई जिनगी हे. सार बात समझावत हे.

आई फ्लू

रचनाकार- कु.कशिश पाल, कक्षा 12 वीं (कृषि), शा उ मा वि करेली बड़ी मगरलोड, जिला धमतरी

आँखों में लालिमा पन सा छाया हुआ है
ना जाने क्या ये आई फ्लू आया हुआ है

कोरोना के बाद यही छाया हुआ है
देखो क्या आई फ्लू आया हुआ है

मास्क लगाने के दिन चले गए अब
चश्मा लगाने का दिन आया हुआ है

आई फ्लू ने कहर ऑंखों पर ढाया हुआ है
आँखों में लालिमापन छाया हुआ है।

जो करते थे नज़र से नज़र की बातें
अब ऑंख मिलाने से कतराया हुआ है

ये आई फ्लू ने अपना रंग दिखाया हुआ है
गाँव शहर में दहशत छाया हुआ है

*****

सूरज

रचनाकार- जितेन्द्र सुकुमार 'साहिर', 'एकांत विला' राजिम पदमा तालाब थाना पारा राजिम

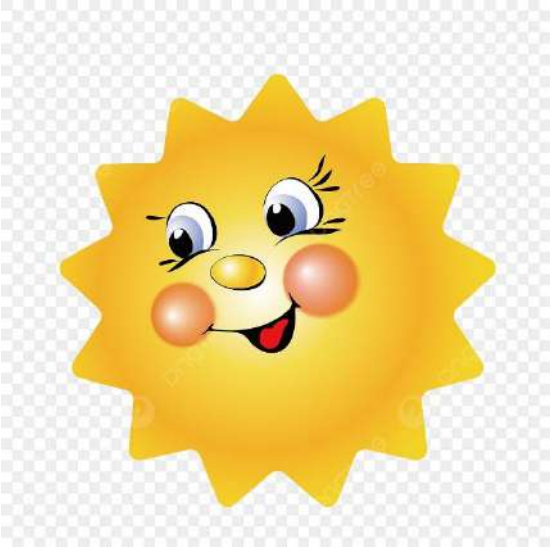

पूरब से रोज निकलता सूरज
दक्षिण में जा ढ़लता सूरज

साथ समय के चलता सूरज
हरदम आगे बढ़ता सूरज

गर्मी के मौसम में हमने
देखा आग उगलता सूरज

बारिश का जब मौसम आये
रंग अपना बदलता सूरज

अँधियारा हरने के लिए ही
खुद में ही तो जलता सूरज

सर्दी के मौसम में 'साहिर'
तप से अपने पिघलता सूरज

*****

एन एस एस

रचनाकार- जितेंद्र सुकुमार 'साहिर', NSS सहायक कार्यक्रम अधिकारी, शा उ मा वि करेली बड़ी मगरलोड, जिला धमतरी

दिल के जज़्बात जगाता है एन एस एस.
भटके को राह दिखाता है एन एस एस.

हम क्या हम कौन हमारी ताकत क्या है?
इसका अहसास कराता है एन एस एस.

हर मौसम हर आलम में जी लेने के
हमको अंदाज़ सिखाता है एन एस एस.

करुणा का भरकर के सागर हर मन में
सेवा का भाव जगाता है एन एस एस.

साथ रहें और करें मिलकर काम सभी
हमको यह पाठ पढ़ाता है एन एस एस.

*****

मैं अपनी जिंदगी महकाउँगी

रचनाकार- कु. तारणी साहू, कक्षा 11 वीं (कृषि), शा उ मा वि करेली बड़ी मगरलोड, जिला धमतरी

हर मुस्किलों से लड़ कर दिखाऊंगी,
दुनिया में नया इतिहास बनाऊंगी.

मैं अपनी जिंदगी शिक्षा से सजाऊँगी,
मैं सबकी आदर्श बनकर दिखाऊँगी.

मैं अपना नया भारत सजाऊँगी,
मैं जहाँ चलूँ नई राह बनाऊँगी.

अपने भीतर के हौसले को जगाऊंगी,
एक बार वक़्त को भी अजमांऊँगी.

मैं जहाँ में नया कुछ कर दिखाऊंगी,
मैं इस बेरंग जिंदगी में रंग लाऊंगी.

मैं अपनी जिंदगी को महकाऊँगी,
मंजिल की तलाश में निकल जाऊँगी.

*****

मैं भारत की मिट्टी हूँ

रचनाकार- कु. वंदना सेन, कक्षा 11 वीं (विज्ञान संकाय), शा उ मा वि करेली बड़ी मगरलोड, जिला धमतरी

हमारे देश की प्यारी मिट्टी
लिखती है खिलखिलाती चिट्ठी
मै हँसती हूँ, कभी रोती हूँ
मैं भारत की मिट्टी हूँ.

मुझसे बनते है हजारों खिलौने
मुझसे ही गर्मी के दिनों में मटके बने
मैं भी तो प्रकृति की पहचान हूँ
मैं भारत की मिट्टी हूँ.

लोग चलाते है मुझ पर बाण
कड़वी दवाईयाँ डालते
मुझ पर इंसान
इस सबसे बहुत प्रभावित होती हूँ
मैं भारत की मिट्टी हूँ.

मुझसे ही पृथ्वी की ढाल है बनी
मुझसे ही पेड़-पौधों का जीवन है सभी
रात-दिन पेड़ कटते देखकर मैं रोती हूँ
मै भारत की मिट्टी हूँ.

प्रदुषण ने मुझको रुलाया है
खनन ने मुझको हटाया है
पर्यावरण को सताया है
मैं कुछ नही कह पाती हूँ
मैं भारत की मिट्टी हूँ.

किसानों की हूँ मैं बड़ी पहचान.
मुझको मानते है वे भगवान.
फसलें लहराते देख झूम उठती हूँ.
मैं भारत की मिट्टी हूँ.

मेरे लिए लड़ जाती है देश की नारी.
शहीद हो जाते है वीर सैनानी.
मैं सभी के लिए बहुत ही किमती हूँ.
मैं भारत की मिट्टी हूँ.

मानते हैं लोग मुझे धरती माता.
पेड़ - पौधे करते है मुझसे जीवन की आशा.
मैं इनका स्नेह देख बहुत खुश हो जाती हूँ.
मै भारत की मिट्टी हूँ.

मै तालाब का कीचड़ बन कमल उगाती.
पेड़ों की हिम्मत बढ़ा कर जंगल बनाती.
लोंगो के द्वारा भूमि पूजन से मुस्कुराती हूँ
मैं भारत की मिट्टी हूँ.

*****

IAS के अलावा

रचनाकार- कु. नम्रता राव, कक्षा 12 वीं (आर्ट्स), शा उ मा वि करेली बड़ी मगरलोड, जिला धमतरी

इतना खाली दिल है मेरा
जिसमें किसी का न होगा बसेरा
दिल भी बेचारा चुप चाप ठहरा
इसमें कभी उलझनों का बखेड़ा न होगा

अब सिर्फ IAS की बुलंदियों को छूना है.
इसमें कभी डर का न होगा डेरा
कड़ी मेहनत करके उस मुकाम में पहुँचना है
जहाँ कभी हार का न होगा अंधेरा

अपने देश का नाम ऊँचा करना है.
मेरे खून में कभी रिश्वत का न होगा बसेरा
बस इतना ही खाली दिल है मेरा
जिसमें IAS के अलावा किसी का न होगा बसेरा

किताबों का दरिया पार करना है
टेस्ट सीरीज के पहाड़ों से गुजरना है
IAS बनने के सपने देखने से ही सब कुछ नहीं होगा
हर दिन अपने कमजोरियों से लड़ना है

जब सब चैन से सोयेंगे, मुझे नींद को हराना है

बाकी मेरे हारने का इंतजार करेंगे
पर मुझे जुनून को जगाना है
और कोई अप्सन सोचने की जरूरत नहीं
मेरा लक्ष्य एक ही बस IAS बनके दिखाना है.

*****

रानी का रक्षाबंधन

रचनाकार- अशोक पटेल "आशु", तुस्मा,शिवरीनारायण

सावन की चौदस तिथि.बाजार में काफी चहल–पहल.चारों तरफ खूब शोरगुल,दुकानों में खूब रौनकता. बड़े–बड़े लट्टूओं को जगमगाया गया है.जिसकी इंद्रधनुषी रश्मियाँ आखों को सम्मोहित कर रही हैं. दुकानों में काफी भीड़ है. दरअसल राशाबंधन का पर्व जो आया है.लोग तरह–तरह की राखियाँ और मीठे–मीठे पकवान खरीद रहे हैं. दुकानों में–

भैया मेरे राखी के बंधन को निभाना.

स्वर लहरियां गूंज रही थी.ठीक ऐसे समय में दस साल की एक लड़की रानी राखी दुकान के पास पहुंचती है,चूंकि भीड़ बहुत थी.

इधर–उधर ताकती है.तभी उसको एक दुकान में भीड़ कम दिखी.

और फिर फुदकते हुए झट से वहाँ पहुंच जाती है.और फिर सारे राखियों को देखने के बाद उसकी नजर एक राखी में अटक जाती है.जिसमे लिखा हुआ था–

मेरे प्यारे भैया.

फूला न समाते हुए रानी ने बड़े प्यार से हाथ में उठाती है. और कहती है–

राखी वाले भैया यह राखी कितने की है ?

तब दुकान वाला कहता है–

पूरे–पूरे बीस रुपया!!

इतना सुनते ही रानी के पैरों तले जमीन खिसक जाती है.चूंकि उसके पास तो मात्र बीस रुपया है,और मिठाई भी तो खरीदनी है.और फिर क्या था,वह चुपके से उस राखी को वहीं रख के दुखी हो उल्टे पांव घर आ जाती है.

घर पहुंचकर सुसक–सुसक कर रोने लगती है.उसके बाबा पास आकर पूछते हैं–

क्या हुआ बेटा क्यों रो रही ?

रानी कहती है–

बाबा वो राखी.वो मिठाई.

बाबा पुनः पूछते हैं–

तो क्या नही मिली ?

फिर रानी और जोर से रोना शुरू कर देती है.

तब उसके बाबा उसको प्यार से वहाँ ले जाने के लिए कहते हैं जहाँ पर दुकान थी.

वहाँ जाकर उसके बाबा को समझ में आ गया और उसने बीस की राखी दस रुपए में देने के लिए दुकानदार से खूब गिड़गिड़ाया पर उसने साफ मना कर दिया.

तब तो रानी यह कहते हुए और जोर–जोर रोना शुरू कर दिया की आज वह अपने भाई को राखी नही बांध पाएगी.

इतना सुनने के बाद भी दुकानदार को रंच मात्र भी दया नही आई.

उल्टा नाराज होकर वहाँ से जाने के लिए कह दिया.तब उसके बाबा दुखी होकर कहते है– "ठीक है !ठीक है!चले जाते हैं! पर एक बात याद रखना किसी के आंसू,बेबसी,और गरीबी का मजाक कभी मत उड़ाना.इसके आंसु में भाई का प्रेम है,यह मात्र राखी नही है इसमें भाई बहन के अटूट प्रेम का बंधन है.जिसने आज तुमने तोड़ दिया.और वहाँ से रानी को समझाते हुए दुखी होकर चला आता है.

इधर जैसे ही घर वापस आया उसके घर के सामने एक चमचमाती कार खड़ी दिखी.रानी के बाबा सहम गए और सोचने लगे आखिर उनके घर में यह कौन आ गए.

जैसे–तैसे डरते हुए घर में प्रवेश किया.

जो सज्जन बैठे थे उनको देखकर चौंक गए."सेठ जी !सेठ जी !कहते हुए उसके चरणों में गिर गए.सेठ जी आप हमारे गरीब खाने में ?आपने मुझे बुला लिया होता न मैं स्वयं आपकी सेवा में हाजिर हो जाता."

तब सेठ जी कहते हैं–

अरे !नही–नही भाई !तुम तो मेरे घर रोज सेवा करने आते हो.आज रक्षाबंधन का पर्व है.इसलिए काम बंद है.आज मैं स्वयं तुम्हारे घर सेवा देने आ गया.तुम्हारे बच्चों के लिए कुछ सामान लाया हूं. और बाबा को थमा देते हैं.संकोच करते हुए थैली बाबा लेते है.

एक कोने में रानी गुमसुम उदास बैठी थी.

बाबा ने थैली को टटोल कर जैसे ही सामान को बाहर निकाला हथेली में जगमगाती हुई राखियाँ और मिठाइयाँ झाँकने लगी.

खुशी के मारे बाबा के मुंह से अचानक निकल गया–

राखी ! राखी !. मिठाइयाँ !

रानी ने जब यह सुना ,मुरझाया चेहरा फूलों की तरह खिल उठा.और राखी ! राखी !कहते हुए –

बाबा से लिपट जाती है.यह देख सेठ जी भाव–विभोर हो जाते हैं.

बाबा अपने सेठ जी को बार–बार धन्यवाद दे रहे थे,और रानी हाथों में राखी लेकर–"बहना ने भाई की कलाई पर" .गाते हुए उछल रही थी.

*****

अमर रहे रक्षाबंधन का पर्व

रचनाकार- अशोक पटेल "आशु", तुस्मा,शिवरीनारायण

अमर रहे रक्षाबंधन का यह पावन पर्व.
अमर रहे भाई-बहन का यह पावन धर्म.

बहन की रक्षा का भाई यह शपथ लेगा.
भाई अपनी कलाई में राखी बंधवाएगा.

रेशम के धागों में प्रेम-विश्वास झलकेगा.
आस्था प्रेम की राखी हाथ में निखरेगा.

महज धागा नहीं है,यह रेशम का धागा
जन्म-जन्मांतर के प्रेम का है यह बंधन.

रिश्तों की बुनियाद रहे अमर व मजबूत.
सदा रहे अखंड विश्वास यह गठबंधन.

नही तौल सकते हैं रिश्तों को दौलत से
और न निभा सकते हैं ईर्ष्या-नफरत से.

निभा सकते हैं इसे प्रेम आस्था प्यार से.
इसे पावन भी बना सकते हैं,विश्वास से.

*****

बेंदरा

रचनाकार- दीपक कंवर

बेंदरा खईस केरा,
संझा के बेरा.
फेंक दिस फोकला,
अउ करे चोचला.
रुख ले कुदीस
छम ले,
फोकला म छिंदल गे,
धम ले.

*****

बरसातें

रचनाकार- सालिनी कश्यप, बलौदाबाजार

आ गे हाबय बरसात के दिन,
अब्बड़ मजा आवत हे धुररा के बिन.
पानी मे भिगत-भिगत स्कूल जाना,
अउ चिखला में जाके धूम मचाना.
गुरुजी मन के बार -बार चिल्लाना,
अउ लइका मन के पानी म बिदबिदना.
मत भिगव रे बीमार पड़ जाहू,
पढ़ई के होही नुकसान जब स्कूल नई आहू.
लइका मन ल भीगे के काय डर हे,
जम्मो डाहर तो चिखला अउ गोबर हे.
भिगे रहिके दिन भर कक्षा में बैठना,
कब घण्टी बाजहीं दुबारा हे भीगना.
अइसने भिगे अउ चिखला में तो,बचपन के मजा हे,
सियान होयके बाद भिगबो तब तबियत के सजा हे.
तेकर सेती संगवारी हो,मजा लो सौगात के,
काबर लौट के नई आवय ये दिन बरसात के.

*****

स्वच्छ भारत

रचनाकार- अर्पिता साहू, सातवीं, स्वामी आत्मानंद शेख गफ्फार अंग्रेजी माध्यम स्कूल तार बाहर बिलासपुर

हमारे भारत देश को हम स्वच्छ कैसे कर सकते हैं:-

1) हमारे घर के आस-पास गली - मोहल्ला को साफ - सफाई का ध्यान रखना चाहिए.

2) सभी गली - मोहल्लों में एक- एक कूड़ा दान पेटी रखना चाहिए जिसे गंदगी नहीं फैलेगी.

3) हमें प्लास्टिक का उपयोग नहीं करना चाहिए.

4) देश की सार्वजनिक एवं शासकीय स्थानों को स्वच्छ बनाए रखना चाहिए.

5) हमें केवल कचरा पेटी में ही डालना चाहिए.

6) प्रत्येक व्यक्तियों को शौचालय का उपयोग करना चाहिए.

7) स्वस्थ भारत के लिए स्वच्छ भारत बनाना जरूरी है.

8) 2 अक्टूबर 2014 के नरेंद्र मोदी जी ने एक राष्ट्रव्यापी सफाई के रूप में प्रारंभ किया था.

*****

तमाशे वाला

रचनाकार- शीतल बैस, सहा. शिक्षक, शा. प्राथ. शाला मगरघटा, बेमेतरा

चौक चौराहे लगी है भीड़, देखो कोई आए हैं.
अम्मा बोली देखो जाकर, तमाशा दिखलाए हैं.
झटपट दौड़ लगाया बाहर, सब साथी आए हैं.
भालू बंदर देखो ,देखो, सुंदर कपड़े पहनाए हैं.
आंखों देखी को झूठलाए, ऐसे जादू लाए हैं.
गानों की धुन में बच्चे को, रस्सी पर चलवाए हैं.
रोजी-रोटी की तलाश में, जान जोखिम लगाए हैं.
गले जीभ सरिया से छेदे, ऐसे करतब लाए हैं.
छोटी सी रिंग के अंदर से, पूरा शरीर बाहर आए हैं.
खाली टोपी उल्टी रख के, फूल कबूतर लाए हैं.
जान हथेली पर रखकर, पेट की भूख मिटाए हैं.
भीड़ लगी है बहुतों की, पर चिल्लर कुछ ही आए हैं

*****

नए भारत को साकार रूप देना हैं

रचनाकार- किशन सनमुख़दास भावनानी गोंदिया, महाराष्ट्र

प्रौद्योगिकी पर जोर देकर,
विकास को बढ़ाना है.
कल के नए भारत को,
साकार रूप देना है.

साथ मिलकर महत्वपूर्ण,
भूमिका निभाना है.
संकल्प लेकर सुशासन को,
आखिरी छोर तक ले जाना है.

भ्रष्टाचार को रोककर सुशासन को,
आखरी छोर तक ले जाना है.
सरकारों को ऐसी नीतियां बनाना है,
भारत को सोने की चिड़िया बनाना है.

आधुनिक प्रौद्योगिकी युग में भी,
अपनी जड़ों से जुड़कर रहना है .
प्रौद्योगिकी का उपयोग
कुशलतापूर्वक करना है.

भारत को परिवर्तनकारी,
पथ पर ले जाना है.
सबको परिवर्तन का सक्रिय,

धारक बनाना है.

न्यूनतम सरकार अधिकतम,
शासन प्रणाली लाना है.
सुशासन को आखिरी,
छोर तक ले जाना है.

भारतीय लोक प्रशासन को,
ऐसी नीतियां बनाना हैं
वितरण प्रणाली में भेदभाव,
क्षमता अंतराल को दूर करना है.

लोगों के जीवन की गुणवत्ता
कौशलता विकास में सुधार करके
सुखी आरामदायक बेहतर
ख़ूबसूरत जीवन बनाना है.

सुविधाओं समस्यायों, समाधानों
की खाई पाटना है.
आम जनता की सुविधाओं को
अधनुतिक तकनीकी से बढ़ाना है.

*****

नया अध्याय

रचनाकार- टीकेश्वर सिन्हा "गब्दीवाला", बालोद

"माँ...! बाबूजी बाजार जाएँगे तो अंग्रेजी की पुस्तक और गणित के लिए एक मोटी कॉपी ले आएँगे. बोल देना. मैंने अपना सवाल रफ कॉपी में हल कर लिया है. शाम को स्कूल से आने के बाद गणित कॉपी में फिर हल करूँगी. अभी मैं श्यामा के घर जा रही हूँ. उधर से ही स्कूल जाऊँगी." कक्षा छठवी की सुमन अपनी माँ आशा को बताते हुए स्कूल के लिए घर से निकली.

"हाँ... ठीक है बिटिया ! बोल दूँगी तुम्हारे बाबूजी को. पर अभी स्कूल जल्दी जाओ. समय हो रहा है." आशा किचन में व्यस्त थी; फिर भी खिड़की से झाँकते हुए बोली.

सुमन, श्यामा और श्रुति स्कूल जा रही थीं. तीनों सहेलियाँ अपने गृहकार्य सम्बंधित बातें बतिया रही थीं. चूँकि स्कूल गाँव से थोड़ा बाहर था. समय भी हो रहा था. इसलिए वे थोड़ी तेजी से चल रही थीं. सड़क की हालत भी खराब थी. सड़क के दोनों किनारे छोटे-छोटे गड्ढे हो गये थे. बारिश की वजह से गड्ढों में पानी भरे हुए थे. बस वे स्कूल पहुँचने ही वाले थे ; तभी तेजी से एक कार आयी. उसमें तीन-चार मनचले युवक बैठे थे. स्कूल जाती लड़कियों पर उनका ध्यान नहीं रहा. कार सर्र... से निकल गयी. कीचड़युक्त पानी लड़कियों पर छिटक गये. श्रुति और श्यामा के कपड़ों पर तो न के बराबर कीचड़ लगे. लेकिन सुमन के न सिर्फ सर व चेहरे पर कीचड़ लगे, बल्कि उसकी स्कूल युनीफॉर्म पूरी तरह खराब हो गयी. उसे कारवालों पर बहुत गुस्सा आया.युनीफॉर्म देख उसे रोना भी आ रहा था. श्यामा और श्रुति को भी अच्छा नहीं लगा. तीनों एकदम चुप हो गयीं. फिर सुमन की रोनीसूरत देख श्यामा बोली- "तेरी ड्रेस तो बिल्कुल खराब हो गयी सुमन. मत चल बहन स्कूल आज. पहले अपनी ड्रेस बदल कर आ जाओ घर से."

"हाँ सुमन. श्यामा सही कह रही है. थोड़ी देर हो भी जाएगी, तो कोई बात नहीं." श्रुति ने सुमन के चेहरे को रूमाल से साफ किया और उसके बैग को झाड़ने लगी. तभी श्यामा अपनी बैग से कागज के कुछ टुकड़े निकाल कर सुमन के बाल साफ करने लगी. श्रुति की ओर इशारा करते हुए बोली- "यदि तुम चाहती हो तो हम दोनों यहीं पर घर से आते तक तुम्हारा इंतजार कर लेते हैं. लेकिन जाओ बहन घर. तुम्हारी ड्रेस खराब हो चुकी है."

थोड़ी देर बाद सुमन सिसकते हुए बोली- "श्यामा ! मेरे पास तो एक ही स्कूल ड्रेस है. दूसरी युनीफॉर्म तो पंद्रह अगस्त तक सिलवा पाएँगे."

"तो फिर आज मत चल स्कूल. हम लोग आरती मैडम जी को बता देंगे पूरी बात. जा घर. मत आना." श्यामा ने सुमन के बैग को उसके पीठ पर लटकाया.

"आज जो भी होमवर्क मिलेगा; तुम्हें बता देंगे. ठीक रहेगा ?" श्रुति बोली.

"नहीं श्यामा ! मैं स्कूल जाऊँगी श्रुति. स्कूल जाकर हाथ-पैर और चेहरा धो लूँगी. ड्रेस को पोंछ कर साफ कर लेती हूँ. कुछ टाइम के बाद ये सुख जाएँगे." अपनी बैग सम्भालते हुए सुमन बोली.

"आज बस स्कूल नहीं जाओगी तो क्या बिगड़ जाएगा ?" श्यामा बोली. सुमन ने उन दोनों की बातों पर ध्यान नहीं दिया. वह घर वापस गयी ही नहीं. फिर तीनों बातें करते-करते स्कूल पहुँच गयीं.

प्रार्थना हो गयी थी. कक्षाएँ लग चुकी थी. सुमन, श्यामा और श्रुति सकपकाते हुए अपनी कक्षा की ओर बढ़ रही थीं; तभी उन पर प्रधानाध्यापक कुशल ठाकुर जी की नजर पड़ी. अपने पास बुलाये. देर से आने का कारण पूछा. तीनों लड़कियों ने ठाकुर जी को पूरी बात बतायी. फिर ठाकुर जी ने कक्षाध्यपिका आरती जी को बुलवाया. आरती जी को भी माजरा समझ आ गया. उन्होंने स्कूल में रखे अतिरिक्त स्कूल युनीफॉर्म्स में से एक युनीफॉर्म निकाल कर सुमन को दिया.

तत्पश्चात सुमन कक्षा में आकर श्यामा और श्रुति के पास बैठी. अध्यापन प्रारम्भ करने से पहले आरती जी ने कहा- "ड्रेस पर कीचड़ हो गया तो घर जाकर बदल कर आना था; या फिर आज स्कूल ही नहीं आना था. फिर सुमन बोली- "मैडम जी, मेरे पास एक ही स्कूल ड्रेस है. बाबूजी पंद्रह अगस्त के पहले खरीदेंगे."

"ठीक है..." कहते आरती जी बोली- "आज मेरी बात ध्यान से सुनो. सड़क किनारे हमेशा बायीं तरफ ही अपने आगे-पीछे देख कर चला करो. चलते-चलते फिजूल की बातें मत किया करो. गाड़ी-मोटर की आवाज सुनते ही अपने साइड पर खड़े होकर उन्हें जाने दिया करो. ये बात सिर्फ सुमन के लिए ही नहीं है. ये सबके लिए है." "जी मैडमजी...! कहते हुए बच्चे आरती जी की बातें बड़े से सुन रहे थे." आरती जी ने अपनी बातें जारी रखी- "जैसे कि अभी बरसात का मौसम है, इसलिए पानी भरे गड्ढों पर विशेष ध्यान दिया करो. जैसे ही कोई दुपहिया या चारपहिया गाड़ी दिखती है, तो तुरंत उनसे दूर होकर उन्हें पहले जाने दिया करो. हाँ, सुमन तुम कुछ कहना चाहती हो ?"

जी मैडमजी. सुमन कहने लगी- "मैं अपनी स्कूल युनीफॉर्म कीचड़ से सनने के बावजूद स्कूल आयी क्योंकि आपने गृहकार्य पूरा करके आने के लिए कहा था. मैंने अपना गृहकार्य पूरा कर लिया है. भूगोल के उन सभी प्रश्नों का उत्तर याद भी कर लिया है, जिन्हें आपने याद करके आने के लिए कहा था. कंठस्थ कर लिया है मैंने मैडमजी. चाहे तो आप पूछ सकती हैं. आज आप नया अध्याय "सौरमंडल" समझाने वाली भी हैं न. नया अध्याय को मैं समझना चाहती हूँ मैडमजी. नया अध्याय न छुट जाए सोचकर वापस घर नहीं गयी; और मैं स्कूल आ गयी मैडमजी." पूरी कक्षा ने सुमन की अविरल बातें सुनी.

"यह तो बहुत अच्छी बात है. मानना पड़ेगा सुमन तुम्हें." कक्षाध्यापिका आरती जी ने मुस्कुराते हुए सुमन की पीठ थपथपाई- " अपनी पढ़ाई के प्रति सुमन का रूझान काबिले-तारीफ है. यह सब पूरी कक्षा के लिए एक नई सीख है. सचमुच आज सुमन तुम सब के लिए एक नया अध्याय है." सुमन पर पूरी कक्षा की एकटक नजर थी.

*****

कोशिका

रचनाकार- कामिनी जोशी, kgbv दुल्लापुर बाजार

हमारे शरीर की रचनात्मक इकाई
जो कोशिका कहलायी.
आकार इनका मधुमक्खी के छत्ते के समान,
वह दिखता है प्यारा ईटों का मकान.
इनके बिना शरीर का कोई नहीं आधार
हर कोई अधूरा है बच्चा स्वस्थ हो या बीमार,
कई प्रकार की होती है जीवो में इसकी आकृति,
चिपचिपा पदार्थ जीवद्रव्य इसमें तैरते रहती.
हमारे शरीर की रचनात्मक इकाई
जो कोशिका कहलायी.

*****

ब्लैक बोर्ड और डस्टर

रचनाकार- पुष्पेन्द्र कुमार कश्यप, सक्ती

कुछ दिनों पूर्व ही मेरा स्थानांतरण इस गाँव की शाला में शिक्षण कार्य हेतु हुआ था. इस शाला में पठन-पाठन की आधुनिक सुविधाएँ जैसे- बिजली, पंखे, डिजिटल ब्लैक बोर्ड आदि सभी उपलब्ध थे. शाला के एक छोटे से कमरे के बाहर ताला लटक रहा था. चपरासी से पूछने पर ज्ञात हुआ कि उस भंडार कक्ष में अनुपयोगी पुराने ब्लैक बोर्ड, डस्टर, फर्नीचर, चाॅक आदि वस्तुएँ रखी हुई हैं.

एक दिन जब मैं उस बंद कमरे के पास से गुजर रहा था तो भीतर से धीरे-धीरे बात करने की आवाज सुनाई दी. मैंने भीतर की बातें सुनने के लिये दरवाज़े पर अपने कान टिका दिए.

उस धूलयुक्त कमरे में पड़े डस्टर और ब्लैक बोर्ड अपने बीते दिनों को याद करते हुए आपस में बातें कर रहे थे. डस्टर ने ब्लैंक बोर्ड से कहा- मित्र, मुझे लगता है कि अब हम दोनों की जिंदगी इस धूल भरे कमरे में ही समाप्त हो जायेगी. ब्लैक बोर्ड ने भी एक गहरी साँस ली और जवाब दिया- हाँ भाई, मुझे भी ऐसा ही लग रहा है, जैसे हम दोनों इस अँधेरे धूलयुक्त कमरे में ही पड़े-पड़े समाप्त हो जायेंगे. पहले जब डिजिटल बोर्ड नहीं था तब हम दोनों कितना काम करते और खुश रहते थे. ब्लैक बोर्ड ने रुआँसा होकर कहा- शिक्षक और बच्चे मेरे ऊपर लिख कर आनंदित होते और मेरा शरीर भर जाने पर सहलाते हुए तुम मुझे साफ करते. वो भी क्या दिन थे, जाने हमें फिर सूरज की रोशनी देखने को मिलेगी भी या नहीं?

हमारी शाला के ऊपरी मंजिल के एक कक्ष में एक शिक्षक डिजिटल ब्लैक बोर्ड का उपयोग करते हुए विज्ञान विषय पढ़ाने में व्यस्त थे, अचानक बिजली चली गई और लंबी अवधि तक बिजली नहीं आई. तभी उस शिक्षक को याद आया कि नीचे मंजिल के स्टोर रूम में ब्लैक बोर्ड, डस्टर, चाॅक रखे हुए हैं. शिक्षक उस धूलयुक्त अँधेरे कमरे में आया और ब्लैक बोर्ड, डस्टर एवं चाॅक को उठाकर अपने क्लास रूम में ले गया. बाहर आते ही ब्लैक बोर्ड और डस्टर ने खुली हवा में लंबी गहरी साँसें लीं.

शिक्षक ने ब्लैंक बोर्ड में लिखकर पढ़ाना प्रारंभ किया, ब्लैक बोर्ड के भर जाने पर डस्टर उसे साफ करता. आज दोनों बहुत खुश थे, दोनों एक दूसरे को देखते हुए बोल उठे नया नौ दिन, पुराना सौ दिन

*****

बचत

रचनाकार- पुष्पेन्द्र कुमार कश्यप, सक्ती

एक गाँव में सुखीराम अपनी पत्नी शांतिदेवी के साथ रहता था. वे कृषि कार्य करते थे, कृषि से उत्पन्न अनाज ही उनके जीविकोपार्जन का साधन था. एक साल बहुत कम वर्षा होने से अकाल पड़ गया और उसे खेती से लगभग दस माह तक गुजर-बसर करने योग्य अनाज ही प्राप्त हुआ, जिससे सुखीराम बहुत चिंतित रहने लगे. उसकी पत्नी अपने नाम के अनुरूप बहुत शांत, समझदार और दूर की सोच रखने वाली गृहणी थी. अपने पति को चिंतित देखकर एक दिन शांतिदेवी बोली- आजकल आप बहुत चिंतित दिखाई देते हैं, क्या बात है?

सुखीराम ने एक लंबी ठंडी साँस लेकर कहा - इस साल अनाज बहुत कम हुआ है जो पूरे वर्ष भर के लिए पर्याप्त नहीं है, यही सोचकर चिंतित हूँ. शांतिदेवी ने दिलासा देते हुए कहा भगवान बहुत दयालु हैं, कुछ न कुछ व्यवस्था हो जाएगी, आप चिंता छोड़ दीजिये. समय बीतता गया, सुखीराम अचंभित थे कि वर्ष पूरा होने के बाद भी घर में कुछ अनाज शेष है. यह देखकर उन्होंने सुखद आश्चर्य के साथ अपनी पत्नी से पूछा- ऐसा कैसे संभव हुआ? पत्नी ने जवाब दिया- मैं भोजन बनाने के लिए पहले की तरह पूर्ववत मात्रा में चावल निकालने के बाद उसमें से दो मुट्ठी चावल कोठी में वापस रख देती थी. इस तरह दो-दो मुट्ठी अनाज प्रतिदिन बचत करने से पूरे वर्ष भर के लिए अनाज की पूर्ति हो गयी . आज सुखीराम को अपनी पत्नी पर बहुत गर्व का अनुभव हो रहा था.

*****

कुसियार

रचनाकार- शांति लाल कश्यप, कोरबा

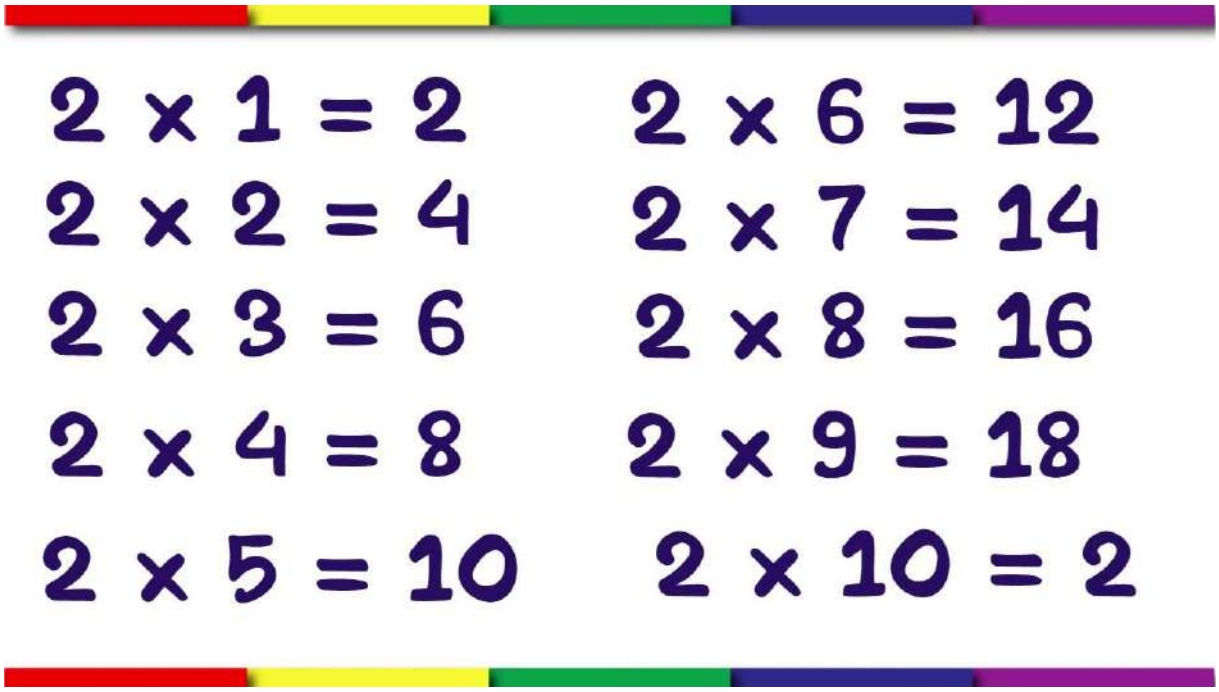

दो एकम दो, दो दूने चार - हमरो बारी म हावय कुसियार.
दो तिया छै, दो चौके आठ - हसिया ल धर के कुसियार ल काट.
दो पंचे दस, दो छक्के बारह - एक ठन कुसियार ल पारी पारी खावा.
दो सत्ते चौदह, दो अट्ठे सोलह - कुसियार ल पेर के नीबू रस घोला.
दो निया अट्ठारह, दो दहम बीस - गरमी महीना म कुसियार रस पी.

*****

बादर करिया आही

रचनाकार- बलदाऊ राम साहू, दुर्ग

जब-जब बादर करिया आही
खुश हो के पानी बरसाही.

सुरुर-सुरुर चलही पुरवाई
झींगुरा मन ह गीत सुनाही.

नाच देखाही मछरी रानी
मेंचका भैया ढोल बजाही.

अउ अगास मा इंदर देव ह
तड़-तड़, तड़-तड़ तीर चलाही.

नरवा-नदिया कूद-कूद के
मन हरसाही, खुशी मनाही.

छिपीर-छापर गली-खोर मा
लइका मन हर मजा उड़ाही.

*****

रक्षाबंधन

रचनाकार- सुशीला साहू, रायगढ़

भाई बहन का प्यारा रिश्ता,
आया राखी का त्यौहार.
मन भावन खुशियाँ हैं छाई,
देखो प्यार भरा संसार.
लड्डू पेड़ा बरफी देखो,
भरकर थाली बहना लाई.
रोली चंदन से थाल सजा,
आरती कर तिलक लगाई.
रेशम की डोरी बांध कर,
दुआ मांगती बारम्बार.
प्रीत निभाती प्यारी बहना,
देता भाई प्यारा उपहार.
रंग बिरंगे धागों के संग,
हर सावन में आती है राखी.
छोटी-छोटी नोक झोंक होती,
फिर भी है आपस में प्यार.
सदियों से है चली आ रही,
रक्षाबंधन का यह त्योहार .

*****

शिक्षक चालीसा

रचनाकार- कन्हैया साहू 'अमित'

दोहा:-

जगहित जलता दीप सम, सहज, मृदुल व्यवहार.
शिक्षक बनता है सदा, ज्ञान सृजन आधार.

चौपाई:-

जयति जगत के ज्ञान प्रभाकर. शिक्षक तमहर श्री सुखसागर.-1
वंदनीय विद्या विज्ञापक. अभिनंदन अधिगुण अध्यापक.-2

आप राष्ट्र के भाग्य विधाता. सदा सर्वहित ज्ञान प्रदाता.-3
जन-जन जीवनदायी तरुवर. प्रथम पूज्य हैं सदैव गुरुवर.-4

शिक्षित शिष्ट शुभंकर शिक्षक. विज्ञ विवेचक विनयी वीक्षक.-5
अतुलित आदर के अधिकारी. उर उदार उपनत उपहारी.-6

लघुता के हो लौकिक लक्षक. सजग, सचेतक सत हित रक्षक.-7
वेदित विद्यावान विशोभित. प्रज्ञापति हो, कहाँ प्रलोभित?-8

अंतर्दर्शी हैं आप अभीक्षक. प्रमुख प्रबोधी प्रबुध परीक्षक.-9
विद्याधिप विभु विषय विशारद. उच्चशिखर चमके यश पारद.-10

विश्व प्रतिष्ठित प्रबलक पारस. ढुनमुनिया मति के दृढ़ ढारस.-11
होने देते कभी न अनुचित. सीख सिखाते सबको समुचित.-12

क्षमाशील हिय अतुलित क्षमता. समदर्शी सत स्नेहिल समता.-13
नमस्य नामिक दोष निवारक. तथ्यान्वेषी तदधिक तारक.-14

अतुलनीय निज जीवन अनुभव. कहकर बाँटे तनया तनुभव.-15
भलमनसाहत भूर भलाई. हृदय गाढ़ गुणकर गहराई.-16

समय निष्ठ सह अति अनुशासी. सहज, सरल होते मृदुभाषी.-17
शांतचित्त यह दृढताधारी. करते काज सर्वहितकारी.-18

शिक्षक सचमुच सीख सिखाते. अनुभव धारित मार्ग दिखाते.-19
नित्य सीखने रहते आतुर. चौकस चित, चिंतामणि चातुर.-20

शिष्यगणों के यही चहेते. देते सबकुछ, मोल न लेते.-21
नैतिकता का पाठ पढ़ाते. हाथ पकड़ निर्बाध बढ़ाते.-22

जन-जन से शिक्षा को जोड़े. मिथक धारणा तत्पर तोड़े.-23
शिक्षित करते अगली पीढ़ी. शीर्ष सफलता, बनते सीढ़ी.-24

सामाजिकता के गुण भरते. कर्म सदा जनहित में करते.-25
दीपक सा ये करे उजाला. शिक्षक लगते ज्यौं मणिमाला.-26

छलछंदों को शिक्षक छाँटे. ज्ञान संपदा सबको बाँटे.-27
कभी न कोई रहे निरक्षर. पहचानें सब स्वर्णिम अक्षर.-28

नवाचार के ये अनुयायी. शिक्षार्थी के सदा सहायी.-29
मातु-पिता सम बनते पोषक. तथ्य तथागुण शिक्षक तोषक.-30

कभी न अध्यापक अभिमंता. गुणाकार गुरुजी गुणवंता.-31

शिक्षक सबको योग्य बनाये. पढ़ा-लिखाकर खुशी मनाये.-32

बाल सखा सा बन सहगामी. कुशल कार्य करते अनुकामी.-33
खेले-कूदे, नाचे-गाये. हार्दिकता से हिय हर्षाये.-34

शिक्षक श्रेष्ठ राष्ट्र निर्माता. विद्याभूषण विधि विख्याता.-35
प्रथम ईश से शिक्षक पूजित. कीर्ति पताका नभ तक गुंजित.-36

अध्यापक बन काज सँवारे. कोई शिक्षक, गुरू पुकारे.-37
नमन करूँ मैं अपने गुरुजन. जिनसे सँवरा यह जग जीवन.-38

अमित' कहाँ कुछ लिख पाता. यदि जो शिक्षक नहीं सिखाता.-39
सदा रहूँ शिक्षक का चाकर. नित्य नमन है श्री विद्याधर.-40

दोहा:-
आत्म निवेदन आपसे, करें कृपा की वृष्टि.
हाथ थाम मेरा रखें, जब तक है यह सृष्टि.

*****

बचपन की यादें

रचनाकार- साक्षी यादव, कक्षा- 8वीं, स्वामी आत्मनाद शेख गफ्फार अंगरेजी मध्य शाला तारबाहर बिलासपुर

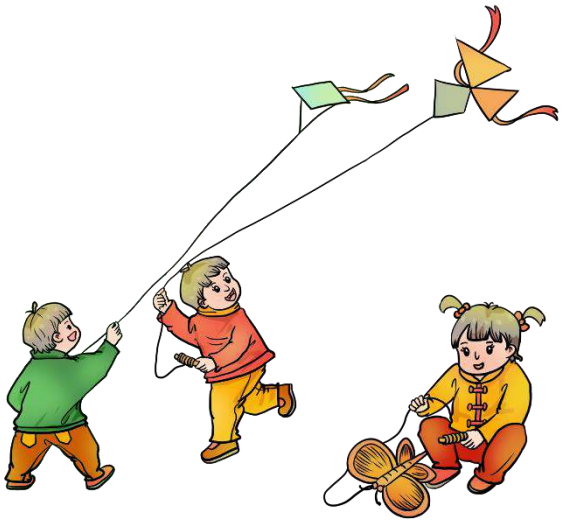

बचपन की यादें अब तक की सबसे अनमोल यादें हैं. अपने छोटे भाई-बहनों को देखकर हमें अपना बचपन याद आ जाता है. हमारे माता-पिता ने हमारी सुरक्षा और खुशी के लिए सब कुछ किया. हमारे माता-पिता प्यार से हमारा ख्याल रखते हैं. जब हम बीमार पड़ते थे तो वे पूरे दिन और पूरी रात हमारे साथ रहते थे. जब हम छोटे बच्चे थे तो हम अपने पिता के साथ स्कूल जाते थे और घर आते समय जब भी हमें खिलौने की दुकान या मिठाई की दुकान दिखती थी तो हम अपने पिता से कहते थे कि दुकान से कुछ खरीद लिया करो. वे सभी किस्से और कहानियाँ जो हमारे दादा-दादी हमें सुनाया करते थे जब हम बच्चे थे जैसे - परियों की कहानियाँ, राजकुमार और राजकुमारी की कहानियाँ, कुछ मज़ेदार और डरावनी कहानियाँ आदि. बचपन में हम नए-नए और मज़ेदार प्रकार के खेलों का आविष्कार करते थे और उन्हें हर समय खेलते रहते थे. और जब शिक्षक बोर्ड पर लिख रहे होते थे तो हम बातें करते थे और जब शिक्षक हमें देखते थे तो हम ऐसे व्यवहार करते थे जैसे हम पढ़ रहे हों. और खाली समय में हम अंताक्षरी, नदी-पहाड़ जैसे खेल खेलते थे. बचपन में हम किसी चीज़ को खरीदने के लिए या दादा-दादी को बहुत परेशान करते थे. वो दिन हम सभी के लिए बहुत कीमती है. वे यादें मेरे जीवन के सबसे अच्छे पल हैं.

मैं चाहती हूँ कि वो बचपन के दिन में वापिस से जी सकूँ.

*****

जन्माष्टमी

रचनाकार- जानवी कश्यप ,आठवीं ,स्वामी आत्मानंद तारबहार बिलासपुर

मेरे गोपाल जी का दिन आ रहा है,
खुशियां भी आएगी,
मेरे पूरे सवाल का हल भी निकलेगा.
मिश्री से भी मीठा नंदलाल का बोल है,
माखन चोर नंद किशोर है.
नटखट हो पर मनमोहक हो,
रंग के सावले हो पर दिल के साफ हो.
आपसे कुछ भी मांगो सब कुछ मिल जाता है.
एक आप ही तो हो जो सबको इतना प्यार करते हो.

*****

हिंदी

रचनाकार- गौरीशंकर वैश्य विनम्र, लखनऊ

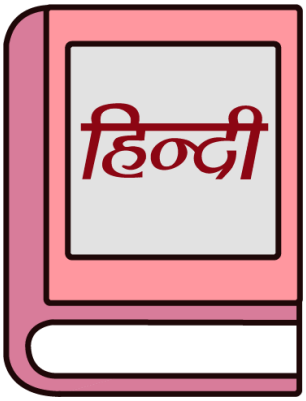

हमको प्यारी, भाषा हिंदी.
जन - जन की अभिलाषा हिंदी.
कर्म - धर्म में रची - बसी है
भारत की परिभाषा हिंदी.

ज्ञान और विज्ञान है हिंदी.
संस्कृति की पहिचान है हिंदी.
सहज, सरल. मधु जैसी मीठी
जननी का जयगान है हिंदी.

राष्ट्रसंघ की शान है हिंदी.
उन्नति का सोपान है हिंदी.
जग में यश - सम्मान पा रही
विखराती मुस्कान है हिंदी.

आओ! हम सब,बोलें हिंदी .
संस्कारों में घोलें हिंदी.
माता - सा सम्मान करें हम
एक सूत्र में पिरो लें हिंदी.

*****

नारी की कहानी

रचनाकार- कु. विरम निषाद, कक्षा 12वीं, शा उ मा वि करेली बड़ी मगरलोड, जिला धमतरी

जीवन भर परायापन, तुम्हारी यही कहानी.
होंठों पे ख़ुशी झलकती और ऑंखों मे पानी.

ना जाने किस -किस पर बीती यही कहानी.
दहेज प्रथा से अभिशाप बन गई है जिंदगानी.

दहेज को उपहार मानकर क्यों रचाते हैं शादी.
और कौन समझेगा कन्यादान की परेशानी.

ससुराल आये दो दिन ही हुए, हुई शुरू कहानी.
पैरों की धूल समझकर बना दी गई नौकरानी.

रोक लगी बाल विवाह पर ,लोगों की मनमानी .
भारत में बत्तर हो गई थी जागे निंद जवानी.

एक हजार एक रातें सुनी है सब ने कहानी.
पति के हाथों कत्ल रोजाना होती थी अर्धांगिनी.

*****

कहाँ खो गया मेरा मन

रचनाकार- कु. विद्या निषाद (कला संकाय), कक्षा 12 वीं, शा उ मा वि करेली बड़ी मगरलोड, जिला धमतरी

न जाने कैसी हूँ मैं,
खुद से कहती हूं मैं.
कहाँ है मेरा ध्यान,
कहां खो गया है मेरा मन.

सितारों पे नजर पड़ गई,
समुद्र में लहरें ठहर गई.
धड़क रही है मेरी धड़कन,
कहाँ खो गया मेरा मन.

हो दोस्तों से मुलाकातें,
हो जाती है खूब बातें.
हो जाती थी मैं मगन,
कहाँ खो गया मेरा मन.

किसी का हूँ मैं सहारा,
तूने मुझे क्यों ललकारा.
बेहद सुंदर रहा मेरा बचपन,
कहां खो गया मेरा मन.

दिल बेचारा है गुमसुम चुप,
कितना निखारा है रूप.
अपनों ने देख लिया दर्पण,
कहाँ खो गया मेरा मन.

*****

मेरी माँ

रचनाकार- कु.प्रीति साहू, कक्षा 11 वीं कला, शा उ मा वि करेली बड़ी मगरलोड, जिला धमतरी

माँ से ना कोई अच्छा,
ना माँ से कोई प्यारा,
सबसे अच्छी मेरी माँ,
प्यार बरसाये हम पर माँ,

मैं माँ की लाडली,दुलारी,
माँ है मेरी सबसे प्यारी,
सबसे अच्छी मेरी माँ,
प्यार बरसाये हम पर माँ .

गोद में रखकर है सुलाया,
माँ के आँचल में जग समाया.
तेरी लोरी ने मुझे सुलाया,
तेरा यूं डाटना हमें समझाया.

माँ है तो दुनिया सारी,
माँ नही तो बेरंग है सारी.
सबसे अच्छी मेरी माँ,
प्यार बरसाये हम पर माँ.

मैं हूँ माँ की लाडो रानी,
माँ सुनाती रोज कहानी.
सबसे अच्छी मेरी माँ,
प्यार बरसायें हम पर माँ.

*****

मेरे भाई

रचनाकार- कु. गीतांजलि साहू, कक्षा 11 वीं, शा उ मा वि करेली बड़ी मगरलोड, जिला धमतरी

कहीं गलियों में नजर आए थे वो एक दिन
मुझे देखकर मुस्कुराए थे वो एक दिन.

ऑंखों से आंसू जब बहुत बहाया था मैंने.
गुडिया कहकर चुप कराए थे वो एक दिन

हँस रही थी उनकी बातों पर खिलखिलाकर मैं.
पागल बोल हँसी मेरी उड़ाए थे वो एक दिन.

चोट लगी रस्ते में जब मुझको.
घाव में मरहम लगाए थे वो एकदिन.

भूख मुझको जब जोरो से लगी थी
हाथों से अपने खिलाए थे वो एक दिन.

झगड़ा करके की भी लाड़ली बोलकर
मुझे रूठने पर मनाए थे वो एक दिन.

रक्षा बंधन मे गई थी जब मैं राखी बांधने
उपहार खूब दिलाये थे वो एक दिन

बहुत याद आ रही है आपकी मुझको.
भईया मोटी बोलकर बुलाओ न मुझे एक दिन.

*****

बुधिया

रचनाकार- वेद प्रकाश दिवाकर

सुबह-सुबह चंदू बूढ़ी काकी को आवाज लगाता हुआ - काकी आज मैं शहर जा रहा हूं, बहुत जरूरी काम है, कल लौटूंगा.

बुधिया और मुन्ने का ख्याल रखियो. 70 साल की बूढ़ी काकी घर के अंदर से ही ठीक है बेटा.

जाते-जाते चंदू अपनी पत्नी बुधिया को समझा देता है, बरसात का समय है रात को दरवाजा अच्छे से बंद कर सोना और हां एक दीपक भी जलाए रखना, मुन्ने का अच्छे से ख्याल रखना कल जल्दी ही लौट आऊंगा. मुन्ने को लाड़ कर चंदू शहर के रास्ते चला जाता है.

मुन्ना अभी दो माह का ही है मगर पूरे मोहल्ले के आंखों का तारा है. दिन भर कभी इसके गोद में तो कभी उसके, बुधिया को बड़ी मुश्किल से उसे दूध पिलाने को मिलती. सुबह होते ही सब को उसके उठने का बेसब्री से इंतजार रहता.आज चंदू के शहर चले जाने पर बूढ़ी काकी और मोहल्ले वालों ने मुन्ने का अच्छे से ख्याल रखा. बुधिया भी दिनभर कामकाज में व्यस्त रही बीच-बीच में मुन्ने को दूध पिला दिया करती थी.इस तरह दिन ढल गया. रात होते ही बुधिया जल्दी से खाना बनाकर खा लेती है और दरवाजे अच्छे से बंद कर लेती है. गांव में बिजली नहीं है इसलिए बुधिया एक दीपक जला लेती है, जिससे धुंधली - धुंधली सी रोशनी आती रहती है. बुधिया जमीन पर चटाई लगाती है और मुन्ने को लोरी सुनाती - सुनाती खुद भी सो जाती है.

बरसात का समय था इसलिए आसमान में बिजली चमकने लगी और जमकर बारिश भी होने लगी. कभी-कभी बिजली के जोर से कड़कने पर बुधिया जाग जाती. रात काफी हो गई और बारिश भी थोड़ा कम हो गया था लेकिन बिजली का कड़कना जारी था. दीपक की धुंधली - धुंधली रोशनी भी बुझने की कगार पर थी. तभी एक अजीब सी आवाज बुधिया के कानों को स्पर्श करने लगी. सहसा उस आवाज से बुधिया जाग गई, उस धुंधली - धुंधली रोशनी में भी जो दृश्य मुखर हो रही थी उसे देख बुधिया के पैरों तले जमीन ही खिसक गई. एक काला भयंकर सांप मुन्ने के सिरहाने पर फन फैलाए फूफकार रहा था. बुधिया के सामने मानो बिजली कौंध गई हो, हड़बड़ाहट में बुधिया को कुछ सूझी नहीं और मुन्ने को बचाने के लिए अपने हाथों से ही सांप को दूर झटकना चाही लेकिन

सांप उसके हाथ में ही लिपट गया और अपने विषैले दांत गड़ा दिए. बुधिया भी सांप के गर्दन को कस कर पकड़ ली, अब वह चाह कर भी सांप को छोड़ न पाई. शायद यही एक मां के ममता की इंतेहा थी.

सांप का जहर इतना भयानक था कि इसके पहले बुधिया और कुछ कर पाती उसके आंखों के सामने घना अंधेरा छाने लगा और उस काली अंधेरी रात में बुझते हुए दीपक के साथ ही बुधिया अनंत निद्रा में सो गई.

सुबह सूरज की पहली किरण के साथ ही सभी मोहल्ले वासियों के घर के दरवाजे खुलने लगे. लेकिन बुधिया के घर में सन्नाटा पसरा रहा. फिर कुछ ही देर में भूख से बिलखते हुए मुन्ने के रोने की आवाज बूढ़ी काकी के कानों में पड़ती है. बूढ़ी काकी अपने कमरे से ही आवाज लगाती हुई, अरे बुधिया मुन्ना भूख से रो रहा है, दूध पिला दे. लेकिन मुन्ने का रोना बंद नहीं हुआ वह और जोरो से रोने लगा. बूढ़ी काकी से अब रही ना गई वह अपने कमरे से बाहर निकल बुधिया के घर के दरवाजे पर थरथराती हुई पहुंचती है, जो कि अंदर से बंद है. तब तक मुन्ने के रोने की आवाज सुनकर जुम्मन मियां और बाकी पड़ोसियां भी पहुंच गए. बूढ़ी काकी फिर से आवाज लगाती है लेकिन सिर्फ मुन्ने के रोने की आवाज ही आती है.

सबके मन में शंका के बादल छाने लगे आखिर बुधिया कोई जवाब क्यों नहीं दे रही है. जुम्मन मियां ने देरी ना करते हुए दरवाजा तोड़ दिया. लेकिन कल्पना से परे दृश्य देखकर सबका कलेजा हिल गया, सबकी सांसे थम गई चाह कर भी कोई कुछ बोल ना सका.एक ओर ममता की प्यास में बिलखता मुन्ना और दूसरी ओर अपनी ममता को अमर कर चुकी बुधिया की (अकड़कर)नीली पड़ चुकी हुई शरीर जोकि अभी तक मौत को अपनी मुट्ठी में थामें रखी थी. सांप को अपनी मुट्ठी में जकड़कर मानो वह कह रही हो "ऐ मौत तू चाह कर भी मेरे मुन्ने को छू भी नहीं सकता "बुधिया का वह निष्प्राण तन मौत और मुन्ने के बीच ढाल बनकर पड़ी थी. उस पल को देख वहां ऐसा कोई न था जिसने अपनी आंखों से बहती धारा को थाम पाया हो. बूढ़ी काकी बिलखते हुए मुन्ने को अपनी छाती से लगा कर फफक रही थी. आज मां की ममता के सामने मौत भी लाचार लग रही थी. मुन्ने को उस भयानक काल से बचाकर बुधिया अपनी ममता को अमर कर गई. कहा भी गया है- मां ममता की वह फरिश्ता है जिसकी आंचल में खेलने के लिए ईश्वर भी अवतार लेते हैं.

धन्य है बुधिया और धन्य है उसकी ममता जो इतिहास के पन्नों में अमर हो गई.

सचमुच मां तो मां होती है

वह मर कर भी ममता से भरी होती है.

*****

माटी हमर धरोहर

रचनाकार- अशोक पटेल "आशु", तुस्मा,शिवरिनारायन

छत्तीसगढ़ के पावन भुईयाँ
जेमा देव-धामी के डेरा हे
महामाई जिहाँ शीतला बिराजे,
जेमा ठाकुर-देवा के बसेरा हे.

दया-धर्म, कला-संस्कृति के,
जिहाँ राम-कथा के चौरा हे,
अईसे जिहाँ देवी-दाई बिराजे
जेकर सेवा म जवांरा-पचरा हे.

इही भुईंया हर तीरथ बरोबर
इहिच म बसे चारो धाम हे
इहें बहे पुण्य पतीत-पावनी
दाई चित्रोत्पल्ला गंगा नाम हे.

जुग-जुग ले इहाँ धार बोहावय
जेकर लहरा हर यशगान करे हे
इहाँ के प्राचीन देव-देवाला ह
कला-संस्कृति के बखान करे हे.

ए माटी हर हमर धरोहर आए
पुरखा हमर ऋषि संत-बानी हे
गुरु-चेला जिहाँ महाप्रसाद के
मोक्ष-दुवार के अमर-कहानी हे.

*****

मेरा सच्चा साथी

रचनाकार- अशोक कुमार यादव मुंगेली

मेरा सच्चा साथी माता और पिता है,
जिसने पालन-पोषण कर बड़ा किया.
मेरा सच्चा साथी महाज्ञानी गुरुदेव है,
जिसने मुझे काबिल बनने ज्ञान दिया.

मेरा सच्चा साथी शिक्षामणी पुस्तक है,
जिसे पढ़कर मैंने सफलता प्राप्त की.
मेरा सच्चा साथी हर वो नेक इंसान है,
जिसने दुःख के समय में मेरी मदद की.

मेरा सच्चा साथी शरीर के प्रत्येक अंग है,
जो मुझे कर्म करने के लिए किया प्रेरित.
मेरा सच्चा साथी हमउम्र के सभी मित्र है,
जो गुणों और अवगुणों को किये चित्रित.

सच्चा साथी भगवान कृष्ण और सुदामा थे,
केवल नाम सुनकर ही प्रभु दौड़े चले आये.
विप्र के मनोकामना पूरी हुई, खुशियाँ मिली,
सखा को भाव विभोर होकर गले से लगाये.

*****

मीठी आज पढ़ने स्कूल चली थी

रचनाकार- श्रीमती अन्नपूर्णा यदु, बलौदा बाजार

उम्मीदों से पूरी भरी थी
वह धीमे-धीमे चली थी
चिड़ियों सी चहचहाती
निश्छल खिलखिलाती
आशाओं के पंख फैलाकर
वह एक उड़ान भरने चली थी
मीठी आज पढ़ने स्कूल चली थी.

ख्वाबों को अपने महकाने
दिवा- दिवा अवसर सजाने
कामयाबी की सीढ़ियां कई
नई बुलंदियों को छूने चली थी
एक नया इतिहास रचने चली थी
मीठी आज पढ़ने स्कूल चली थी.

आतुर नैना आनन प्रसन्न
कल्पनाओं से थी परिपूर्ण
हृदय में एक आस संजोए
राब्ता वह सबसे निभाने चली थी
मीठी आज पढ़ने स्कूल चली थी

लकड़ी कंकड़ बीज रंगीले
दिवा -दिवा मोर पंख सजीले
सुना था उसने सबसे कहते
नित नवीन होता है हटके
गीत कहानी चिड़िया बंदर
सभी सीखे शाला के अंदर
अपने नए सहपाठियों से मिलने चली
मीठी आज पढ़ने स्कूल चली थी

खुद से खुद की बातें करती
इक- इक पग धरा पर धरती
तितलियों सी थी सजी रंगीली
मन में एक विश्वास भरते चली थी
मीठी आज पढ़ने स्कूल चली थी.

*****

स्त्री

रचनाकार- श्रीमती अन्नपूर्णा यदु, बलौदा बाजार

भावों को समझने वाली
इंसान को उसके नजरों से पहचानने वाली
सबके जीवन में रंग भरने वाली
सभी में ऊर्जा भरने वाली
सभी के जीवन को आधार देने वाली
क्या रूप बताऊँ उसके
क्या-क्या गुण गिनाऊँ उसके
सुबह से शाम तक अपने कर्तव्यों को पूरा ही करती
हर रोज अपने रिश्तो में प्यार की महक है भरती
माला में सुमेरु का बड़ा महत्व है होता
वही महत्व घर में उसका है होता
कभी दुर्गा कभी काली का रूप है तू
विष्णु प्रिया लक्ष्मी तू ही शक्ति है अंबा भी तू
देवी स्वरूपा को कभी कम ना आंक तू
हंस वाहिनी है जो सभी को ज्ञान प्रदान है करती
आओ मिलकर गुणगान करें ईश्वर का वरदान होती है स्त्री.

*****

मै और मेरी कोशिशे

रचनाकार- सृष्टि प्रजापति, कक्षा-8, स्वामी आत्मानंद तारबहार बिल ासपुर

मुझे चाहत है,सफलता की
मेरा राह है संर्घष का.
हौसला मेरा बुलंद है.
परेशानियों को आ गया मुझे सँभालना.

हर परिस्थिति मे मुस्कुराती हूँ.
मेरी खासियत है,मै खुद मे ही खुश हो जाती हूँ.
मेहनत करके जब थक जाती हूँ.
अपने ही सपनों को मन मे सजाकर फिर से शुरू हो जाती हूँ.

हर वक्त कोशिश करती हूँ,
अपने आज को कल से बेहतर बनाने की.
मै चाहती हूँ जमीन पर रहकर,
आसमान को पाने की.

भीड़ मे नही चलना मुझे,
मुझमे हिम्मत है,भीड़ से अलग निकलकर अपना स्वयं बनाने की.
मैने खुद से ही एक वादा किया है.
अपने लक्ष्य को प्राप्त करने का संकल्प लिया है.

*****

राजा बकरकन्ना

रचनाकार- श्रीमती योगेश्वरी साहू, बलौदा बाजार

एक ठन राज म एक झन राजा राहय. राजा अड़बड़ अपन परजा के धियान राखय. अउ परजा मन घलो राजा के अबड़ मान करय. राजा ह एक ठन बात ल सबो करा लुकावत राहय. कि वोकर कान ह बोकरा कस बड़े-बड़े राहय. जेन ल कोनों झन देखय कहिके वोहा पागा मा बांध के लुकाय राहय.

एक दिन राजा ह अपन सुमन नाव के नाउ ल दाढ़ी बनाय बर बलाईस. नाउ आ के ओकर दाढ़ी ल बनाय बर धरिच त वोतके बेरा एक ठन भूसड़ी ह आके भुनून- भूनून करे बर धर लीच. राजा खिसिया गे त नाउ ह भूसड़ी ल भगाए बर धर लीच. भूसड़ी ह राजा के पागा म जा के बइठ गे त नाउ ह तान के राहपट पागा ल मारीस.त पागा हर दूरिहा म फेंका गे। राजा के कान ह बाहिर आ जथे.जेन ल देख के नाउ ह अकबका गे. त राजा ह नाउ ल कहिथे देख नाउ ये बात ल कोनो ल झन बताबे नई ते तोला भारी सजा देहूं.

नाउ ह हव कहिके चल देथे फेर वोकर पेट म बात ह पचय नहीं. पेट ह पिराए बर धर लेथे.वोहा कोनो ल बात ल बताहूं कहिके सोंचथे. फेर राजा के डर मा बताय नई सकय. वो हा परेशान हो जथे त जंगल में जाके एक ठन सुक्खा रुख ल बता देथे कि

"राजा बकर कन्ना राजा बकरकन्ना "

नाउ घर आ जथे.थोर किन दिन बाद राजा के गाना गवइया मन ह अपन बर बाजा बनाय बर लकड़ी लाने जंगल गिसाअउ उही रुख ल काट के लानिस अउ बना डारिस किसम किसम के बाजा.

एक दिन ओमन महल म गाना गाय बर गिस. जइसने ढोलक ल बजाइस त भीतरी ले अवाज आइस

"राजा बकरकन्ना राजा बकरकन्ना"

त राजा ह पूछिस-- " किन्ने कहा- किन्ने कहा"

ढोलक के भीतरी ले अवाज आथे-- "सुमन नाउ सुमन नाउ" राजा ह तुरते नाउ ल बुलाथे अउ पूछथे कि कोन ल तेंहा वो बात ल बताए रेहेच. त नाउ ह कहिथे कि मेहा जंगल म एक ठन सुक्खा रुख ल बताए रेहेव. राजा बगिया जथे अउ नाउ ल दस कोड़ा मारे के आदेश देथे.

वो दिन के बाद ले राजा के संसो सिरागे काबर सबो झन जान गे कि राजा बकरकन्ना हे. पर परजा मन राजा के ये गुन ला भगवान के आशीर्वाद जान के अपना डरीस.

*****

बढ़ना होगा

रचनाकार- श्रीमती योगेश्वरी साहू, बलौदा बाजार

काली घनेरी रात को
चीर कर आगे जाना होगा
लड़ना होगा हां मुझे बढ़ना होगा.

रीति से रिवाज से
घर से समाज से
अपने परिवार से
और खुद अपने आप से
लड़ना ही होगा हां मुझे बढ़ना होगा.

कोई नहीं दोस्त सिवा तुम्हारे
कोई नहीं दिखाता राह सिवा तुम्हारे
इसलिए मुझे पढ़ना होगा
हां बढ़ना है तो मुझे पढ़ना ही होगा.

खुले दिमाग के लिए
अच्छे विचार के लिए
नए ओज के लिए
नए तेज के लिए
मुझे पढ़ना होगा हां मुझे बढ़ना होगा.

बहुत हुआ छींटाकशी
अब तुम्हारे हाथों को थामना होगा तानाशाही से ऊपर उठकर
दबाने कुचलने से हटकर
तुम्हें ऊपर उठाना होगा
हां बढ़ाना ही होगा
तुम्हें साथ लेकर मुझे बढ़ना ही होगा.

अपने मान के लिए
अपने सम्मान के लिए
अपने मुकम्मल जहा के लिए लड़ना ही होगा हां मुझे बढ़ना होगा.

संघर्षों को स्वीकार कर
मुश्किलों से टकराकर
नया भविष्य गढ़ना होगा
नई राहों में मुझे बढ़ना होगा.
लड़ना होगा हां मुझे आगे बढ़ना ही होगा.

*****

नल का पानी

रचनाकार- दीपेश पुरोहित, जांजगीर चाम्पा

सुबह -सुबह आता है मेरे, घर में नल का पानी.
धमा- चौकड़ी खूब मचाता, घर में नल का पानी.

सुबह -सुबह सारे बर्तन, जोर खूब लगाते.
आगे -पीछे बारी -बारी, नल के नीचे आते.
खूब भरते, और उछलते, शोर खूब मचाते.
नल इतराता, खूब मचलता,कहता नई कहानी.
सुबह -सुबह आता है मेरे, घर में नल का पानी.

मम्मी मुझको डांट -डपट कर, रोज बिस्तर से लाती.
सुबह -सुबह नल के आगे, साबुन लगा नहलाती.
बस मग्गे से डाल डालकर,पानी खूब बचाती.
ठंडी मौसम में नहाकर, याद आ जाती नानी.
सुबह-सुबह आता है मेरे, घर में नल का पानी.

नल का पानी बून्द बून्द, बचाना हमें सिखाती.
उस पानी से पौधों को,सींच- सींचकर,बढ़ाती.
इंतजार में कभी- कभी, गुस्सा मम्मी दिखाती.
उस दिन चुपचाप आता, घर में नल का पानी.
सुबह-सुबह आता है मेरे, घर में नल का पानी.

*****

कोयल रानी

रचनाकार- सूर्यदीप कुशवाहा, वाराणसी

कोयल रानी आओ न
कुहूक-कुहूक कर गाओ न
नहीं बजाती तुम तबला
नहीं पहनी हो झबला
छिप-छिपकर पेड़ों पर
मधुर गीत सुनाती हो.

शोर मत करो कोई
चुप रहकर सुनो हर कोई.
कोयल गीत गाती हैं
उसकी मीठी वाणी है.

कुहूको सब मिलकर
तब चिढ़कर गाना गाती है
आम के बौर में छिपी हुई है
मुझको आज दिखी है.

सबके लिए बेचारी गाती
उड़-उड़कर पेड़ों पर जाती
कुहूक-कुहूक कर गीत सुनाती
सब काम छोड़कर आती है.

सपने

रचनाकार- गायत्री पाल कक्षा ११वीं, शा उ मा विद्यालय बेलौदी, मगरलोड धमतरी

नन्हे–नन्हे आंखों में,
सपने सजाए
गुड़िया रानी सपनों के
महल में बैठी.
जन्म लिया परी ने जब
सपने सजा लिया अपने
उसे क्या पता सपने पूरे करने में
रुकावटें पैदा होती है हजार.
विद्यालय का वो पहला दिन
नन्ही परी की पहली उड़ान
हंसती खेलती रहती हरदम
चंचल स्वभाव मीठी है मुस्कान.
धीरे–धीरे बढ़ती है नन्ही परी
और बढ़ते हैं उसके सपने
सपनों की उड़ान भरने के लिए
जब होती है वह तैयार
तब होती है जिंदगी के
पड़ाव का एक नया दौर.
कितनों ने टोका परी को
मां बाप के लिए परी ने
तोड़े अपने सारे सपने,
और हो गई यह भी परी
वही अन्य परियों के जैसे.

किसान की बेटी हूं

रचनाकार- गायत्री पाल कक्षा ११वीं, शा उ मा विद्यालय बेलौदी,मगरलोड धमतरी

किसान की बेटी हूं मैं,गर्व से यह कहती हूं
देखी मैंने अपने पिता की आंखों में,
सुबह सुबह हम जाते हैं खेत–खलिहानों में
दृढ़ संकल्प लेकर करते हैं निशदिन मेहनत.

बैलों के घांघड़ बाजे खन–खन–खन
और खेतों की जुताई करने लगते हैं
फिर फसल लह–लहाते हैं खेतो में
किसान की मेहनत व्यर्थ नहीं जाती हैं.

किसान पसीना बहाएगा तभी अन्न उगेगा
और यह दुनिया पेट भरके खाना पाएगा
इन्ही के बदौलत चलती है यह दुनिया
ये खुश रहेंगे तो इंसान भी खुश हो पाएगा.

*****

देश की बेटी

रचनाकार- परवीनबेबी दिवाकर, मुंगेली

देश की बेटी बनकर तुम,
जग में ऐसे छाना,
करके काम बड़ा तुम,
देश का मान बढ़ाना.

मन में हौसला भरकर,
तुम, तूफानों से लड़ जाना,
करना देश की सेवा,
इंदिरा सा -छा जाना.

आँख उठाये देश पर जो,
उन पर भारी पड़ जाना,
करके काम बड़ा तुम,
देश की मान बढ़ाना.

संघर्षों के इस दौर में भी,
डटकर सामना करना,
लहराना अपने नाम का
परचम, दुनिया में छा जाना.

सत्यनिष्ठा का भाव

रचनाकार- किशन सनमुख़दास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र

भारत की संस्कृति व मिट्टी में ही है
सत्यनिष्ठा का भाव
तभी तो सत्यनिष्ठा से आत्मनिर्भरता अभियान में
साथ देकर भारतीयता का फ़र्ज़ निभा रहे हैं

भारत को आत्मनिर्भर बनाना है
प्रोत्साहन देकर संकल्प ले रहे हैं
वेबिनार डिबेट प्रतियोगिताएँ शुरू हैं
संकल्पों का दौर भी शुरू है

भारत @ 75 के उपलक्ष्य में
कार्यक्रमों के आयोज़न हो रहे हैं
सत्यनिष्ठा से आत्मनिर्भरता के
जागरूकता कार्यक्रम हो रहे हैं

वोकल फॉर लोकल की अपील
पीएम हर संबोधन में कर रहे हैं
जनता सत्यनिष्ठा से साथ देकर
भारत निर्मित सामान अपना रही है

*****

यह कैसी है आजादी?

रचनाकार- अशोक कुमार यादव मुंगेली

नारी घर से निकल नहीं सकती, शातिर भेड़िये ताक रहे.
उल्लू और चमगादड़, देकर संदेश कोटर से झाँक रहे.
सुख-चैन और नींद को छीनने, गली-गली घूमते हैं पापी.
बेटियाँ सुरक्षित नहीं है भारत में, यह कैसी है आजादी?

कोई दहेज के लिए प्रताड़ित होकर, जल रही हैं आग में?
जुल्म और सितम को सहना, लिखा है नारियों के भाग में.
कम उम्र में ही कर दी जाती है जोर-जबरदस्ती से शादी.
बेटियाँ सुरक्षित नहीं है भारत में, यह कैसी है आजादी?

शराबी पति शेर बन दहाड़ रहे, पत्नी को समझकर बकरी.
दुःख के पलड़े में झूल रही जिंदगी, नरक की तौल-तखरी.
व्याकुल मन की चीख-पुकार अब खोल रही द्वार बर्बादी.
बेटियाँ सुरक्षित नहीं है भारत में, यह कैसी है आजादी?

प्राचीन काल से ही गौरव नारी हुई थी शोषण का शिकार.
अब दुर्गा बन कलयुगी दानव महिषासुर का करो संहार.
पढ़-लिख कर आत्मरक्षा के लिए बननी होगी फौलादी.
जिस दिन बेटियाँ सुरक्षित रहेंगी, उसी दिन मिलेगी आजादी.

*****

रीत बनईया ए भारतीय देश के

रचनाकार- अशोक पटेल "आशु", शिवरिनारायण

रीत बनईया ए भारतीय देश के
भला करईया हमर ए समाज के.
सियनहा के जयकारा ल लगाबो
चलव न संगी तिरंगा ल फहराबो.

ए तिरंगा हर देश के पहिचान हे
एखरे से ही हमर सब के मान हे.
एखर से ही हमर म अभिमान हे
इही हर हमर धरम अउ ईमान हे.

आवव मिल के तिरंगा ल लहराबो
जुरियाके स्वतन्त्रता दिवस मनाबो.
पंद्रह अगस्त ल चला अमर बनाबो
चल न बिधि-विधान ल अपनाबो.

चल संगी सुमता के सोर बगराबो
दया-मया-पिरित के जोत जलाबो.
चल न ऊंच-नीच के डबरा पाटबो
गाँव-गरीब-गुरबा ल चल बहुराबो.

ए भारत देश हर हमर महतारी हे
इही माटी हर हमर पालनहारी हे.
जेहा तियाग-अर्पण के चिन्हारी हे
इही म हावे हम सब के पुछारी हे.

*****

लइका मन ला बिगाड़त हस

रचनाकार- यशवंत पात्रे, कक्षा- 8 वीं, शास. पूर्व माध्य. शाला बिजराकापा न, संकुल- लालपुर थाना, वि.ख. लोरमी, जिला- मुंगेली

फोटू अउ बांटी जुरिया के करा मन संग मिलत हे.
लइका मन हा किसिम-किसिम के खेल खेलत हें.
झटकुन नहइया मनखे मन अबेर करके नहावत हें.
झटकुन जगइया मन उठके करा खेले ला जावत हें.
दुकानदार ह करा अउ फोटू लाके दुकान ल सजावत हे.
लइका मन हा रो-रो के ओ फोटू अउ करा ल लेवावत हे.
दाई-ददा मन परेसान होके दुकानदार ल कहत हे.
घुलंड- घुलंड के बिटोके ओमन अब्बड़ डहत हें.
कस रे चुनू तैं हा ओ करा,फोटू ल लाके देखावत हस.
गांव के जम्मों लइका मन ला तहिच ह बिगाड़त हस.
आगु म रखके फोटू, करा ला, मन ला बहकावत हस.
लइका मन ला किसिम-किसिम के खेल खेलात हस.

*****

एक पेड़ लगाओ

रचनाकार- कु.गायत्री पाल, कक्षा-११ वीं, शा उ मा वि बेलौदी, मगरलोड,जिला,धमतरी

सोंचो अभी भी वक्त है,तुम्हारे पास
निकट समय आने पर हाहाकार होगा
सारी पृथ्वी चीखेगी और चिल्लायेगी
तब समझ पाओगे मेरी अहमियत
मेरी तुम्हारी सबकी इस जिंदगी में.
बंद करो मनुष्यों इस पर जुल्म ढाना
एक पेड़ लगाओ,सबकी जान बचाओ
अक्सीजन और हरियाली की कमी को
जल्दी-जल्दी तुम पुरी कर जाओ.
प्रदूषण भरी इस सारी पृथ्वी को
तुम सुंदर हरा-भरा बनाओ
यह पृथ्वी भी हरदम खुश रहेगी
यह संसार भी खुश हो जाएगा
इस धरा पर सुंदर स्वर्ग उतर आएगा.

*****

घरौंदा

रचनाकार- वसुंधरा कुर्रे, कोरबा

सुंदर सा घरौंदा माटा चाटा का
रहते सब समूह में मिलजुल कर
सुंदर सा घरौंदा माटा का
पेड़ों के पत्तों से बनाते सुंदर सा घरौंदा
सब पत्तों को जोड़कर गेंद की तरह
गोल-मटोल इनका घरौंदा.
धूप, हवा, पानी से बचाए इनका घरौंदा
लगता कितना सुंदर इनका घरौंदा
हजारों की संख्या में रहते एक साथ
न लड़ना, न झगड़ना, न कोई बैर
सब मिलकर रहते घरौंदे में
कितना सुंदर इनका घरौंदा.

*****

काले काले बादल

रचनाकार- वसुंधरा कुर्रे, कोरबा

काले -काले बादल घड़घड़ करते आते
आते ही काले बादल बूँदें बरसाते.

वर्षा की पहली बूँदें जब पड़ती वसुंधरा पर
वसुंधरा महकती सौंधी-सौंधी
महक से मन प्रफुल्लित हो जाता.

वर्षा की बूँदें जब पड़ती कमल के पत्तों पर
हवा से पत्ते हिलोर मारते
बूंदें मोती की तरह नाचने लगतीं.

वर्षा की बूँदें जब पड़ती वनों पर
हरी-भरी सुंदर कोमल पेड़ों की पंखुड़ियाँ
हरी साड़ी से ढकी हुई झाँकने लगतीं.

वर्षा की बूँदें जब पड़ती गर्म चीजों पर
कूद-कूद कर नाचने लगतीं.

वर्षा की बूँदें जब पड़ती शरीर पर
मन करता मस्तमौला आनंद लेती रहूँ.

*****

बाल पहेलियाँ

रचनाकार- टीकेश्वर सिन्हा "गब्दीवाला", बालोद

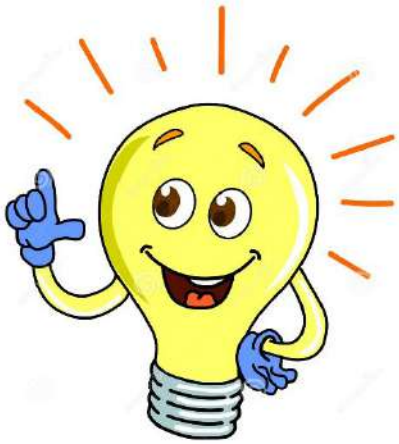

1. सौरमंडल का एक ग्रह,
है सूर्य के सबसे पास.
बूझो... बूझो... बूझो,
बच्चों न होना हताश.

2. सावन महीने का उपहार,
भाई-बहन का प्यार.
भाई की कलाई सजती,
कौन सा वह त्यौहार ?

3. अगस्त माह पंद्रह तारीख,
दिवस वीरों की कुर्बानी.
मिली हमें अमोल सौगात,
जो है हर हिंदुस्तानी की.

4. 'झंडा ऊँचा रहे हमारा',
एक सुंदर गीत न्यारा.
राष्ट्र का है जो गौरव गान,
लिखा किसने गीत प्यारा.

5. पंछियों में ईश्वर भक्त,
करता तप सरोवर तट.
खड़ा रहता एक पैर से,
नाम बताओ झटपट.

उत्तर - (1) बुध (2) रक्षाबंधन (3) स्वतंत्रता दिवस (4) श्री श्याम लाल गुप्त (5) बगुला

*****

चलो आगे बढ़ो

रचनाकार- कु.चांदनी साहू, क्लास–10th, शास उ मा वि बेलौदी, मगरलोड,धमतरी

आओ चलें हम आगे बढ़ें हम
स्कूल चलें हम पढ़ाई करें हम
दुनिया की सारा मोह छोड़ें हम
आगे बढ़ो तुम आगे बढ़ें हम

लोग जलते हैं, लोग बिगड़ते हैं
लोगों में ही बनते व बिगड़ते हैं
भेद-भाव छोड़ो साथ में रह लो
खूब पढ़ाई करो व आगे बढ़ लो

खूब खेलो-कूदो खूब हँस लो
जीतने की अब आशा कर लो
सत्य से ही दुनिया आगे बढ़ती
सत्य से ही दुनिया यह चलती

आओ चलें हम आगे बढ़ें हम
स्कूल चलें हम पढ़ाई करें हम

*****

सावन और बसंत

रचनाकार- भजनलाल हंस बघेल, हरियाणा

शिक्षा, संस्कृति, कला, ज्ञान और ध्यान से महकता जीवन संसार.
सर्दी और पतझड़ के बाद ही आती बसंत- बहार.
त्याग,तपस्या और बलिदान से जीवन होता पावन.
भीषण गर्मी के बाद भी आता सुहावना सावन.

साहस,हिम्मत,मेहनत और लगन जीवन का तोहफा.
लबों पर मुस्कान और आंखों में खुशी,
काम का सच्चा, स्वभाव, व्यवहार का अच्छा;
जीवन में कभी खाता नहीं धोखा.

जीवन में सदैव बनी रहे उम्मीद और आशा.
बनाए रख विश्वास और उमंग; छोड़ निराशा.
संयोग से मिलता है जीवन,
सहयोग से जीवन जाता तराशा.

हंसी-खुशी जीवन की गाड़ी चले.
खुशी का दीपक दहलीज पर जले.
जीवन का सफर, सावन हैअति सुहाना.
सुंदर,मनोहर, सुगंधित फूल आंगन में खिले.

*****

पेड़

रचनाकार- कुमारी टीकेश्वरी वर्मा, कक्षा 8 वीं , शा पूर्व माध्यमिक शाला तर्रा, विकासखंड धरसीवां

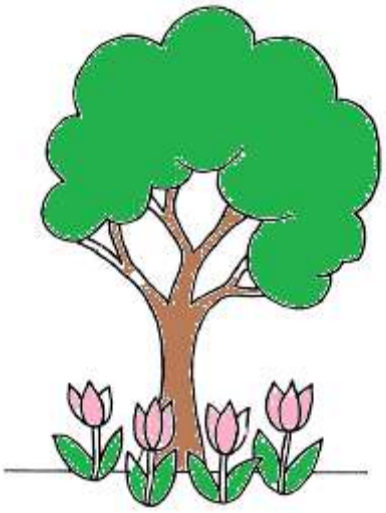

प्यारा मेरा पेड़ है,
झूला झूले इसपे चढ़के,
धूप लगे तो छाया दे,
भूख लगे तो फल देता.

सुंदर सुंदर फूल है,
पत्ते देखो बड़े निराले,
फल इसके मीठे-मीठे,
कभी नहीं सताता है.
प्यारा मेरा पेड़ है.

*****

प्रकृति की सुंदरता

रचनाकार- रामेश्वरी साहू

हरी-भरी सी दिख रही है,
देखो प्रकृति हमारी.
चारो ओर हरियाली बिछ रही है,
आई थी जो वर्षा प्यारी.

पत्तियों को तो देखो ज़रा,
कैसी वो खिल खिला रहीं है.
डाल फूल पत्तियों से भरा,
कुसुम भी तो मुस्कुरा रही है.

वायु हर्ष से दौड़ रहा,
आया है जो सावन.
नभ बादल से सज रहा,
ठंडी फुहार है मनभावन.

नदी ,तालाब और जलाशय,
फिर से जलमय हो गए हैं.
इस सुंदरता का क्या हो आशय?
हम भी मोहित हो गए हैं.

भारत की आजादी

रचनाकार- अशोक कुमार यादव मुंगेली

सूनों अंग्रेजों,कान खोल के,
कुछ कह रहे हैं नेता जी.
बहुत हुआ परतंत्र भारत,
अब हमें चाहिए आजादी.
गाँधी
धरती माँ को लाल किया.
भगत सिंह ने फाँसी चढ़कर,
हँसते-हँसते बलिदान दिया.
इस मिट्टी का कर्ज चुकाने,
इस मिट्टी में मर-मिट जाने,
हमें बननी होगी फौलादी.
बहुत हुआ परतंत्र भारत,
अब हमें चाहिए आजादी.
सरहद पर वीर जवानों ने,
सीने पर गोलियाँ खायी है.
सूनी हो गई माता की गोद,
आँखों में आँसू भर आयी है.

इस तिरंगे की शान के खातिर,
इस तिरंगे की मान के खातिर,
हम सबको देनी होगी कुर्बानी.
बहुत हुआ परतंत्र भारत,
अब हमें चाहिए आजादी.

*****

आजादी महोत्सव

रचनाकार- श्रीमती नंदिनी राजपूत, कोरबा

15 अगस्त को हम, आजादी महोत्सव मनाएँगे
गाँव- गली,मोहल्ले में, झंडे खूब फहराएँगे.
देश को मिली आजादी हम ऐसे नहीं गवाएँगे.
हम सब भारत के नागरिक मिल,एकता की कसमें खाएँगे.
रैली में शामिल होकर, नारे खूब लगाएँगे.
15अगस्त को हम, आजादी महोत्सव मनाएँगे.

महापुरुषों को याद कर गीत ऐसे गाएँगे.
जन -जन के तन -मन में ,समर्पण भाव जगायेंगे.
मातृभूमि की मिट्टी को, सीने से ऐसे लगाएँगे.
हम उनके गुलाम नहीं, अंग्रेजों को याद दिलाएँगे.
हिंदू, मुस्लिम ,सिख,इसाई, आपस में गले लगाएँगे.
15 अगस्त को हम, आजादी महोत्सव मनाएँगे.

*****

सतरंगी टिफिन

रचनाकार- रजनी शर्मा

अम्मी बनाती है रोज खाना,
इसमें होते हैं व्यंजन नाना.
सतरंगी हो मेरा डिब्बा,
रोज कहते हैं मेरे अब्बा.
हरी सब्जी ,टमाटर लाल,
पीला पीला पपीता,आम.
लाल अनार हो सेब लाल,
मीठे केले का छिलका निकाल.
मीठा गन्ना खा ले बन्ना,
कहते नानी मेरे नाना.
खा कर गाल जब होंगें लाल,
दादी कहेगी मुझे बाल गोपाल.

*****

देश के खातिर पढ़ना है

रचनाकार- जीवन चन्द्राकर"लाल", दुर्ग

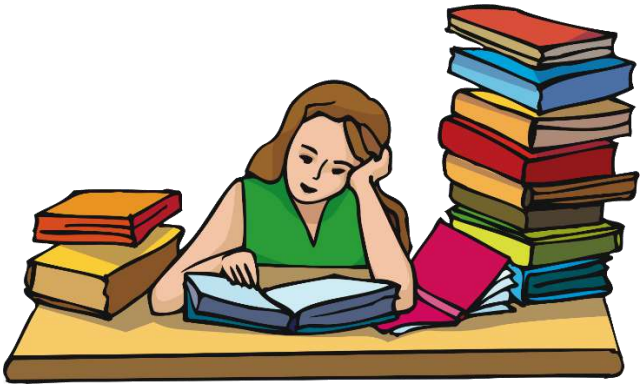

हमें देश के खातिर पढ़ना है,
अमर शहीदों के सपनों को,
अपने श्रम जल से गढ़ना है.
हमें देश के खातिर पढ़ना है.

दुश्मन जो भी अब आएगा,
जनता पर जुल्म ढायेगा,
घुसने न देंगें हम उनको,
जान लगाकर लड़ना है.
हमें देश के खातिर पढ़ना है.

हिम्मत न अब कोई हारे,
मुट्ठी में जकड़े सभी सितारें,
अपनी साहस की सीढ़ी से,
आसमान पर चढ़ना है.
हमें देश के खातिर पढ़ना है.

अपनी गरिमा को पहचाने,
जग वाले भी जिनको माने,
देश व अपनी गौरव गाथा,
जग में प्रसार फिर करना है.
हमें देश के खातिर पढ़ना है,

देश प्रेम

रचनाकार- आशा उमेश पांडेय, सरगुजा

देश प्रेम की भावना, जाग उठी है आज.
वीर शहीदों पर सदा, करते सब है नाज.

रहते वीर जवान है,सरहद पर तैनात.
डटकर करते सामना,वो तो दिन औ रात.

बढ़ा रहे रणबांकुरे, सदा देश की शान.
प्राणों को आहूत कर, रखे देश का ज्ञान.

मेरे भारत वर्ष में, बहे प्रेम रस धार.
रहते मिलजुल कर सभी, जाने जग संसार.

बच्चा बच्चा गा रहा, देश प्रेम का राग.
हिम्मत दुश्मन की नहीं,लगा सके जो दाग.

*****

रक्षा बंधन

रचनाकार- शुभम पान्डेय भव, सरगुजा

भाई बहन के प्रेम का,
होता रक्षाबंधन पर्व,
लेता रक्षा वचन भाई,
करती बहना है गर्व.

रंग बिरंगी राखियों से,
सजती भाई की कलाई,
देख बहना के चेहरे पर,
आती है फिर तरुणाई.

यही भारतीय संस्कृति,
प्रेम आस्था का है बंधन,
इक रेश्म की डोरी से,
अटूट रिश्ता जाता बन.

जन्मों जन्म साथ निभाने का,
खाता भाई है कसम,
निश्छल पावन रिश्ते को,
जग करता सादर नमन.

*****

गणेश

रचनाकार- आशा उमेश पांडेय, सरगुजा

मेरे प्यारे गणराज,
पूरा करें सब काज.
महिमा अपार होती,
जग यह जाने है.

रिद्धि सिद्धि दाता यह,
सबके विधाता यह.
पूज्य देव बप्पा को तो,
सब लोग माने है.

बल बुद्धि विद्या देते,
सब दुख हर लेते.
विध्नहरण को सभी,
जग पहचाने है.

एकदंत दयावंत,
भरे मन वो है कंत.
गौरी सुत गणेश के,
सब ही दिवाने है.

*****

भारत माँ के यदुवंशी सपूत

रचनाकार- अशोक कुमार यादव, मुंगेली

भारत की आजादी में यादवों की गाथा सुनाता हूँ.
महा पराक्रमी अहीर योद्धाओं को शीश नवाता हूँ.
हाथों में तलवार, खून सवार, यदुवंशी सेना का वार.
समर शंख फूँक कर, बिगुल बजाया, मचा हाहाकार.
सबसे पहले अल्गुमुत्थू कोने ने तलवार उठाई थी.
अंग्रेजों को तमिलनाडु से खदेड़ने सेना बनाई थी.
प्लासी के युद्ध में राजा मोहन लाल ने लोहा लिया.
नवाब सिराजुद्दौला के प्रतिमूर्ति बन बगावत किया.
हरियाणा के शेर राव गोपाल देव थे सुरमा महाबली.
अकेले तीस गोरों का सर कलम कर मचा दी खलबली.
शत्रु सेनाओं को चीरते हुए किशन ने घोड़ा दौड़ाया.
मद-मस्त हाथी में सवार फिरंगी काना को मार गिराया.
अट्ठारह सौ सत्तावन में रंजीत सिंह ने बगावत कर दी.
छल से पकड़ कर अंग्रेजों ने काला पानी की सजा दी.
अहीर चौबीसी सेना लेकर बराल पहुँची होकर क्रुद्ध.
केसरिया पगड़ी धारण कर मेहताब सिंह ने किया युद्ध.
महाराजा हरिवंश ने सौ अंग्रेजों का गर्दन धड़ से काटा.
माँ कालिका के मंदिर में क्रांति के बलि स्वरूप चढ़ाया.
ऐसे कई वीर अहीर योद्धाओं ने अंग्रेजों को मार गिराया.
ब्रिगेडियर हुकुम ने सर्वप्रथम भारत में तिरंगा लहराया.

*****

जादुई पिटारा

रचनाकार- कलेश्वर साहू, बिलासपुर

पढ़ाई में अब मिल गया सहारा,
स्कूल में आया है जादुई पिटारा.
जादुई पिटारा का प्रयोग कराएंगे,
समग्र विकास बच्चों का कराएंगे.
इससे पढ़ना लिखना सीखो,
खेल-खेल में गणना सीखो.
बहुत खिलौना इसके भीतर,
नहीं होंगे कोई अब इधर उधर.
खिलौना से पैटर्न बनाएंगे,
रंगों का भी ज्ञान सीखेंगे.
संख्या कार्ड खूब खेलेंगे,
संख्या ज्ञान हम बढ़ाएंगे.
गुड़िया के संग खूब खेलेंगे,
अपनी संस्कृति को संजोएंगे.
नया नया खेल खेलेंगे,
निपुण भारत बनाएंगे.

*****

तिरंगा के लिए कान्हा का हठ

रचनाकार- जीवन चन्द्राकर"लाल", दुर्ग

छोटा सा बच्चा एक 5 साल का,कान्हा आज पांच रुपये के लिए अपनी माँ को बहुत जिद्द करने लगा.मां बार-बार कह रही थी ,कि-"बेटा मेरे पास एक भी पैसा नहीं है."पर कान्हा अपनी जिद्द में अड़ा हुआ था.

तभी उसके पिताजी खेत घुमकर घर आए,देखा कि कान्हाअपनी मां से पांच रुपये के लिए बहुत हठ कर रहा है.फिर उसने कान्हा को अपने पास बुलाया.कान्हा डरते और सिसकते हुए पापा के पास आ गया. पापा ने पूछा"कान्हा आखिर तुम्हें क्या लेना है, पांच रुपये से,और इतना हठ क्यों कर रहे हो?"

कान्हा आंसू अपने हाथों से पोछते हुए सिसकते हुए बोला"पापा आज पन्द्रह अगस्त है मुझे भी तिरंगा खरीदना है, और देश के लिए जितने लोग जान गवां दिए उन्हें याद करते हुए तिरंगा पूजा व सम्मान करना है.आगे और कहने लगा"मैं दुकान से तिरंगा झंडा खरीद कर लाऊंगा और आंगन में फहराकर हम सब पूजा करेंगे."

पिताजी अपने छोटे से पुत्र की इस भावना व हठ को इंकार नहीं कर सका ,और अपने थैली मे टटोलकर पांच का एकमात्र सिक्का कान्हा को सौप दिया, फिर कान्हा उछलते हुए दुकान की ओर भाग निकला.

*****

मेरा एक घर है

रचनाकार- प्रीतम साहू

शहर से दूर गांव में,बरगद की छांव में,
घास से बनी हुई,मिट्टी में सनी हुई,
मेरा एक घर है.

पड़ोसी मेरे अच्छे है,दिल के वे सच्चे है,
माँ बाप मेरे रहते है,ना किसी क डर है,
मेरा एक घर है.

पक्षी की चहक है,तुलसी की महक है,
सूरज की पहली किरण आते है मेरे आँगन में.
मेरा एक घर है.

*****

स्वतंत्रता हमर गरब

रचनाकार- रुद्र प्रसाद शर्मा, रायगढ़

चल फहराबो तिरंगा झंडा,
घर-घर, चउक, इसकूल म.
पूजबो छत्तीसगढ़ महतारी,
नरियर, उदबत्ती, फूल म.

फरफर फरफर उड़य धजा,
जैजैकार के नारा गरजय.
राजधानी के लालकिला ले,
सेना के परताप म छाती लरजय.
जोश देखबो ब्रह्मोस, त्रिशूल म.
चल फहराबो तिरंगा झंडा,
घर-घर, चउक, इसकूल म.

मयारु माटी के अब्बड़ गुन,
भारत देश के महिमा बखानबो.
जेन जंजीर ले मुक्ति मिलिस,
आजादी के गोठ ल जानबो.
माथ नवाबो बलिदानी चरन धूल म.
चल फहराबो तिरंगा झंडा,
घर-घर, चउक, इसकूल म.

राष्ट्रगान गाबो सम्मान म सचेत रहिके.
गीत गाबो अमर जवान के जय कहिके.
जनम भुईया के हमन आदर करबो,
निज अधिकार कर्तव्य ल थहिके.
प्रस्तावना ल जानबो संविधान के मूल म.
चल फहराबो तिरंगा झंडा,
घर-घर, चउक, इसकूल म.

*****

वीर शहीदों को नमन

रचनाकार- महेन्द्र साहू "खलारीवाला", बालोद

खून से लथपथ भीगकर,
सह गए गोरों के अत्याचार.
जुबां पर फिर भी एक ही
नाम,जय हिन्द की पुकार.

रानी लक्ष्मी,दुर्गावती,अवंतिका,
झलकारी ने ललकारी.
मां भारती की धरा पर ऐसी
वीरांगना थी दमदार.

आजाद,बोस,भगत,गुरु,सुखदेव,
अशफ़ाक थे तेज तलवार.
दासता की बेड़ी तोड़ने,आज़ादी के
दीवानों की थी भरमार.

तन-मन-धन सब वार दिए,
झेल गए गोलियों की बौछार.
नमन है उन वीर शहीदों को,
कोटिशः नमन है बारम्बार.

फांसी पर झूल गए हँसकर,
भारत माता के लाल.
हँसकर शीश कटा गए,
झुकने न दिए हिन्द के भाल.

वीर शहीदों के साहस से,
मिली है हमें आज़ादी.
ऐसे वीर शहीदों का है,
हम सब पर उपकार.

*****

चलो झण्डा ला फहराबो

रचनाकार- महेन्द्र साहू "खलारीवाला", बालोद

केसरिया,सादा अऊ हरियर
हे तीन रंग के झण्डा हमर.
झण्डा लहर-लहर लहराबो,
चलो झण्डा ला फहराबो.

देश खातिर जऊन मर मिटिस
जेखरे सेती मिलिस अजादी.
ऊंकर गौरव - गाथा गाबो,
चलो झण्डा ला फहराबो.

धरती दाई ला अजाद करे बर
हाँसत झूल गिन फाँसी मा.
सब ला,किस्सा ऊंकर सुनाबो
चलो झण्डा ला फहराबो.

अंगरेजन के सहिन अतियाचार
लथपथ होइन भूख-पियासी मा
करबो सुरता अऊ सुरता कराबो
चलो झण्डा ला फहराबो.

खुशहाली अऊ भाईचारा,
संग गीत खुशी के गाबो.
अजादी के जशन मनाबो
चलो झण्डा ला फहराबो.

हर घर झण्डा,घर-घर झण्डा
तिरंगा के परचम लहराबो.
अजादी के अंजोर बगराबो.
चलो झण्डा ला फहराबो.

*****

देशभक्ति

रचनाकार- श्रीमती योगेश्वरी साहू, बलौदाबाजार

नमन तिरंगे तुमको मेरा,
तू हम सबका अभिमान है.
तेरे तीनों रंगों में बसते,
हर भारतवासी के प्राण हैं.

तुझमें संयम तुझमें शांति,
त्याग, प्रेम और तुझमें नीति.
तुझमें आरोग्य तुझमें सेवा,
तू ही समृद्धि,कल्याण है.

नमन तिरंगे तुमको मेरा,
तू हम सबका अभिमान है.

तुझसे मैत्री तुझसे प्रेम,
क्षमा, बंधुत्व और नियम एक.
तुझसे अर्थ तुझसे न्याय,
तू ही कर्तव्य, अधिकार है.

नमन तिरंगे तुमको मेरा,
तू हम सबका अभिमान है.

तुझसे सहकार्य, तुझमें उद्योग,
संगठन है सब का योग.
तुमसे अर्थ तुमसे समता,
तू शील और तू ही ममता.

नमन तिरंगे तुमको मेरा,
तू हम सबका अभिमान है.
तेरे तीनों रंगों में बसते,
हर भारतवासी के प्राण हैं.

*****

मां गंगा को शुद्ध करने अनेक मिशन चलाएंगे

रचनाकार- किशन सनमुख़दास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र

मां गंगा को शुद्ध करने अनेक मिशन चलाएंगे
इन मिशनों को प्रेरणा दायक बनाएंगे
प्रकृति में संरक्षण का नियम अपनाएंगे
युवा शक्ति को इस शुभ काम में लगाएंगे

गंगा उत्सव मनाने को अब
राष्ट्रव्यापी नदी उत्सव बनाएंगे
मां गंगे की पीड़ा की वास्तविक कहानी
जन-जन तक हम पहुंच जाएंगे

नदी उत्सव सम्मान की परंपरा को
पुनर्जीवित करने का बीज बोएगा
देश का हर नागरिक सचेत होकर
दूषित जल की पीड़ा सुलझाएगा

गंगा की पीड़ा को हम सब तब समझ पाएंगे
जब कचरे का ढेर नदियों में पड़ा पाएंगे
नदियों को स्वस्थ रखने जनता जनजागृति लाएंगे
प्रेरणा के लिए हर साल गंगा उत्सव मनाएंगे

*****

चांद पर तिरंगा फहराये

रचनाकार- सोमेश देवांगन, कबीरधाम

आओ आगे बढ़कर देश वासियों,
हम शान से तिरंगा लहराये.
धरती से ऊपर आसमान तक,
चलो चांद पर हम तिरंगा फहराये.

चमकेगा चांद पर अपना झण्डा,
गाड़ के बैठेंगें झंडे का डंडा.
चंद्रयान का सब मिल गान करंगे,
गूँजेगा विश्व में भारत का डंका.

कण कण कंठ में बसा लो तिरंगा,
मन निर्मल करलो बन पावन गंगा.
प्रेम रहे सबको मातृभूमि से हरदम,
मातृभूमि माँ भारती माँ सा अम्बा.

द्वेष मन में रख मन को न बहकाये,
हल कर सबके मन को हम हर्षाये.
धरती से ऊपर आसमान तक,
चलो चांद पर हम तिरंगा फहराये.

*****

कभी नाराज ना होना

रचनाकार- कवि पृथ्वीसिंह बैनीवाल, हरियाणा

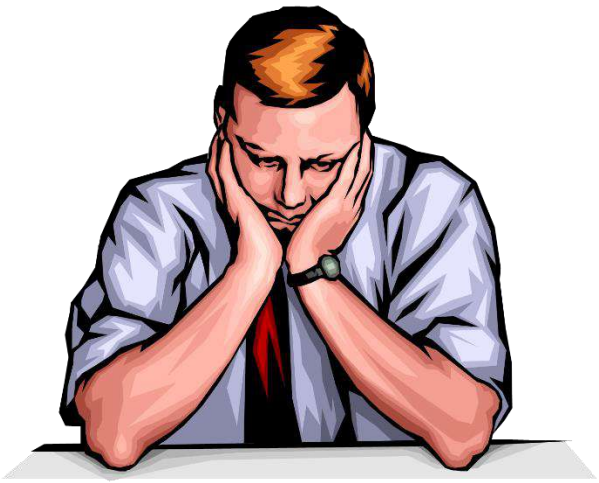

जग रूठै तो रूठने दे,
पर तुम नाराज न होना.
जो चाहो कहना महबूब,
पर तुम नाराज न होना.

तुम रूठोगी मैं मनाऊंगा,
मैं रूठ जाऊँ तुम्हें मनाना है.
जो कहना हो कह देना तुम,
पर तुम नाराज न होना.

चाहत नहीं जिंदगी हो तुम,
मेरी नितप्रति बन्दगी हो तुम.
दिल में शामिल हो इस कदर,
हरपल आवाज देती हो तुम.

मैं तुम्हारा ही हूं तुम मेरी हो,
मेरे लिए इन्द्र की ज्यूँ परी हो.
हरपल मुझे अहसास है तेरा,
मुझे देखकर तुम होती हरी हो.

मुझे कभी तुम टूटने ना देना,

मुझे कभी तुम घूटने ना देना.
जब सब छोड़ जाये साथ मेरा,
तब भी तुम साथ मेरा देना.

मुझसे कभी नाराज न होना तुम,
मुझे जान से भी प्यारी हो तुम.
पृथ्वीसिंह' सब भूल सकता है,
पर तुम्हें कभी नहीं भूल सकता.
इसलिए मेरी महबूबा
तुम कभी नाराज न होना.
तुम कभी नाराज न होना.

*****

महसूस कर

रचनाकार- रामेश्वरी सी. के. जलहरे, पलारी

कर महसूस, महसूस कर इस आजादी का
क्या सही उपयोग कर पाए हम,
कर रहे दुरुपयोग इस आजादी का,
लगे हुए है मोबाइल में, देख रहे है वीडियो
कर महसूस, महसूस कर इस आजादी का
क्या सही कार्य कर रहे है हम?
शेयर कर रहे है आधार हीन पोस्ट, बिना जांचे परखे,
फैला रहे है नफरत,जल रहे है कुछ हिस्से
कर महसूस, महसूस कर इस आजादी का
क्यो वीरो ने शहादत दी है?
फर्ज निभाओ कुछ अपना भी ऐसे न नफरत फैलाओ,
बिना जांचे परखे कोई ऐसा पोस्ट आप भी न कर जाओ
आप भी करो कुछ ऐसा काम,
शहीद वीर भी करे स्वर्ग से सलाम
कर महसूस, महसूस कर इस आजादी का
कुछ ऐसा उपयोग करो आजादी का
सर राष्ट्र का हो ऊपर
कर महसूस, महसूस कर इस आजादी का
क्या सही उपयोग कर पाए?

*****

स्वतंत्रता

रचनाकार- राधेश्याम सिंह बैस, बेमेतरा

त्याग शान औऱ समर्पण, किया याद उन सपूतो को.
बलिदान माँ भारती क़े लिए, श्रद्धा सुमन माँ की पूतो को.
स्वर्ण अक्षरों मे अंकित, वह दिन सबको प्यारी है.
स्वतंत्र हवाओ मे सांस ली, सब जन -जन की न्यारी है.
देश प्रेम की भावना, हर भारत वासी मे हो.
दिल मे जिन्दा रखने, उफान लाने कविता देशवासी मे हो.
कवियों की कविता से, रग -रग मे जोश भर देता है.
स्वतंत्रता सेनानियों क़े सम्मान मे, देश हमसे कुछ नहीं लेता है.
देश हमारा हम सब इसका, है यह सबसे प्यारा.
जिस पर देशवासी गर्व करें, ऐसा मेरा देश है न्यारा.
धरती की तृण -तृण हर्षित, नर्तक खग दृश्य विहंगम.
हवाओ मे तीन रंग तिरंगा, लगता गंगा यमुना औऱ सरस्वती की संगम.
जाये नजरें मेरी जहाँ तक, दिखता दृश्य वहाँ तिरंगा.
नहीं भेद वर्ण धर्म की, हर भारतीय एक ही रंग रंगा.
इतिहास पर प्रश्न उठाने वाले, एहसास नहीं दर्द परतंत्रता की.
लेते आज खुली वायु मे सांस, वह भूल चूके कीमत स्वतंत्रता की.
वतन पर मर मिटने वाले, पल- पल याद करें हिंदुस्तान.
बजे डंका दुनियाँ मे,दे देते रक्षा क़े लिए अपनी जान.
स्वतंत्रता की इस वेदी पर, त्याग समर्पण औऱ बलिदान.
आजादी की 77वी वर्षगाठ पर,करते श्रद्धा सुमन अर्पित हिंदुस्तान.

*****

भाखा जनऊला

भाखा जनऊला

रचनाकार- दीपक कंवर

1 ब			2	■	3 स		4 ल	■	5 ब
	■	■	6 ध			■		■	
7	8	■		■	9 ल				
10		■	■	11 आं		■		■	
■	12 सा	13		■		■	■	14 अ	■
■	■		■	15	■	16 क			■
17 ना			■	18	19 त		■	20	21 ल
	■		■	■		■	22 गो		
23			24	■	25 र	26		■	
27	■	■	28 म				■	29 क	

बाएँ से दाएँ

1. साल भर फल/उपज/होने वाला 3. इकठ्ठा कर 6. ढहना/ढह जाना 7. शौक, इच्छा 11. दाग 12. संकरा 16. बांस का कोपल 17. हल 18. साफ जगह 20. रगड़ 22. सीप का कवच गन्ना 25. झाड़ का डगाल 28. श्रृंगार सामग्री बेचने वाला 29. ओला

पिछले भाखा जनउला के उत्तर

1 भौ	ख	2 मं	गा	■	3 सा	■	4 स	वां	5 र
■	■	झ	■	6 ल	ग	वा	र	■	त
7 बि	ह	नि	या	■	■	■	बे	■	न
स्स	■	या	■	8 ख	ल	9 ब	ट्टा	■	पु
र	■	■	10 टें	वा	■	घा	■	11 बे	र
12 हा	13 ल	त	■	■	14 छे	र	15 छे	रा	■
■	ल	■	■	16 गौ	री	■	र	■	17 मो
■	18 म	र	घ	टी	या	■	19 का	20 ब	र
■	टी	■	■	या	■	21 घा	■	छ	■
22 म	या	दा	री	■	■	23 म	या	रु	■

ऊपर से नीचे

1. रेनकोट 2. सीधा सादा 3. अमर्यादित कार्य 4. मजदुर 8. खाली मैदान 13. रेतीला जमीन 14. आसान 15. भांजा 16. करो(हिंदी) 17. नन्हा 19. व्यग्र 21. पानी भरे खेत मे हल चलाने का प्रकार 22. महिलाओं द्वारा पुकारने का प्यारा शब्द 24. दुलार कहने का शब्द 26. दूल्हा(हिंदी)